* जयवीर *

नकली और असली धर्मात्मा।

लेखक—

बाबू सूरजभानु वकील.

देवबन्द।

प्रकाशक-

चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा।

—:०:—

सन् १९१९ ई०

पण्डित सरयूदयालु दीक्षित के प्रबन्ध से
मित्र प्रेस, इटावा में मुद्रित।

नकली और असली

धर्मात्मा।

अध्याय १

रामनगर जिले के कस्बे विलासपुर में शाम के वक्त एक बुड्ढे लाला जमनादास तोरई करला आदि सब्ज़ी के टोकरे अपने सामने रखे हुए उनको चाकू से बना रहे थे कि इतने में खजूरी गांव का पटवारी इलाहीबख्श वहां आ पहुंचा और कहने लगा कि आज तो लाला के यहां कोई बहुत बड़ी दावत होती नजर आती है, जमनादास ने कहा कि नहीं दावत बावत तो कोई नहीं है, यह सब्ज़ी तो हम सुखाने के वास्ते ही बना रहे हैं, पटवारी ने पूछा कि सुखाने की क्या ज़रूरत पड़ी, इनको फूंककर कोई दवाई बनाओगे क्या ? लाला ने कहा कि शेख़जी हम लोग दया धर्म के पालनेवाले हैं और जीव हिंसा को महापाप समझते हैं इस वास्ते हरी सब्जी नहीं खाते हैं, सुखाकर ही खाते हैं, क्योंकि हरी सब्जी में जीव होता है और सुखाये से वह जीव निकल जाता है, पटवारी ने कहा ! कि जो सब्ज़ी कानी होजाती है वा गल सड़ जाती है उसमें जो कीड़े पड़ जाते हैं वह ही तो इस सब्जी के जीव होते होंगे, सो इन कीड़ों को तो आप निकाल २ कर फेंक ही रहे हैं फिर सुखाने की क्या ज़रूरत रही, लालाने कहा कि शेख़जी तुम नहीं समझ सकते हो इन बातों को, हमारे यहां वनस्पति में भी इस ही तरह जीव बताया है जिस तरह हमारे शरीर में हमारा जीव है, सो यह कीड़े तो उस वनस्पति के जीव से इसी

तरह अलग हैं जैसे हमारे शिर की जूं हमसे अलग हैं, पटवारी ने कहा कि ऐसा ही होगा, पर यह बात समझ में न आई कि सुखाने से उस जीव पर क्या दया होती है, लाला ने कहा कि सुखाने से उसमें जीव नहीं रहता है इस वास्ते उसके खाने से जीव हिंसा नहीं होती है, पटवारी ने कहा कि खाने में हिंसा नहीं होती तो काटने विनारने और सुखाने में तो होती होगी, और सुखाकर खाने का तो यह ही मतलब समझ में आता है कि मार कर खाना, ज़िन्दा को नहीं खाना, सो इसमें तो जीव हिंसा बचती नजर आती नहीं, इस वास्ते कोई और ही बात होगी जिसकी वजह से आपके यहां हरी सब्जी खाने की मनाही है, लाला ने कहा कि हां कोई और बात होगी पर हमारे यहां तो हरी खाने में बहुत ही पाप बताया है, हीरालाल से मिलायेंगे किसी दिन तुम को, उससे बहस करना, वह सब समझा देगा इन बातों को, पटवारी ने कहा कि मुझे क्या ज़रूरत पड़ी है बहस करने की, आपसे भी बातों की बात में यूंही ज़िकर छिड़ गया था, नहीं तो मैं तो इन मज़हबी बातों में बहस करना ही पसन्द नहीं करता हूं, और इस वक्त तो मैं आपको दया-धर्मी समझ कर आपकी दया के वास्ते एक मामला कहने आया हूं उसको सुन लीजिये, लाला ने कहा कि हां कहो क्या मामला है; आपके वास्ते तो मैं जान तक भी लगा देने को तैयार हूं, पटवारी ने कहा कि नहीं मेरा तो कुछ मामला नहीं है, मैं तो सुखराम चौहान के बेटे की बहू के वास्ते कहता हूं कि उसकी कुछ पालना ज़रूर होनी चाहिये, क्योंकि इस वक्त तो नीचे धरती है और ऊपर आकाश है, इसके सिवाय और कुछ भी उसके पास नहीं है और न उस बेचारी का इस वक्त कोई सहारा ही है क्योंकि उसके बाप के यहां तो पहिले ही से कोई नहीं रहा था, एक बुड्ढी मां थी सो वह भी उसके गौने के दो महीने पीछे मरगई थी, और इधर ससुराल में तो जैसा एकदम सफाया हुआ है वह आप जानते ही हैं, लाला

ने कहा कि बेशक उस बेचारी पर तो सब ही को दया आनी चाहिये, तुमने बहुत ही अच्छी सोची जो उसकी प्रतिपाल के वास्ते उठ खड़े हुए हो, पटवारी ने कहा कि मुझ को तो रह रहकर इस बात का ख़याल आता है कि सुखराम कैसा लाने खानेवाला, कैसा रोबदाब का और कैसा आनबान का आदमी था और अब खुदा ने कैसा उसके घर को खाक में मिलाया है, देखो अगरचि सारे गांव में चौहानों का एक ही घर था, बाकी सब जाट ही जाट बस्ते हैं तो भी किसी की मजाल नहीं थी जो सुखराम के सामने चूं भी करले, उसके आये बिदून तो गांव में कोई पञ्चायत भी नहीं हो सकती थी, और उसके शामिल हुए बिदून तो कोई बात भी नहीं चलती थी, और क्यों न हो वह देता भी तो था सब से ज़्यादा, अब उसके ही बेटे की बहू है जो एक एक दाने को तरसती फिर रही है और कोई पूछता भी नहीं है कि तू कहां बसती है, हा! खुदा क़िसी को यह दिन न दिखावे, सच मानो मेरा तो कलेजा कांपता है उसकी यह दुर्दशा देख कर, लाला ने कहा कि पटवारीजी यह सब कर्मों के भोग हैं, सुखराम ने पहिले जन्म में पुण्य किये होंगे जिनको वह भोग गया और इस बेचारी ने पाप किये होंगे जिनको अब इसे भोगने पड़ रहे हैं, पटवारी ने कहा कि लालाजी उसके भेदका किसी को कुछ पता नहीं है, खुदा की बातें खुदा ही जाने, हमने तो मोटी बात यह समझ रक्खी है कि जो अपने से हो सके नेकी कर ले, और जो सिर पड़े उसे खुशी से सहले, अब यह सुखराम के बेटे की बहू का मामला है सो जो कुछ अपने से हो सकेगा उसके वास्ते कोशिश कर देंगे आइन्दा होगा वही जो खुदा को मंजूर है, लाला ने कहा कि उस बेचारी पर तो सबही को तरस आना चाहिये देखो घड़ी की घड़ी में दोनों बापू बेटा चल दिये, दोनों की इकट्ठी ही अर्थी उठी और दोनों एक ही चिता में फूंके गये, सास इसकी पहिले ही मरचुकी थी, रहगई बेचारी अकेली, पटवारी ने

कहा कि लालाजी दोही बरस हुए तो इसका गौना हुआ था, उमर भी तो २०-२१ बरस से ज्यादा की नहीं है, फिर इन कम्बख्त चौहानों में यह भी तो दस्तूर नहीं है कि वह कोई खाविन्द ही कर ले, इस वास्ते मुझे तो यह ही सोच है कि इस भरपूर जवानी में वह किस तरह अपना रँडापा काट सकेगी, इन चौहानों से तो यह जाट ही अच्छे हैं जिनके यहां औरतें बेवा होजाने पर किसी देवर जेठ के यहां बैठ जाती हैं और खुदाईख्वार रहने और मारी मारी फिरने से बच जाती हैं, लाला ने कहा कि शेखजी चौहानों की ऊंची जात है इस वास्ते इनकी बेवा तो दूसरा खाविन्द कर ही नहीं सकती है, इस ही तरह बनिये ब्राह्मणों की बेवा भी नहीं कर सकती हैं, हमारे यहां तो सब ऊंची जातों में यह ही दस्तूर है, पटवारी ने कहा कि ऊंची जात हो चाहे नीची पर मुझे तो इस बेवा का आबरू के साथ रँडापा निभा देना मुश्किल ही मालूम होरहा है, क्योंकि आदमियों का रोना जो था सो थाही पर अब तो उसे पेट भरने और तन ढकने का भी रोना होगया है, लाला ने कहा कि हां शेखजी सुनने में आया है कि चोर उसका सब माल असबाब चुरा कर लेगये हैं, पटवारी ने कहा कि लालाजी सब कुछ क्या उसके घरमें तो इन कम्बख्तों ने तिनका भी नहीं छोड़ा है, बैल डङ्गर हल पाथा बर्तन कपड़े अनाज यहां तक कि आटा दाल और मिट्टी के बर्तन तक उठा ले गये हैं, हां एक बुड्ढी गाय को ज़रूर छोड़ गये हैं जिससे हिला चला भी नहीं जाता है, नहीं मालूम इन लोगों का दिल कैसा लोहे या पत्थर का होता है जो इनको ऐसी मुसीबत की मारी के लूटने में भी दर्द नहीं आता है, लाला ने कहा कि पटवारीजी जो ऐसे लोग न होते तो नरक में कौन जाता, इन लोगों का तो न यहां भला है और न वहां, यहां भी यह लोग जेलखानों में ही सड़ २ कर मरते हैं और परलोक में भी नरकों के महादुख भरते हैं, पटवारी ने कहा कि वह तो जब दुख उठावेंगे तब सही, पर

अब तो यह ही बेचारी दुख उठा रही है और नरकों से भी ज्यादा त्रास भोग रही है, क्यों जी नरकों में इससे ज्यादा क्या दुख होता होगा, ओहो, हम तो यह कहते हैं कि खुदा सब की ही लाज रखे, और किसी को भी ऐसा मुहताज न बनावे जो सबके सामने हाथ पसारना पड़े और फिर भी कुछ न मिले, और खासकर इज्जतदारों की औरतों की इज्ज़त तो तू ऐ पाकपरवरदिगार जरूर ही बचा और उनका पर्दा मत उठा, लालाजी मैं क्या कहूं, तुम खुद जानते हो कि इस सुखराम चौहान के यहां कैसा सख्त पर्दा था, उनकी औरतों का घर से बाहर निकलना तो दूर रहा कोई उनका पल्ला तक भी नहीं देख सकता था, अब यह उस ही के बेटे की जवान बहू है जो सब के सामने अपना दुखड़ा रोती फिरती है और कोई नहीं सुनता है, सच कहता हूं मेरे तो आंसू निकल पड़ते हैं जब मैं उसकी यह हालत देखता हूं, लालाजी सुखराम ने तुम्हारे बड़े २ कारज सुधारे हैं, अड़े वक्त में वह तुम्हारे बहुत काम आया है, अब उसके ही बेटे की बहू पर यह बुरा वक्त पड़ा है इस वास्ते अब तुम उसके काम आओ, वह तुम्हारी काश्तकार भी है इस वास्ते जिस तरह होसके उसे निभाओ और कुछ नहीं तो मुहताज़ और बेकस समझकर ही कुछ सहारा लगाओ, जिससे वह दरदर भटकती फिरने से बच जाय और छै महीने घर में बैठकर खाय जो उसके यह छै महीने कट गये तो फिर तो उसका काम चल निकलेगा क्योंकि अबकी वार तो मैं जाटों से हल बैल मांगकर उसका खेत जुतवा दूंगा, और फिर फ़सल आने पर खेत की पैदावार से ही उसको दो बैल ले दूंगा, यों उसका काम चल जायगा और आगे को और भी बढ़ जायगा, और उसका पर्दा ढका का ढका ही रह जायगा, लाला ने कहा कि मुझे तो कुछ उज़र है नहीं तुम्हारे कहने से और यह तो सवाब का काम है इस वास्ते इसमें तो मुझे किसी तरह का उज़र हो ही नहीं सकता है, लेकिन मैं यह सोचता हूं कि

उस अकेली पे वारिस से क्या खेती हो सकैगी, अगर किसी फ़सल में खेत न जोता गया, या वक्त पर पानी न दिया गया, या पूरी पूरी रखवाली न की गई तो वह भी भूखी मरेगी और मेरा लगान भी मारा जावेगा, इस वास्ते मैं तो यह ही सोचता हूं कि कोई ऐसी तदबीर निकले जिससे उस बेचारी की भी उमर कट जावे और मेरा भी नुक़सान न होने पावे, पटवारी ने कहा कि अगर ऐसी कोई तदबीर हो तो इससे अच्छी और कौनसी बात है, लाला ने कहा कि पटवारीजी हमारी तीन सौ बीघा धरती थी सुखराम की जोत में, तुम तीन सौ रुपये इस बेवा को दिलवादो और हमारी धरती छुड़वादो, यह तीन सौ रुपये मैं दो रुपये सैकड़ा सूद पर चढ़वा दूंगा जिससे ६) महीना सूद आता रहेगा और सारी उमर उसका गुज़ारा चलता रहेगा और यह तीन सौ के तीन सौ भी बचे रहैंगे, इधर हमारी ज़मीन से मौरूस टूट जायगी और उसमें हम एक बहुत बढ़िया बाग़ लगा सकेंगे, जिसकी ख्वाहिश हमें बहुत दिनों से चली आती है, इस पर पटवारी ने तैश खाकर कहा कि लालाजी कुछ खुदा का खौफ़ खाकर बात कहो, कुछ मैं अनजान नहीं हूं और न आप ही कुछ अनजान हैं, आप तो उसको एकबार ही तीन सौ रुपये देकर मौरूस छुड़ाना चाहते हैं मगर वह यह ज़मीन याही काश्तकार को देकर हर साल तीन सौ रुपये कमा सकती है और इसमें उसकी मौरूस भी बनी रहती है, लाला ने कहा कि पटवारीजी हम तुमसे भी तो जुदा नहीं हैं, सौ रुपये अपनी भेंट के तुम भी लो, पटवारी ने कहा कि लाला जी क्या बातें करते हो! क्या आप सौ रुपये के लालच में मेरे हाथ से उस गरीब बेवा के गले पर छुरी फिरवाना चाहते हो, और जिस मौरूस को आप सुखराम से तीन हजार में भी नहीं छुड़वा सकते थे उसको तीन सौ रुपये में ही छुड़वाना चाहते हो, लाला ने कहा कि शेखजी वक्त २ का मोल होता है, कौन काश्तकार

रुपये लेकर अपनी मौरूस छोड़ता है, पर अब यह मौक़ा आलगा है और तुमसे तो मुझे किसी बात का भी उज़र नहीं है, जो सौ रुपये कमती समझते हो तो दो सौ लो पर यह काम करा दो कोशिश करके, अब तो यह काम तुम्हारे हाथ में है, कल को न जाने किस करवट ऊंट बैठे, औरत का कुछ भरोसा नहीं, सौ बह-काने वाले होते हैं, पटवारी ने कहा कि लालाजी लालच तो तुमने मुझे बहुत बड़ा दिया है पर मुझ से तो यह कसाईपने का काम हो नहीं सकैगा, लाला ने कहा तो करी तुमने पटवारगरी, ऐसे ही मुल्ला बनते थे तो यह बस्ता नहीं सँभालना था, पटवारी ने कहा कि लालाजी यह तो मैं भी नहीं कहता हूं कि मैं बड़ा ईमानदार हूं पर यह तो जीती मक्खी निगलना है, ऐसा जुल्म का काम तो मुझ से नहीं हो सकता है, लाला ने कहा कि पटवारीजी तुमने इस बेवा की मदद करने को कहा था इस वास्ते हम तो दया करके तीन सौ रुपये उसके गुज़ारे के वास्ते देते थे, नहीं तो मौरूस तो उसकी बे कौड़ी पैसे ही टूट जावेगी, पटवारी ने पूछा कि वह कैसे, लाला ने कहा कि तुम्हारे ही कहने के बमूजिब सुखराम और उसके बेटे की अर्थी एक साथ उठी है और एक ही चिता में दोनों को दाग़ दिया गया है, तो ऐसी हालत में क्या यह साबित करना कोई मुश्किल बात है कि बेटे का दम पहिले निकला और सुखराम का पीछे, पटवारी बोला तो इससे फ़ायदा क्या होगा, लाला ने कहा कि फ़ायदा यह है कि फिर वह औरत अपने ससुर की वारिस नहीं हो सकती है और उसको मौरूस नहीं मिल सकती है, पटवारी ने कहा कि लालाजी तुमको किसी ने बहका दिया है नहीं तो ऐसा अन्धेर हर्गिज भी नहीं होसकता है, लाला ने कहा कि बहकाने की बात नहीं है हमने बीसों वकीलों से पूछ लिया है और तुम से तो कोई चोरी नहीं है गांव के बीसों आदमी इस बात की गवाही देने को भी तैय्यार हैं चौकीदार की किताब में भी बेटे का ही मरना पहिले लिखा हुआ

हैं, बस अब तो एक तुम्हारी मदद की जरूरत है, तुम हां करलो तो सब काम बनजाय, और मेरा बाग़ लगजाय, सुना है कि बाग़ लगाने का तो मुसलमानों में बड़ा भारी सवाब है, इस वास्ते इसमें तो जितनी कोशिश करोगे उतना तुमको सवाब ही होगा।

पटवारी के साथ यह बातें हो ही रहीं थीं कि इतने में अंदर से जमनादास की ओरू ने चिल्लाना शुरू किया कि रात तो होने को आई, अँधेरा घुप तो हो ही गया है और मुहल्ले भर में चिराग़ भी जल गये हैं पर इस बुढ़ले को अब तक भी रोटी खाने की नहीं सूझती है, जारे भजना! अबकी बार फिर कह आ जो आवें तो आवें नहीं तो मैं दीवा बालूं, अपनी औरत की यह चिल्लाहट सुनकर लाला उठ खड़े हुए, और पटवारी भी अपने घर को चल दिया, अन्दर आकर लाला ने अपनी औरत से कहा कि तू तो ख्वामख्वाह ही चिल्लाने लगती है, इस वक्त मैं पटवारी से ऐसी घौंत बिठा रहा था जिसमें दस हज़ार रुपये की ज़मीन निकल आती पर तूने शोर मचाकर सारा मामला बना बनाया बिगाड़ दिया, औरत ने कहा कि बिगाड़ दिया होगा, तेरे तो रोज यह ही झींकने रहते हैं हमने तो एक दिन भी न देखा जो वक्त सिर रोटी खाई हो, और तुझे अपना ख्याल नहीं है तो किसी दूसरे का तो होना चाहिये कि वह कब खावेगी, लाला ने कहा कि हां होतो गई आज देरही; अच्छा फिर जल्दी चल और मुझे परोस कर तू भी खाने बैठ, इस तरह रोटी पुरसवाकर लाला ने जल्दी २ टुकड़े निगलने शुरू किये लेकिन उसकी औरत खाने नहीं बैठी बल्कि लाला के खाकर उठते ही उसने बुड़बुड़ाते २ चिराग़ जला दिया, मानो वह आज भूखी ही रही पर असल में वह भूखी नहीं थी क्योंकि वह नित्य ही चुपके से भजना नौकर के हाथ कचौरी, पूरी, मेवा, मिठाई और अनेक प्रकार की चाट मंगा लिया करती थी, और खाकर पहिले ही पेट भर लिया करती थी, इसही वास्ते वह शाम को रोटी नहीं बनाती

थी बल्कि लाला को सुबह की बासी ही खिलाती थी और किफ़ायतशारी का सबक़ सुनाती थी।

लाला के पास से उठकर घर आते हुए पटवारी हैरान होकर सोचता जाता था कि वनस्पति पर दया करने के वास्ते तो लाला ने टोकरे भर २ सब्ज़ी को विचारकर सुखाना शुरू कर दिया और सुखराम को बेटे की बहू पर दया आई तो उससे ज़मीन छीनकर उसकी गर्दन पर छुरी चलाने की तदबीर बांधने लगे, यह तो बहुत ही अजीब किस्म की दया है, पर क्या इन लोगों का धर्म ही ऐसी दया सिखाता है, फिर ख़याल आता है कि ऐसा तो कोई धर्म हो ही नहीं सकता है बल्कि मुझे तो ऐसा ही मालूम होता है कि जिस तरह हमारे मुसलमानों में भी बहुत से मक्कार लोग दुनियां को ठगने के वास्ते पक्के दीनदार बनजाते हैं पांचों वक़्त निमाज़ पढ़ते हैं; घंटों सिजदे में पड़े रहकर माथे में नील डाल लेते हैं और हर वक़्त हाथ में तसबीह लिये रहते हैं और मकर फरेब का जाल फैलाकर भोले लोगों का शिकार करते रहते हैं इस ही क़िसम के यह लाला मालूम होते हैं, बगुला भी तो पानी में घंटों एक टांग के बल खड़ा रहता है मानो कोई लकड़ी ही गड़ी हुई है लेकिन ध्यान उसका मछली की ही तरफ लगा रहता है, मछली पास आई और उसने चट दबोची, इस ही वास्ते तो लाला जमनादास जैसे भगतों को लोग बगुला भगत कहते हैं, भाई खुदा बचावे इन लोगों से यह तो बड़े ही ख़तरनाक हैं, ऐसे ही एक वह हैं लाला बैजनाथ जो सुबह से उठकर १२ बजे तक शिवाले पर ही पड़े रहते हैं, नहाने धोने में ही धर्म समझते हैं और किसी से अपना पल्ला तक भी नहीं छुआते हैं, लेकिन बेईमान ऐसे हैं कि आदमी को शिर से पैर तक निगल जावें और डकार तक न लें, तोबह २ भाई उसके तो काटे का कोई मंतर भी नहीं है, देखो तो उसने कैसे २ ज़ुलम किये हैं और कितने घर उजाड़े हैं; ओफ़्फ़ो लाला जमनादास की बातों से तो अब यह ही

मालूम होता है कि इस ही बुड्ढे पापी ने सुखराम के यहां चोरी कराई है ताकि वह औरत तंग आकर गांव से चली आवे और लाला की ज़मीन छूट जावे अच्छा अब गांव में चलकर इस ही बात की ओह लगाते हैं और जो यह ही बात निकली तो लाला ही को तमाशा दिखाते हैं, इस प्रकार के विचार अपने मन में उठाता हुआ पटवारी गांव में पहुंच गया।

अध्याय २

लाला जमनादास देखने में तो ६०, ७० बरस के बुड्ढे नज़र आते थे पर उमर उनकी अभी ५० बरस में भी नहीं पहुंची थी, उनकी जोरू का जो बुरा व्यवहार ऊपर दिखाया गया है उसको पढ़कर पाठकगण अवश्य चौंके होंगे और इसका कारण जानना चाहते होंगे, बात असल में यह थी कि ४२ बरस की उमर में उनकी पहिली बीवी मरगई थी उस वक्त उनके दो बेटे, एक बेटे की बेवा, दो पोते एक पोती और एक बेटी मौजूद थी, जो बेवा होगई थी, जमनादास ने दो तीन महीने तो अपनी बीवी के मरने का खूब शोक मनाया और वैराग्य दिखाया, यह संसार असार है, पानी के बुलबुले के समान यहां सदा किसी को रहना नहीं है, एक न एक दिन सब को ही इस दुनियां को छोड़ जाना है, जो इस दुनियां से नेह लगाते हैं वह बिल्कुल ही ठगे जाते हैं, और अपने ज्ञान गुण के बदले पापों की गठरी बांध लेजाते हैं और नर्क निगोद में पड़कर महादुःख उठाते हैं, और जो इस दुनियां के माया-जाल में नहीं आते हैं वह ही स्वर्गों के सुख पाते हैं और अंत को मोक्ष स्थान में पहुंच जाते हैं, इस प्रकार की बहुत कुछ बातें लाला जमनादास बनाते रहे और किसी तीर्थ स्थान पर रहकर श्रीचरणों में ही अपनी आयु व्यतीत करने की अभिलाषा जताते रहे, परन्तु

चुपके ही चुपके वह अपने विवाह की भी फिकर करते रहे और दो तीन महीने भी नहीं बीतने पाये थे कि उसने भोजपुर निवासी दौलतराम की १२ वर्ष की कन्या भागवन्ती पांच हज़ार रुपये में ठहरा ली, और व्याह सुझाकर खूब ठस्से के साथ बिरादरी का जीमन कर दिया, जिसमें तरह २ की मिठाई और तरह २ की लौज़ात बनवाई और भरपूर मोवनदार कचौरी खिलवाई, यह तर-माल देखकर बिरादरी के लोगों का भी जी ललचाया और लूटने को हाथ फैलाया, जमनादास ने भी जान बूझकर उनको ऐसा मौक़ा दिया और आंख मीचकर अलहदा होगया, फिर क्या था लगे टोकरे ही टोकरे ग़ायब होने और बिरादरी वालों के घर पहुंचने, आख़िर में जमनादास ने ख़ुद भी बहुतों के यहां परोसे भिजवाये और टुकड़ा डालकर ताबेदार बनाये, फिर सब मिलकर खूब धूम धड़के के साथ नई बहू व्याह लाये, पांच सौ रुपये का माल भोजपुर के जैन मन्दिर में चढ़ा आये, एक रुपया जनेऊ ब्राह्मणों को दे आये और चार आना जीव बाड़ा बांट आये जिससे भोजपुर में भी सब लोग लाला का यश गाने लगे ४२ वर्ष के बुड्ढे के साथ १२ वर्ष की छोटी सी छोकरी का विवाह जोगम जोग बताने लगे और सदा ऐसे ही विवाह होने की बधाई मनाने लगे।

छै महीने पीछे भागवंती का गौना होगया तब से जमनादास ने उसकी बहुत ज्यादा खातिरदारी और खुशामद करनी शुरू की, नित्य नई २ किस्म के गहने, नई नई किस्म के कपड़े उसके वास्ते बनने लगे और उसके शृङ्गार और दिल बहलाव के वास्ते नई से नई चीजें दूर दूर से मँगाई जाने लगीं, खाने का तो उसके यह हाल था कि दिन में २५ दफ़े तो खुद जमनादास ही उसको टोकता था और कभी मिठाई, कभी मेवा और कभी चाट उसके सामने लाकर रखता था इसके इलावा जमनादास के बेटों की बहुवें और विधवा बेटी भी जमनादास की बारंबार ताकीद के सबब दिन भर खाना

बनाने में ही लगी रहती थी और नई से नई चीजें बनाकर लाती थीं और उसका दिल बहलाने और हर तरह से खुश रखने की कोशिश करती रहती थीं, ग़रज़ जमनादास और उसके घर के सब लोगों ने भागवन्ती को बहुत ही भाग लगाया और खूब ही लाड़ लड़ाया, जो उसने कहा सो किया और जो उसने मांगा सो दिया हर तरह उसकी हां में हां मिलाई और उसकी ही बात चलाई, यहां तक कि अगर उसने दिन को रात और रात को दिन कहा तो सबने उसकी ही बात को ठीक बताया और हर मामले में उस ही को वर बनाया, फल जिसका यह हुआ कि वह अव्वल दर्जे की ज़िद्दन और बेशरम होगई और दिन भर बच्चों वाला रूठ मनावा रखने लग गई, ज़रूरत बे ज़रूरत और मतलब बे मतलब दिन में दसबार उसको रूठना और जमनादास का आकर घंटों उसकी खुशामद करना, हाथ जोड़ना, पैरों में पड़ना और उसकी उलटी सीधी बात पूरी करके उसको मनाना यह रोज़ का एक मुख्य काम होगया था, जमनादास के बेटों की बहुवों और बेटी से वह बात २ में बिगड़ती थी और जो मुंह में आया बकती थी, वह बेचारियां अपनी शरम के मारे कुछ नहीं बोलती थीं और जहां तक हो सकता था उसकी सब कुछ सहन करने और उसको राज़ी रखने की ही कोशिश करती थीं, तिस पर भी वह जमनादास से उनकी शिकायत ही करती रहती थी और झूंठमूठ की बातें बनाती रहती थी, और जमनादास उसकी बातों को झूंठ और बिल्कुल ही बेबुनियाद मान कर भी उसको राज़ी रखने के वास्ते अपने बेटे की बहुवों को ही दबाता था और उनको खूब झिड़कियां सुनाता था, जिससे इन बहुवों का दम नाक में आजाता था।

यहां तक तो इन बेचारियों ने लोकालाज के कारण सहन किया, लेकिन जब भागवन्ती कुछ और औरआगे बढ़ी और जमनादास के बेटों पोतों को भी कठपुतली की तरह नचाने लगी और उनको

भेड़ बकरी और कुत्ता बिल्ली से भी कमतर समझकर हर तरह से सताने और दिक़ करने लगी, यहां तक कि जब इस लाड़ली बहू के कारण उनका घर में बैठना भी मुश्किल होगया और उनका जीना भी भारी पड़ गया तब तो उन सबों ने यह ही निश्चय कर लिया कि इस मुसीबत से तो यह ही बेहतर है कि अलग होजावें और अगर लालाजी कुछ भी बांटकर न दें तो भीख मांगकर ही गुज़ारा कर लेवें या मिहनत मज़दूरी करके ही अपना पेट भर लेवें पर इस नित्य की थूका फ़ज़ीहती और हाय हाय से तो बचें, जमनादास ने उनको बहुतेरा समझाया कि तुम अपनी मतेई की बातों पर जाकर क्यों इस बंधे बँधाये घर को तेरहतीन और बाराबाट करते हो, इस घर में तो जो कुछ है वह सब तुम्हारे ही वास्ते है, न मैंने कुछ शिर पर धरकर लेजाना है और तुम्हारी इस मतेई ने, हम तो रात दिन जो कुछ भी पापड़ बेलते हैं। और सौ झूंठ सच बोलकर हज़ार हबूब बना कर और दुनियां को लूटकर खसोट कर लाते हैं वह सब तुम्हारे ही लिये लाते हैं, रहा तुम्हारी मतेई की बात सो उसकी अल्हड़ मत है इस ही वास्ते बच्चों वाली ज़िद करती है, बड़ी होने पर जब समझ आ जायगी तो आप ही सीधी होजायगी और जो उसको कभी समझ न भी आवे तो भी क्या किया जावे, अब तो यह झेलनी ही पड़ेगी, अच्छा हुआ तो और बुरा हुआ तो अब तो यह गले पड़ ही गई है इस वास्ते अब तो यह निभानी ही पड़ेगी, तुम मुझे तो देखो मैं कैसी २ उसकी सहता हूं और ज़हर का सा घूंट पीकर बैठ रहता हूं, मेरे तो बहुत ही भारी पाप का उदय हुआ था तब ही तो मेरी अक़ल मारी गई और इस बुढ़ापे में विवाह कराने की सूझी और मैंने अपने बेटों की छाती पर एक डायन को लाकर बिठा दी, हा! मुझसा भी अभागा और मुझसा भी पापी कोई दुनियां में होगा, और जो मैं अभागा न होता और मेरे बुरे दिन आने को न होते और मेरी किस्मत न फूटती तो देवी

स्वरूप तुम्हारी मां ही क्यों मरती, वह ही क्यों तुम्हें छोड़ कर चली जाती, भाई वह तो पुण्यवान् थी इस ही वास्ते वह तो जिस दिन से हमारे घर में आई थी उस ही दिन से आखानन्दी आनी शुरू हुई थी, रुपये में रुपया, जायदाद में जायदाद, औलाद में औलाद गरज़ हरएक बात में वृद्धी ही होती चली गई और आनन्द ही आनन्द बढ़ता गया, इस तरह वह तो भाई पूरा सुख भोग कर सब तरफ़ से हराभरा घर छोड़ कर गई है और सीधी स्वर्ग में ही पहुंची है पर भाई उसका पुण्य तो उसके साथ गया, अब रह गये हम जैसे पापी लोग. मुझे तो ऐसा नज़र आता है कि घर का सारा आनन्द मंगल तो उसके साथ गया अब तो हमें त्रास ही त्रास रह गये हैं, सो भोग रहे हैं और अपने ही हाथों भोग रहे हैं, देखो मुझ पापी ने इस चुड़ैल को ब्याह लाकर आप भी मुसीबत मोल ली और तुम सब को भी मुसीबत में डाला, सच कहा है कि "जाको हरि दारुण दुख देंही । ताकी मति पहले हरलेंही" सो भाई मेरी तो मति मारी गई, नहीं तो क्या मेरी यह ब्याह करने की समय थी, यह कहकर जमनादास रोपड़ा और खूब फूट फूट कर रोया पर उसकी इन बातों का और उसके रोने का कुछ भी असर उसके बेटों पर न हुआ और वह अलग ही होगये, जमनादास की नई बहू ने बहुत कुछ शिर पटका, बहुत कुछ बातें बनाई, ज़िद की रोई पीटी और सर फकेरा जिससे जमनादास के बेटों को कुछ भी न दिया जावे और उनको नंगा बूचा ही अलग कर दिया जावे तो भी जमनादास ने कुछ तो अपनी जोरू के सामने और कुछ चोरी छुप्पे से देकर उनको अलग कर दिया और समझा दिया कि जो कुछ मेरे पास है वह भी सब तुम्हारा ही है जो मैं आहिस्ता २ तुमको देता रहूंगा, जो रह जायगा वह मेरे पीछे बांट लेना, मैं तो अब थोड़े ही दिन का मेहमान हूं, पीछे इस अपनी मतेई को भी तुम ही निभाओगे और सारे घर के मालिक बन जाओगे,

जमनादास के बेटे अपने बाप से अलग तो होगये परन्तु इससे क्लेश और भी ज्यादा बढ़ गया, क्योंकि सब एक ही हवेली में रहते थे इस वास्ते औरतों में बातबात में तकरार होती थी और जमनादास के बेटों की बहुओं को इस बात की बड़ी शिक़ायत थी कि ससुरजी ने घर का सारा माल तो अपनी नई जोरू के ही कब्जे में रखा है और हमको वैसे ही हाथ पकड़ कर निकाल दिया है और हाथ उठाई कुछ नाम मात्र को देकर ही टाल दिया है, इस ही वास्ते अब यह औरतें न तो अपनी नई सास से डरती थीं और न उसका कुछ लिहाज़ ही करती थीं बल्कि सौतनों की तरह से आमने सामने होकर लड़ती थीं और रात दिन यह ही ऊधम मचाये रखती थीं, भागवन्ती थोड़ी उमर की बच्ची तो थी ही, इस वास्ते जमनादास के लाड़ प्यार और हर वक्त की खुशामद से वह ऐसी बढ़बोला, मुंहफट, जबांदराज़, निर्लज्ज, बेहूदी और बेतमीज़ होगई थी कि लड़ने में भटयारियों और कुंजड़ियों को भी मात देती थी, इस वास्ते अड़ौस पड़ौस गली मुहल्ले और बिरादरी की औरतों को इनका लड़ना एक प्रकार का बेदाम का तमाशा होगया था, वह आ आकर इनको खूब ही बहकाती और भड़काती थीं और लड़वा कर भला चंगा तमा शा देखा करती थीं, औरतों के लड़ने का प्रभाव जमनादास और उसके बेटों पर भी बहुत कुछ पड़ता था और वह भी आपस में खिंचते ही चले जाते थे, जमनादास को अपनी औरत से तो हर वक्त सैकड़ों झिड़के और हज़ारों गालियों की बौछाड़ के सिवाय कुछ भी नहीं मिलता था इस कारण अपनी औरत के सामने तो उसकी कुत्ते से भी अधिक दुर्दशा रहती थी, पर अब तो उसको अपने बेटों से भी चैन नहीं मिलता था क्योंकि अब तो वह भी इसका पूरा २ मुक़ाबिला करने लग गये थे और कच्ची पक्की खरी खोटी सब कुछ ही सुनाते थे, और हवेली में जाने पर इसके बेटे की बहुवें भी पर्दे में होकर पर

खूब जोर जोर से चिल्ला २ कर बहुत कुछ ताने मेहने देती थी और बुड्ढे की दुर्गति बनाती थी, गरज़ इस वक्त सब तरह से जमना-दास की जान अज़ाब में फंसी थी वह सुख के सब सामान होते हुए भी सातवें नर्क के ही त्रास भोग रहा था, और रात दिन मछली की तरह तड़पता था, इस ही वास्ते ४८ बरस की उमर होने पर भी वह ७० बरस का बुड्ढा बन गया था और अपनी जिन्दगी को बवाल जान समझने लग गया था, लेकिन अगर यहीं तक बात रहता तब भी कुशल थी, पर उसके बेटे तो अब नित्य के इन लड़ाई झगड़ों के कारण यहां तक अपने बाप के खिलाफ़ होगये थे और यहां तक आपाधापी पर पड़ गये थे कि अगर किसी के जिम्में बाप के सौ रुपये हों तो वह पचास रुपये बल्कि इससे भी कमती लेकर कुल की रसीद देने और चुकती देने को तय्यार होते थे, इस तरह जमनादास के बेटों ने अपने बाप के आसामियों से रुपया वसूल करना और उसके कारोबार को पूरी तरह मलियामेट कर देना शुरू कर दिया था, जिससे वह बुड्ढा बिल्कुल ही तंग आगया था और उसका प्रभाव भी गांव के लोगों पर से जाता रहा था, और उसका हजारों रुपया मारा जाकर सब लेन देन पट्ट होगया था, वह जी ही जीमें झुरता था और कुछ भी नहीं कर सकता था, क्योंकि अगर बेटों को कुछ कहता था तो वह मुकाबिले पर आते थे और सौ सुनाते थे और अगर यह चाहता था कि सब कारबार बेटों के ही हाथ में दे दूं तो उसकी जोरू काट खाने को दौड़ती थी और हरदम यह ही सबक सुनाती रहती थी कि तू तो जल्दी ही मर जायगा और मुझे इन कम्बख़्तों के हाथ में छोड़ जायगा, जो मेरे बदन की बोटियां तक भी नोच नोच खाजायेंगे और मुझे कौड़ी २ को तरसायेंगे और दर दर की भीख मँगायेंगे, बुड्ढा भी उसकी इन बातों में आजाता था और सोचने लग जाता था कि यह लोग जब मेरा ही मुक़ाबिला करते हैं और

गास चूंट २ कर खाते हैं तब मेरे पीछे तो जो न करें वह ही थोड़ा है, इस वास्ते वह अब यह ही सोचता था कि सब जायदाद अपनी जोरू के ही नाम करदूं और इस ही को सब कुछ अख़ियार दे दूं, जिससे मेरे पीछे इसकी गुज़रान भली भांति होती रहे और मेरी मिट्टी ख़राब न होती फिरे, फिर सोचता था कि यह औरत तो छोटी सी बच्ची है नासमझ नादान है और इसके भाई बहुत ही ज्यादा चालाक और मक्कार हैं, ऐसा न हो कि मेरा यह माल न मेरे बेटों को ही मिले और न मेरी जोरू के ही पास रहे बल्कि वह हरामजादे ही उड़ावें जिन्होंने अपनी बहिन के बदले में पूरे पांच ही हज़ार रुपये लिये थे और फिर भी सबर नहीं आया था, ग़रज़ इस ही उधेड़बुन में न उसे दिन को चैन थी और न रात को नींद, बल्कि सोच ही सोच में वह घुल २ कर निरा हाड़ों का पिंजर ही रह गया था और अपने मरने के दिन गिना करता था।

अध्याय ३

उसकी जोरू का यह हाल था कि गौने आने के बाद दो तीन बरस तक तो वह बच्चों वाले खेलों में ही जी बहलाती रही और बढ़िया खाने, बढ़िया से बढ़िया कपड़े और बढ़िया से बढ़िया अपने शौक़ के सामान मिलने से कुछ खुश भी होती रही और जमनादास के साथ कुछ लाड़ प्यार और रूस मनावे के साथ बोलती भी रही लेकिन १५-१६ बरस की उमर होने पर जब उसको भरपूर जवानी आगई तो उसको लाला साहब से घृणा होनी शुरू होगई, यहां तक कि आहिस्ता २ कुछ दिनों में उसको लालाजी की शकल देखकर ही गुस्सा आने लगा और वह उसको श्मसान के भूत और जंगल के हड़के के समान भयानक दिखाई देने लगा, इस वास्ते जब वह घर के अन्दर आता तो वह बेमतलब भी उस पर बरस पड़ती थी और

कोई न कोई बहाना बनाकर सैकड़ों झिड़कियां सुनाती थी और कुत्ते की तरह दुरदुर परपर करती रहती थी, जमनादास उसके सामने बिल्कुल भी नहीं बोलता था बल्कि डर के मारे ऐसा हो जाता था जैसा कि कसाई के सामने गाय भैंस, इस ही वास्ते वह जो चाहे हुक्म चढ़ाती थी और वह सिर के तान उसका हुक्म बजाता था, इस पर भी हजारों गालियां सहता था और मन मसोस कर ही रह जाता था, भागवन्ती को सदा इस बात का भय लगा रहता था कि ऐसा न हो यह बुड्ढा अपने बेटे पोतों के मोह में आकर उनको कुछ और दे दे इस वास्ते वह हर वक्त छीना झपटी ही रखती थी और जो कुछ रुपया जमनादास के हाथ में आता था वह सब छीन कर अपने कब्जे में कर लेती थी और एक पैसा भी वापिस नहीं देती थी जिससे जमनादास का कारोबार बहुत ही कम होगया था और कुछ२ बंद सा ही हो चला था, बहुत ही ज्यादा ज़रूरत दिखाने और हज़ार खुशामद करने पर भी जमनादास को कभीकदाकहो अपनी औरू से रुपया मिलता था नहीं तो नित्य तो वह टकासा जवाब ही पाता था और मुंह देखता ही रह जाता था, इस वास्ते अब उसके जरूरी कामों में भी हरज पड़ने लग गया था और कभी २ दूसरों से उधार लेकर ही काम चलाना होता था।

जमुनादास की औरू अपने हाथ में आये रुपये को दाब २ कर नहीं रखती जाती थी बल्कि व्याज पर चढ़ाती थी और अपनी समझ में खूब रुपया कमाती थी, इस ही वास्ते अनेक चालाक औरतें उसके यहां घुसी रहती थीं और मीठी २ बातें बनाकर और भारी सूद का लालच दिखाकर रुपया उधार ले जाती थीं, इसके अलावा भागवन्ती के भाई भी बार २ आते, थे बड़ी बड़ी मुहब्बत जिताते थे, अपनी मातफ़त आध आने रुपया व्याज पर सब रुपया चढ़ा देने का लालच दिखाते थे और जमनादास के बेटों की बुराई करके भागवन्ती को हर वक्त डराते थे कि वह जब चाहेंगे तेरे पास से

सब रुपया छीन ले जायेंगे और झगड़ा उठाने पर अपने पास से भी अपनी ही चोटी मुड़वायेंगे, उस वक्त तू कुछ भी न कर सकेगी और रो पीट कर ही बैठ रहेगी, इस वास्ते इस तेरे रुपये का तो तेरे हाथ रहना ही ठीक नहीं है, हम इस रुपये को ले जायंगे, तेरे नाम के तमस्सुक लिखायेंगे और साल भर में ही दूने कर दिखा-येंगे, ग़रज़ इस तरह बहका फुसलाकर उसके भाइयों ने भी उसका सब रुपया अपने यहां लेजाना और दूसरे तीसरे महीने ही बहुत कुछ रुपया देकर यह जताना शुरू कर दिया था कि यह अब तक के ब्याज ही वसूल हुआ है, आगे को और भी ज्यादा वसूल होगा, इसके अलावा अब उसके भाइयों ने हर मौसम की खेत की पैदावार जैसे कच्चे चने के टांट, भुने हुए होले, गेहूं की बाली कच्चे पक्के आम भुना हुआ सत्तू, मक्की के भुट्टे, कसेरू, धान की खील, गन्ने, पौंडे, ताज़ा २ गुड़ शक्कर राब और रस के घड़े, दूध दही ताजा घी और भी ऐसी ही ऐसी बहुत चीज़ें उसके पास भिजवानी शुरू कर दी थीं और कहने लग गये थे कि यह सब चीज़ें तेरी आसामियों से आनी शुरू होगई हैं, जिससे उसको पूरा यक़ीन होने लग गया था कि मेरा रुपया ब्याज पर चढ़ने लग गया है. इन चीज़ों के पहुंचने से अपनी बहिन को खुश देख कर थोड़े ही दिनों में उसके भाइयों ने ऐसा तांता बांध दिया था कि रोज़ एक न एक आदमी कोई न कोई चीज़ लेकर पहुंचा ही जाता था जिससे भागवन्ती पूरी पूरी साहूकारनी बन गई थी और उसका कुल रुपया उसके भाई खींच ले गये थे।

लाला के हाथ में से सब रुपया निकाल लेने के वास्ते भाग-वन्ती उससे घर के खर्च के वास्ते भी हर वक्त रुपया मांगती रहती थी और ज़रूरत से ज़रूरत बहुत कुछ सौदा मँगाकर चोरी छुप्पे से उसको औने पौने से दामों पर बेचती रहती थी और फिर भी हर वक्त हाय हाय ही रखती थी, जमनादास यह सब बातें जानता

था और अपनी आंखों से अपने घर का सफ़ाया होता हुआ देखता था पर उफ़ भी नहीं कर सकता था और अगर कभी ज़बान खोलता भी था और प्यार मुहब्बत के तौर पर कुछ समझाने को तय्यार भी होता था तो उलटी मुसीबत मोल ले लेता था और अपनी जोरू से पिण्ड छुड़ाना भारी होजाता था, ऐसी दशा में कई २ दिन चूल्हा नहीं चढ़ता था और अठवाड़ों तक बात ठण्डी नहीं होने पाती थी, इन लड़ाई के दिनों में वह तो भजना नौकर के हाथ बाज़ार से सब कुछ मंगाकर खा लेती थी पर बेचारे जमनादास को भूखों ही मारती थी क्योंकि वह तो निर्खा चुगा शुद्ध ही भोजन खाता था और बाज़ार की चीज़ को तो हाथ भी नहीं लगाता था, घर में दो गाय और एक भैंस दूध देती थी मगर वह कम्बख्त तो उसे दूध भी पीने नहीं देती थी, क्योंकि वह जब दूध पीने बैठता था तो अपने पोते पोतियों को भी बुला लेता था और उन्हें भी थोड़ा २ पिला देता था, पर उसकी यह बात भागवन्ती को किसी तरह भी सहन नहीं हो सकती थी इस वास्ते वह सौ फ़ज़ीहते उठाती थी और बच्चों को खेद भगाती थी और लाला को भी सौ सुनाती थी और जो कुछ भी नहीं बन आती थी तो दूध को ही गिरा खिंडाती थी या दही जमा देने का बहाना बनाती थी और किसी को भी एक बूंद नहीं पिलाती थी, सच पूछो तो वह तो गाय भैंसों को भी बेच देने या गांव भेज देने की फ़िकर में होजाती थी, पर यह ही विचार कर रह जाती थी कि भजना जाट इन डंगरों की ही टहल के बहाने से टिका हुआ है, ऐसा न हो कि डङ्गरों के साथ वह भी हटा दिया जावे और फिर कुछ भी करते धरते बन न आवे, भजना जाट से वह बहुत ही ज्यादा खुश रहती थी और खूब ही तर माल खिलाया करती थी, वैसे भी वह खूब ही लूटमचाई करता रहता था और सारे घर का मालिक बनता था, सच तो यह है कि लाला की तो एक भी नहीं चलती थी और

भजना की एक भी बात नहीं टलती थी, लाला को और उसके सब घर वालों को इन सब बातों की ख़बर थी, पर सब कोई ज़हर का सा घूंट पीकर ही रह जाता था और चूं तक भी नहीं करने पाता था, उसके बेटों ने तो इन ही बातों के कारण यह भी चाहा था कि इस हवेली को छोड़कर किसी किराये के ही मकान में जा रहें लेकिन अभी तक कोई बौंत नहीं बैठा था इस वास्ते उनको इस नरक कुण्ड में ही सड़ना पड़ रहा था, ग़रज़ उन दिनों जब कि जमनादास सुखराम के बेटे की बहू से मौरूस छुड़ाने की कोशिश में एक महा दुखिया रांड के गले पर अन्याय की छुरी चलाकर और झूठ फ़रेब का जाल फैलाकर पापों की भारी गठरी बटोर रहा था उसकी और उसके घर की यह दशा होरही थी। जो ऊपर बयान हुई है।

अध्याय ४

जमनादास के साथ बातचीत करने से पटवारी को इस बात का शुबह हो ही गया था कि जमनादास ने ही सुखराम के बेटे की बहू के यहां चोरी करादी है, इस वास्ते अब उसने गांव में आकर इस बात की खूब जोह लगाई और जासूस की तरह से पैड़ चलाई जिससे अब वह साफ़ २ कहने लग गया कि यह सब कार्रवाई उस ही बेईमान जमनादास की है जो बगुला भगत की तरह से नित्य तीन २ घंटे पूजा पाठ करता हैं और ऐसा पाक साफ़ बनता है कि दिन में चार चार दफे नहाता है और लकड़ियां तक भी धो धो कर ही जलाता है, इस तरह इस चोरी का सब भेद मालूम होजाने पर पटवारी यह बात सोच ही रहा था कि यह सब हाल पुलिस को बतादूं और चोरों को पकड़वा कर लाला की सारी कलई खुलवा दूं कि इतने में लाला भी, गांव में आ पहुंचे, उसने

सबसे पहले सुखराम के बेटे की बहू के पास जाकर उसको बहुत कुछ दिलासा दिया और सारी उमर उसकी प्रतिपाल करते रहने का जिम्मा लिया और दो मन अनाज, कुछ बर्तन और ज़रूरी सामान उसके हवाले किया और अच्छी तरह समझा दिया कि जिस वक्त जिस चीज़ की ज़रूरत हुआ करे सीधी मुझे ही कहला भेजा करे मैं तुरन्त ही तेरी वह ज़रूरत पूरी कर दिया करूंगा, खेत भी तेरा जुतवाता रहूंगा और मौरूस भी तेरी तेरे पास ही रहने दूंगा, वह बेचारी मुसीबत की मारी इसके झांसे में आगई और उसको साक्षात् दया की मूर्त्ति और सच्चा धर्मात्मा जानकर यह ही समझने लग गई कि भगवान ने मेरी पालना के वास्ते ही इसको यहां भेजा है और मेरा रक्षक बनाया है, इस वास्ते उसने रो रो कर जमनादास को अपना सारा हाल सुनाया और पटवारी और गांव के लोगों ने जो कुछ उसको बहकाया था वह सब कुछ बताया, इस पर लाला ने उसकी और भी ज्यादा तसल्ली की और उसको अपनी बेटी बनाकर उसकी चोरी भी निकलवा देने की भारी क़सम खाई, फिर वह पटवारी से भी जाकर मिला और कहा कि यहां गांव में आकर और सुखराम के बेटे की बहू की हालत देखकर तो मेरा भी जी भर आया है और मुझको उस पर बहुत ही ज्यादा तरस आया है, इस वास्ते अब तो मैं भी तुम से मुफ़्त में ही मौरूस छुड़वाना नहीं चाहता हूं और न पहिले पीछे मरने का कोई मामला ही बनाता हूं बल्कि उसको कुछ अनाज खाने को दे आया हूं और उसकी हर तरह तसल्ली कर आया हूं, तुम भी उसकी ख़बरगीरी रखना और मेरे लायक़ उसका जो काम हो मुझे बताते रहना, क्योंकि दया ही परम धर्म है और दुखियाओं के दुःख को निवारण करना ही मुख्य काम है अब मैं उससे मौरूस भी छुड़ाना नहीं चाहता हूं, हां इस मामले में तुमको जो दो सौ रुपये देने की ज़बान दे

चुका हूं उनसे मैं नहीं भागता हूं फिर सौ रुपये पटवारी के आगे रखकर कहने लगा कि आधे तो यह अब लो और आधे फिर भुगतादूंगा, इन रुपयों को देख कर पटवारी बहुत घबड़ाया और कहने लगा कि लाला साहब जब तुम मौरूस तोड़ने का मामला ही चलाना नहीं चाहते हो और चलाओ भी तो जब मैं ही तुमको किसी किस्म की मदद देने से इनकार करता हूं तब यह रुपये कैसे, जमनादास ने कहा कि भाई तुम हमारे हाकिम हो और हर वक़्त काम आते हो, यह मामला नहीं चलता है तो न सही, किसी दूसरे मामले में समझ लेना, हमारे तो रोज़ ही मामले रहते हैं, पर जो एकबार ज़बान से निकल गया उसका तो भुगतान ही होजाना बहतर है, पटवारी ने कहा कि जब कोई दूसरा मामला होगा तब जैसा मुनासिब होगा देखा जावेगा, पर अब बेमामले तो मैं यह रुपया नहीं ले सकता हूं, इस पर लाला ने कहा कि अगर बेमामला नहीं लेते हो तो यह ही बात अपने जिम्मे लेलो कि सोच समझ कर कोई ऐसी बात निकाल देंगे जिससे इस धरती की बाबत हमारा भी काम बन जाय और उस रांड का भी कुछ नुक़सान न हो, तुम तो भाई पटवारी हो, उसकी मौरूस बनी रहने में भी तो सौ रस्ते ऐसे निकाल सकते हो जिसमें दोनों का ही फायदा होता रहै, पटवारी ने कहा कि मुझे तो ऐसी कोई बात सूझती नहीं है, जमनादास ने कहा कि अब नहीं सूझती है तो न सही महीने दो महीने में या बरस में दो बरस में जब सूझे तब ही सही, ग़रज़ सौ बहाने बनाकर लाला जमनादास वह सौ रुपये पटवारी को देही आये, और पटवारी के दिल में भी अब बार २ यह ही बात आने लगी कि जो इतनी पूजा पाठ करता है और हर वक्त अपने नियम धर्म में ही लगा रहता है कैसे हो सकता है कि उसने ही ऐसी ग़रीब बेवा के यहां चोरी कराई हो, जो उसने ही चोरी कराई होती तो अब यह इतना अनाज और भांडे बरतन क्यों उसको देजाता और फिर

चाहे किसी ने ही यह चोरी कराई हो, तुझे क्या ग़रज़ पड़ी है कि तू पुलिस में जाकर किसी २ की चुगली खावे और बेमतलब ही उन लोगों को अपना वैरी बनावे।

सुखराम के बेटे की बहू का नाम राजरानी था, जमनादास ने उसको अपनी बेटी कह लिया था और उसकी प्रतिपाल का जिम्मा ले लिया था, इस वास्ते वह पांचवे सातवें दिन गांव में आता था और राजरानी की ख़बर ले जाता था, और उसको इस ही नाम से पुकारता था, वह भी लाला पर पूरा भरोसा करती थी और अपना सब दुख दर्द सुना देती थी, दसों बरस से सुखराम के यहां भोंदू चमार नौकर था जो हल जोतता था और डंगरों की टहल टकोरी करता था, वह बड़ा ईमानदार और वफ़ादार नौकर था और मालिक के वास्ते अपनी जान तक दे देने को तय्यार रहता था, राजरानी के विधवा होजाने और चोरी हो-जाने के कारण बिलकुल ही मुफ़लिस कंगाल बन जाने पर भी वह उसके पास से नहीं टला था बल्कि घास खोद कर और मिहनत मज़दूरी करके अपना भी पेट पालता था और राजरानी को भी आटा दाल ला देता था, चमार के इस उत्तम व्यवहार से राजरानी को बड़ा दुख होता था और इस उलट फेर को देखकर उसकी छाती में भारी धक्का लगता था और शिर में चक्कर आकर चारों तरफ़ अँधेरा दिखाई देने लगता था, वह रोती थी और बार २ सोचती थी कि मेरी क़िस्मत ने मुझको अब इस ही योग कर दिया है कि हमारे झूंठे टुकड़े से ही अपना पेट भरने वाला चमार अब मेरी प्रतिपाल का सहारा रह जाय, और सब कुछ खाक में मिल जाय, वह बारबार अपनी मौत बुलाती थी पर कुछ भी न कर पाती थी, और शायद अगर यह चमार उसको ढांढस न बँधाता रहता तो अब तक कभी की किसी कूए में गिर कर मर गई होती, या किसी दूसरी तरह अपनी जान देकर परलोक को सिधार गई होती, इस चमार के

मौजूद होते हुए तो राजरानी के यहां चोरी भी नहीं हो सकती थी, वह मरता और मरता, अपनी जान पर खेल जाता और एक तिनका भी न जाने देता, पर क्या करे उस दिन तो जमनादास ने कोई बहुत ही जरूरी काम उठा रखा था और गांव के बहुत से चमारों को अपने यहां बुला रखा था खैर चोरी तो होनी थी सो होगई और जमनादास के दिये हुए दान से अब उस बेचारी का पेट भी भरने लगा, लेकिन अब इस चमार को यह फिकर पैदा हुई कि बिना बैलों के उसकी ज़मीन जुते किस तरह, गांव के कोई किसान यह धरती जोतने को मांगते थे और लाला का लगान देकर राजरानी को भी सब कुछ देने को कहते थे और चमार को भी बहुत कुछ लालच दिखाते थे, लेकिन वह चमार किसी के भी लालच में नहीं आता था और अपने को नासमझ जान कर बार बार लाला के ही पास जाता था और उससे ही सलाह मिलाता था, लाला अपने दिल में तो यह चाहता था कि अब की बार यह ज़मीन बिल्कुल भी न जुतने पावे ताकि लगान वसूल न होने के सबब यह डिगरी कराकर सर्कार के ही हुक्म से मौरूस तुड़वा सके और बेखटके ज़मीन पर कब्ज़ा पासके, लेकिन ज़ाहिर में वह उनके भले की ही बातें बनाता था और किसी न किसी तरह इस मामले को टलाता था, आखिर जब गांव के किसी भी किसान को यह ज़मीन न दी गई तो भोंदू चमार कहीं दूर देश से शेरसिंह चौहान को ले आया जो राजरानी के बाप की तरफ का बहुत दूर का रिश्तेदार होता था, और जिसकी काश्त उसके ज़मीदार ने छुड़वाली थी और जिसको कोई ज़मीन जोतने को नहीं मिल सकती थी, वह अपने हल बैल और खेती का सब सामान ले आया और राजरानी के यहां रह कर उसके वास्ते ज़मीन जोतने लग गया जमनादास को असल में तो इस कार्रवाई का बहुत फिकर हुआ लेकिन ज़ाहिर में उसने बहुत ही खुशी दिखाई और शेरसिंह की

तसल्ली करके सब तरह की सहायता देने की हमदर्दी जिताई।

यह गांव असल में जाटों का ही गांव था और राजरानी के घर के सिवाय और कोई भी घर चौहानों का इस गांव में बल्कि आस पास के भी गांवों में नहीं था, इस वास्ते जमनादास ने अब चुपके ही चुपके गांव के जाटों को भड़काना शुरू किया कि क्या तुम्हारे गांव में कोई भी जाट इस काबिल नहीं रहा था कि सुखराम वाली ज़मीन जोत लेता जिससे एक चौहान को अपने हल बैल समेत इतनी दूर से यहां न आना पड़ता, इस तरह की बातों से भड़का कर वह हरएक जाट से यही कहा करता कि भाई मैं तो खुद ज़मीन जोतने के लिये गांव में आने से रहा, तुम ही लोग जोतोगे, पर मैं यह चाहता था कि जाटों के गांव में जो यह एक घर चौहान का आ घुसा है वह न रहे और राजरानी से ज़मीन छूटकर तुम्हारी जोत में आजावे, पर तुम्हें तो इस बात का कुछ ख़याल ही नहीं है, सो खैर मेरा ही इसमें क्या हरज है, मेरी तरफ़ से अगर सारे गांव में चौहान ही आ बसें तो मुझे क्या, शेरसिंह बेचारे के आने से मेरा तो फ़ायदा ही हुआ है कि छै महीने से खाली पड़ी हुई ज़मीन जुतने लगी है गरज़ इस ही किस्म की अनेक बातें वह जाटों से किया करता था कि शेरसिंह के आने के दो ही महीने पीछे गांव में चोरियों का शोर होने लगा, आज उस जाट के घर में पाड़ आया लेकिन जाग हो गई, माल कुछ नहीं गया, कल इसके बैल खुल गये, लोग पीछे दौड़े और चोर बैलों को जंगल में छोड़ कर भाग गये, और भी ऐसी ही बहुत सी बातें उठीं और पुलिस तहक़ीक़ात को आई, पूछा क्या कोई नया आदमी गांव में आया है, इस पर लोगों ने शेरसिंह का नाम लिया और कहा कि जब से यह आया है यहां ऊपरी आदमी आने जाने लगे हैं और इलाके भर के बदमाशों का अड्डा रहने लगा है, इस पर पुलिस ने शेरसिंह को बहुत धमकाया और बदमाशी में चालान कर देने

का डरावा दिखाया, शेरसिंह बहुत हैरान था कि क्यों लोगों ने मुझ पर यह झूंठा इलज़ाम लगाया और मुझे पुलिस में खिचवाया, राजरानी भी बहुत घबड़ाई और जमनादास के पास ख़बर भिजवाई, उसने भी बहुत ज्यादा घबड़ाहट दिखाई, और पुलिस को कुछ दे दिला कर शेरसिंह के अपने देश को वापिस चले जाने की बात चलाई और राजरानी को भी उसके ही साथ चले जाने की सलाह बताई, लेकिन शेरसिंह के पास तो अपने गांव में जाकर गुजारे की कोई भी सूरत नहीं थी इस वास्ते कुछ भी हो उसने तो यहीं रहने की ठहराई और पुलिस को दे दिलाकर राजी कर देने की ही बात जमाई।

अध्याय ५

इधर तो यह मामला चल ही रहा था कि जमनादास के यहां उसकी घर वाली का सात सौ रुपये का सोने का हार गुम होगया, जिसके कारण भागवन्ती ने शोरगुल मचाकर और रो धोकर धरती आकाश एक कर दिया, जमनादास ने तुरन्त ही गैब की बात जानने वाले ज्ञानियों को बुलाया और उनके द्वारा चोरी का सुराग़ चलाना चाहा, उन लोगों में से किसी ने कुण्डली बनाकर, किसी ने घड़ा फिराकर, किसी ने मिट्टी उठवाकर, किसी ने चावल चबाकर, किसी ने उड़द के दाने मँगाकर, किसी ने अपने इष्ट देव को मनाकर, किसी ने शिर हिलाकर और किसी ने लाल लाल आंखें बनाकर चोरी का पता बताया, इनमें से किसी का कहना था कि माल घर में ही धरा है, कोई कहता था कि घर के ही किसी आदमी ने यह काम करा है, एक पता देता था कि यह चोरी एक रांड औरत ने ही करी है, और दूसरा यक़ीन दिलाता था कि एक जवान पुरुष ने ही यह चीज हरी है, ग़रज़ गैब की बात बताने

वाले यह सब लोग जिनमें कोई ब्राह्मण, कोई जुलाहा, कोई कहार, कोई चमार, कोई मुसलमान और कोई योगी था अपनी २ हैसियत के मुआफ़िक कोई रुपया, कोई अठन्नी, कोई चुवन्नी, और कोई दुवन्नी लेकर और जमनादास और भागवन्ती को वहम के चक्कर में डालकर चल दिये और अन्त में वह सब यह बात भी बहुत ही जोर देकर कहते गये कि बात निकलेगी वह ही जो हमने कही है, क्योंकि हमारी बताई हुई बात न कभी झूठी हुई और न हो. उनके जाने के पीछे जमनादास की बहू ने इन ज्ञानियों के कहने के बमूजिब अपना विचार जमाकर और जमनादास के बेटों का नाम बताकर साफ़ २ यह ही कहना शुरू कर दिया, कि इन ही के घर में है मेरा हार तो, तब ही तो वह बता गये हैं कि चीज़ घर में ही मौजूद है, और दूसरा तो साफ़ २ ही कह गया है कि घर के ही किसी आदमी ने यह चीज़ चुराई है, इससे ज्यादा वह और क्या बताता, और एक तो यहां तक भी खोल गया है कि चोरी रांड़ औरत ने करी है, सो वह रांड़ औरत कौन होती, घर की ही तो है, जवान मरद भी जो उसके साथ होगा उसको भी मैं समझ गई हूं, पर अपने मुंह से क्या कहूं, यह लोग सारा माल तो बांटकरले गये पर अब भी इनको सबर नहीं आता है, भागवन्ती की यह बातें सुनकर जमनादास के बेटों और बहुओं को बहुत बड़ा जोश आया इस वास्ते उधर से उन्होंने भी बकना झकना और कोसना पीटना शुरू किया, फिर दौड़ कर गली मुहल्ले और बिरादरी के लोगों को बुला लाकर उनके सामने खूब अपना रोना रोया और आंसुओं से मुंह धोया, फिर हाथ जोड़कर और उनके पैरों पड़कर उनसे प्रार्थना करने लगे कि हमारे घर की तलाशी लेलो, और जो इसका एक तिनका भी निकले वह इसको देदो, लेकिन उन सबों ने तलाशी लेने से इनकार किया और जमनादास को ही उपदेश दिया कि पहिले तुम ही अपने घर को टटोलो फिर कुछ

मुंह से बोलो, इस बात पर भागवन्ती बहुत घबराई और तरह २ की बात बनाई, जिससे लोगों को उलटा उसही पर शुबह होने लगा और जमनादास भी खड़ा २ रोने लगा, आख़िर को सब लोगों ने पुलिस को बुलाकर सब की तलाशी लिवाने का डरावा दिखाया और इस ढब से जमनादास को अपने घर की सब चीज़ों को जांचने के लिये लगाया, लेकिन इस पड़ताल में हार तो क्या मिलता बल्कि जमनादास को उलटा यह मालूम हुआ कि सोने चांदी के और भी कई ज़ेवर नदारद हैं, रुपया भी जितना उसके तख़मीने में होना चाहिये था उसका दसवां हिस्सा भी नहीं है, घर का पुराना क़ीमती असबाब भी बहुत कुछ ग़ायब है, हां बच्चों के खेल तमाशे और दिल बहलावे की हज़ारों फ़ज़ूल चीजें ज़रूर भरी पड़ी हैं, इनके अलावा कांसे पीतल पर सोने का मुलम्मा किये हुए बहुत से बनावटी जेवर भी मौजूद हैं जिनको बहूजी ने सच्चे समझ कर बड़ी हिफ़ाज़त से रक्खे हैं, यह हाल देखकर जमनादास ने दुहत्थड़ मारकर अपना शिर पीट लिया और रोता हुआ बाहर निकल कर शोर मचाने लगा कि लोगो मैं तो लुट गया, मेरे घर में तो चौका फिरा हुआ है और सब सफ़ाया हो चुका है, लोगों ने कहा भाई घबराओ मत, अपनी औरत से पूछो वह सब रस्ता बता देगी और तुम्हारा शुबह मिटा देगी, मगर जमनादास बार २ यह ही कहता था कि अगर वह बताने योग्य होती तो इस तरह अपना घर ही क्यों लुटाती, इस वास्ते मैं किसके सामने रोऊं और किससे पूंछूं, देखो मेरे पाप कर्म्मों को कि वह तो नादान बच्ची थी ही पर जो समझदार थी (यानी बेटों की बहुएं) वह भी अपनी २ बुग़ची बग़ल में दबाकर अलग हो बैठीं, हाय इस बुढ़ापे में मेरा किसी ने भी साथ न दिया, और यों मेरा माल बर्बाद किया, जमनादास की यह बातें सुनकर भागवन्ती गुस्से में भर कर आपे से बाहर होगई और लोगों की भी हया

शरम छोड़कर एक लख्त ही जमनादास पर बरस पड़ी, हाथ फैला २ कर उसने खूब ही खरी खोटी सुनाई और अपनी लाज गंवाई उसने जमनादास के बेटों और बहुओं पर भी सैकड़ों इल्जाम लगाये और उनके झूंठे सच्चे पतड़े खोलकर दिखाये, इस पर और लोग भी घबड़ाये और डर के मारे यह कहते हुये चलदिये कि रांड का सांड और बुड्ढे की जोरू किस के काबू में आये हैं, बुढ़ापे के विवाह के यह ही तो मजे हैं जिनकी खातिर बुड्ढे बाबा ब्याह कराते हैं और सात हज़ार की थैलियां लुटाते हैं, पर भाई अभी क्या है? क्योंकि अभी तो यह बुड्ढा जिन्दा है, इसके मरे पीछे देखना कैसे २ गुल खिलते हैं और क्या २ रंग बदलते हैं।

आज की इस कार्रवाई से जमनादास के बेटों को इतना दुख हुआ कि उन्होंने जमनादास के हज़ार समझाने, रोने और शोर मचाने पर भी कुछ ध्यान न दिया और इस हवेली को छोड़ कर किसी दूर मुहल्ले में एक किराये के मकान में जारहे, और यहां लाला जमनादास और उनकी नवी नुकेली बीवी ही रह गई, शहर भर में इस बात का बड़ा भारी चर्चा होगा और जितने मुंह उतनी ही बातें होने लगीं, कोई कहता था कि जमनादास ने अपनी नई बीवी के बहकाने से अपने बेटों को निकाल दिया है, दूसरा कोई जीभ चबा २ कर यह बात बनाता था के बुड्ढे की जोरू की बद-चलनी से घबड़ा कर उसके बेटे निकल भागे हैं, कोई विचार लगाता था कि जमनादास ने सारी उमर बेईमानी और धोखा फरेब में ही बिताई है, जुल्म और अन्याय से ही दौलत कमाई है; दगाबाजी और हीलासाज़ी से ही काम चलाया है और लोगों को लूट लूट कर ही अपना घर बनाया है, सैकड़ों और हजारों घरों का दिया बुझाकर ही अपना चिराग़ जलाया है और ग़रीबों के गले काट २ कर ही साहूकारा चलाया है और पचासों घरों का

सत्यानाश मिटाकर ही अपना ज़मींदारा बनाया है, पर यह पाप की नाव सदा नहीं तैरती रह सकती है? इस वास्ते अब तो यह ही मालूम होता है कि उसका यह सब भानुमती का सा तमाशा और बिजली काशा चमकारा खतम होकर उसका यह कारखाना रेते की दीवार की तरह एकदम बैठ जाने वाला है और अन्त में पापियों का जो हाल होता है उनकी ही तरह यह भी एक एक दाने को तरसता फिरने वाला है और कोढ़ी होकर और बदन में कीड़े पड़ कर नर्कों के महा त्रास भोगने वाला है, क्योंकि भगवान् के दर्बार में देर तो है पर अंधेर नहीं है, इस वास्ते जो जैसी करनी करेगा उसका फल भी एक न एक दिन अवश्य ही भोगेगा, इस पर दूसरा कहता था कि भाई तुमको खबर नहीं है, जमनादास ईश्वर का सच्चा भक्त है और अपने नियम धरम पर पूरी तरह कायम है इस वास्ते वह त्रास नहीं भोग सकता है बल्कि दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की ही करता चला जाता है, भाई साहब भगवान् अपने भक्तों की पूरी खबर लेता है और सब तरह उनकी रक्षा करता है, देखते नहीं हो कि आंधी जाय चाहे मेंह जाय पर जमनादास को दिन निकलते ही नहाना फिर मंदिरजी में जाना और दो तीन घंटे पूजा पाठ करके ही घर आना, और सर्दी हो चाहे गर्मी हो, दुख हो चाहे सुख हो पर उसको अपने नहाने धोने और नित्य की शुचि क्रिया से नहीं टलना, यह बातें खाली थोड़ा ही जाती हैं, भाई अगर ऐसों को भी दुख होने लगे तो फिर धरम ही दुनिया में कौन करे, रही व्यवहार की बात सो भाई कौन ऐसा है जो दो पैसे कमाने के वास्ते झूंठ फ़रेब नहीं करता है, यह तो गृहस्थी का काम ही है, इसमें पाप क्या और पुण्य क्या, ग़रज़ इस ही क़िस्म की अनेक बातें घर २ और दुकान २ होने लगीं और जमनादास की करतूतों के कभी २ के गड़े कोयले उछलने लगे।

अध्याय ६

जमनादास का पिछला हाल यह है कि गंगाराम उसका बाप बहुत ही ग़रीब आदमी था, वह दूकानदारों से रोज़ पंद्रह बीस रुपये का माल उधार ले जाता था और आस पास के गांवों में फिर कर बेच लाता था, इसमें पांच छे आने के पैसे उसको बच जाते थे जिससे वह अपने कुटुम्ब का गुज़ारा चलाता था, उसके कुटुम्ब में वह और उसकी जोरू, जमनादास और मथुरादास दो उसके बेटे और रामकली एक बेटी थी, मथुरादास को तो उसने तीन रुपये महीने पर एक दूकानदार के पास छोड़ रक्खा था और जमनादास को फेरी में अपने साथ ले जाया करता था, इस ही वास्ते जमनादास को झूंठ फ़रेब की खूब मश्क़ होगई थी और वह दग़ाबाज़ी और मक्कारी की घातों से अच्छी तरह वाक़िफ़ होगया था, लेकिन मथुरादास जिस दूकानदार के पास रहता था वह बेचारा बहुत ही सीधा सादा संतोषी, नेक और ईमानदार था इस वास्ते मथुरादास का भी ऐसा ही स्वभाव होता जाता था, जमनादास की उमर १८ वर्ष की और मथुरादास की १६ वर्ष की होगई थी पर अभी तक कहीं से भी इनकी सगाई आई नहीं थी, और न आने की कोई उम्मेद थी क्योंकि आजकल तो कङ्गाल से कङ्गाल भी अपनी बेटी के वास्ते लखपती का ही बेटा ढूंढता है और ग़रीबों के बेटों को कोई भी नहीं पूंछता है, रामकली भी १४ बरस की होगई थी और उसकी भी अभी तक कहीं सगाई नहीं हुई थी, क्योंकि गंगाराम यह ही चाहता था कि मैं अपनी यह बेटी ऐसे को ही ब्याहूं जो मेरे भी एक बेटे का कहीं विवाह करादे, परन्तु बहुत कुछ कोशिश करने पर भी उसका कहीं ऐसा बौंत नहीं बैठा था और कन्या के जवान होजाने के कारण अब वह बहुत ही सोच में रहता था, लाचार उसने श्रीभगवान की शरण ली और रोज सुबह ही

सुबह नहा धोकर और अपने दोनों बेटों को साथ लेकर श्रीमन्दिरजी में जाने लगा था और भगवान की मूर्त्ति के सामने खड़ा होकर बहुत ही गिड़गिड़ा २ कर कहने लगा था कि तुम तो तीन लोक के नाथ हो और सब कुछ सामर्थ रखते हो इस वास्ते मुझ आधीन की भी सुध लो और जिस तरह होसके मेरा वंश चला दो, इस तरह मन्दिर में जाते २ फिर वह पूजा सुनने के वास्ते भी वहां बैठने लगे और आहिस्ता २ खुद भी पूजा करने लगे, और फिर एक कोने में बैठकर नोकार मन्त्र की माला भी फिराने लगे, इस तरह आते जाते उनको छै महीने भी नहीं बीते थे कि धरमपुर के लाला रामानन्द की स्त्री का देहान्त होगया, उमर लाला की ५८ साल की थी, लखपती आदमी थे, बीसियों नगरों में दूकाने थीं पचासों कारिन्दे काम करते थे, और दर्वाजे पर हाथी झूमते थे, ग़रज़ धन की कुछ कमी नहीं थी, भाई भतीजों का परिवार भी बहुतेरा था पर मरे पीछे चूड़ियां फोड़ने वाली नहीं रही थी, इस ही वास्ते ब्याह की लौ लगी थी, आखिर किसी ने गङ्गाराम की लड़की की बात चलाई और उसको लाला साहब के योग्य बताई फिर क्या था तुरन्त ही कारिन्दे दौड़ पड़े और हाथों हाथ गङ्गाराम को लिवा लाये, लाला साहब का ठाट बाट और धन दौलत का चमत्कार देखकर गङ्गाराम के मुंह में पानी भर आया, आखिर ब्याह का कुल खर्च, तीन हजार रुपये नक़द और दोनों बेटों का ब्याह करा देने के वादे पर १४ वर्ष की रामकली का ब्याह ६० वर्ष के बुड्ढे रामानन्द से होगया, फिर रामानन्द की कोशिश से तीन ही महीने पीछे जमनादास का भी ब्याह होगया और मथुरादास के वास्ते भी सगाई पक्की होगई लेकिन मथुरादास इस कार्रवाई से बहुत नाराज था, वह रामकली को बुड्ढे रामानन्द से ब्याहना महा अन्याय और घोर पाप बल्कि कसाई से भी ज्यादा हिंसा का काम समझता था और अपनी बहिन के बदले में अपना ब्याह

कराना तो हर्गिज़ भी पसन्द नहीं करता था, इस वास्ते रामकली के विवाह से पहिले ही उसने अपने बाप को बहुत रोका, बहुत कुछ समझाया तड़पा और चिल्लाया लेकिन जमनादास ने बड़ी २ आशा बंधाकर और बड़े २ सब्ज़ बाग़ दिखाकर उसकी एक न चलने दी, तौ भी मथुरादास अपनी बात पर क़ायम रहा यानी न तो उसने तीन हजार नक़द में से कुछ लिया और न बहिन के बदले में अपना व्याह कराना ही मंजूर किया, बल्कि अपने घर आना भी छोड़ दिया और अपने मालिक की ज्यादा टहल करके उस ही के यहां रोटी खाने और रात को पड़ रहने का ब्योंत बना लिया।

जमनादास और रामकली के व्याह का सारा खर्च रामानन्द ने ही दिया था इस वास्ते व्याह होकर भी अब गङ्गाराम जमनादास के पास कोरे तीन हजार रुपये बच रहे थे जिनको देख कर वह अङ्ग में फूले नहीं समाते थे और अपने ऊपर श्रीवीतरागदेव की बड़ी भारी कृपा मानते थे, अब उनको पूरा श्रद्धान इस बात का होगया था कि हमारे मन्दिर में जाने और पूजा भक्ती करने के कारण ही हमारा यह काम बना है और हमारी लड़की को रामानन्द जैसा धनवान् वर मिला है इस वास्ते अब तो उन्होंने नित्य मन्दिर में जाने और पूजा करने की प्रतिज्ञा ही करली, एक मन्दिर में तो यह लोग पूजन किया करते और फिर बाकी सब मन्दिरों में दर्शन करके ही किसी काम पर लगा करते, फिर आहिस्ता २ उन्होंने रात का अनाज और अष्टमी चौदश की हरी भी छोड़ दी, कन्दमूल तो उनके चूल्हे तक पर चढ़ना बन्द होगया, रोज के खाने के लिये भी उन्होंने दस बीस ही हरी रख छोड़ीं अब वह हलवाई की दूकान का दूध मिठाई और कचौरी पूरी कुछ नहीं खाते थे, अङ्गरेजी दवाई और अत्तार के यहां का मुरब्बा शर्बत चटनी और अर्क कुछ नहीं लेते थे, हिन्दू के ही हाथ का दुहा दूध और हिन्दू के ही घर का घी खाने लगे थे, पानी अपने आप ही छान-

कर पीते थे और कहार को हाथ भी नहीं लगाने देते थे, फिर कुछ दिनों पीछे उन्होंने बिरादरी के जीमन ज्योंनार में यहां तक कि जिस रसोई में दस आदमियों से ज्यादा के वास्ते खाना बने उस रसोई में का खाना खाना भी छोड़ दिया था, ग़रज़ आहिस्ता २ यह दोनों बाप बेटा ऐसे धर्मात्मा होगये कि मन्दिरजी में भी इन की तारीफ़ होने लग गई और लोग इनको भगतजी के ही नाम से पुकारने लग गये, और कहने लग गये कि साहब मन्दिरजी का उपकार तो इन्हीं की बदौलत होरहा है, नहीं तो यहां तो तीन २ दिन भी पूजा परछाल नहीं होती थी, धन्य है साहब इनको जो धर्म में ऐसी लौ लगाई है और अपना अगन्त सुधारने की ठहराई है फिर गङ्गाराम से कहते कि क्योंजी तुम अपने छोटे बेटे को नहीं समझाते हो जो दर्शन करने भी नहीं आता है और आठैं चौदश को भी हरी खाजाता है, दूसरा कहता कि तुम हरी की कहते हो मैंने उसको कन्दमूल तक खाते देखा है, इस पर तीसरा कहता है कि इसमें इनका क्या कसूर है यह तो इस ही कारण उसको घर में भी नहीं घुसने देते हैं और उससे बात तक करने के रवादार नहीं हैं, इस पर सब लोग कहने लगते कि धन्य है साहब इनको कैसी धर्म की कमाई कर रहे हैं आगे को इन्हीं के काम आवेगी, इस पर कोई कहने लगता कि आगे को क्या, अभी देख लेना कि दिन २ कैसी वृद्धी होती चली जारही है और उधर उस मथुरादास को देखो जो दूसरों के टुकड़े चुगता है और पांच २ चार २ रुपये की नौकरी करता फिरता है, मन्दिरजी में जब कभी भी शास्त्र होता था तो यह दोनों ज़रूर जाते थे और शास्त्र का कथन सुनकर बड़ी श्रद्धा के साथ वाह २ कह कर शिर हिलाते थे मगर अफ़सोस है कि तब कथनी का एक अक्षर भी नहीं समझ पाते थे और न समझना ही चाहते थे बल्कि जो शास्त्र में लिखा है वह ही सत्य है ऐसा अटल श्रद्धान रखना ही काफ़ी मानते थे और अपने को सब से बढ़िया

धर्मात्मा और ऊँचे दर्जे का संयमी समझकर अभिमान में तुले जाते थे और किसी को भी ख्याल में नहीं लाते थे।

आस पास के गांवों में कई साल तक सौदा बेचते रहने के कारण इनकी जान पहिचान बहुत से चोरों उचक्कों और गठ कतरों से होगई थी इस वास्ते अब इन्होंने यह ही व्यापार शुरू कर दिया था कि चोरी का माल बहुत ही सस्ते दाम पर लेलेते थे और फिर ठीक दाम पर बेच देते थे, सोने चांदी के माल को तो यह लोग तुरन्त ही सुनार की मारफत गलवा डालते थे, ज़री के कपड़ों और गोरे ठप्पे को फूंक देते थे और शाल दुशालों को दूसरी रंगत में रंगवा लेते थे, इसके अलावा लाला रामानन्द जैसे महान् सेठ के साले ससुरे होने के कारण लोगों को यह ही ख़याल होता था कि यह सब माल वहीं से लूट २ कर लाते हैं और वास्तव में वह बहुत कुछ माल वहां से भी लाते ही रहते थे इस वास्ते चोरी का बहुत कम शुबह होता था और सब कोई इनके पास से बेखटके माल ख़रीद लेता था, तो भी इनकी जान सदा जोखम में ही फँसी रहती थी और इनको हर वक्त पुलिस का ही खटका लगा रहता था इस वास्ते पुलिस के लोगों को भी बहुत कुछ चटाना पड़ता था इस पर भी इनको बहुत कुछ मुनाफ़ा रह जाता था, श्रीजिनेन्द्रदेव का इनको पूरा २ भरोसा था इस वास्ते सदा उन्हीं का नाम जपते रहते थे और बेखटके काम करते थे, यह लोग नित्य सुबह उठकर भक्तामर स्तोत्र गा लेते थे और दिन भर के लिये बिल्कुल ही निर्भय होजाते थे, और अगर कोई ज्यादा ही फ़िकर आपड़ता था तो सिद्धचक्र की पूजा करते थे या तेरह द्वीप का पाठ थपवाते थे, संकटहरण विनती पढ़ने लग जाते थे और अपना कारज सिद्ध करलेजाते थे, कभी श्री चांदनपुर वा अन्य अतिशय क्षेत्रों की बोल क़बूलत भी बोल देते थे और कारज होजाने पर छत्र चँवर चढ़ाते और घी का चिराग़ जला आते थे, इनके अलावा पीर पैग़म्बर

चंडी मुन्डी भैरों काली आदि हिन्दू मुसलमानों के भी सब ही देवताओं को मनाते थे, मुसलमान मौलवियों और स्यानों चट्टों से गंडे तावीज़ भी बनवाते थे और जादू टोना और जंत्र मंत्र भी बहुत कुछ कराते रहते थे, खैरात भी बहुत कुछ निकालते थे और किसी भी भेषधारी फ़कीर को अपने दर से खाली नहीं जाने देते थे, ब्राह्मणों से जाप भी कराते थे मुसल्ली भी जिमाते थे शहीदों की क़बरों पर चूरी भी चढ़ाते थे और मसजिदों की तेल बत्ती के लिये पैसे भी दिलाते थे इस वास्ते सब ही लोग इनका जस गाते थे और इनको पूरा पूरा धर्मात्मा बताते थे।

अध्याय ७

ब्याह के तीन साल पीछे बुड्ढे रामानन्द का देहान्त होगया और बेचारी १७ वर्ष की बालिका रामकली विधवा होगई, रामानन्द और उसके दो छोटे भाइयों दौलतराम और शुगनचन्द्र का सब कारखाना और खाना पीना इकट्ठा ही था, और रामानन्द के बाद भी उन्होंने इकट्ठा ही रहना चाहा लेकिन रामकली को यह बात किसी तरह भी मंज़ूर न हुई उसने तो अलग होजाने की ही ठान ली और एक तिहाई माल बांट कर दे देने के लिये ज़िद करने लगी और जब बहुत कुछ समझाने पर भी वह न मानी तो लाचार वह लोग इस बात पर भी राज़ी होगये कि कारखाना तो इकट्ठा ही रहे और वह आमदनी का एक तिहाई हिस्सा लेती रहे और अलग रहकर उसको जिस तरह चाहे खर्च करती रहे, लेकिन जमनादास को यह बात किसी तरह भी पसन्द न आई और उसने अपनी बहिन को खूब ही ताल पट्टी पढ़ाई और मुकदमा लड़ाने की ही बात सुझाई आखिर लाचार होकर उन लोगों ने यह भी कहा कि हम सारे कारखाने का एक तिहाई हिस्सा भी उसके

नाम कर दें अगर वह यह इक़रारनामा लिख दे कि सिवाय हमारे ख़ानदान वालों के और किसी को गोद नहीं लेगी और इस अपने हिस्से को वर्बाद भी नहीं करेगी, लेकिन इस बात ने तो और भी ज्यादा आग लगा दी और चालाक लोगों ने फूंक मार मार कर उस आग को वहुत ही ज्यादा सुलगा दी, इस वास्ते यह मामला घर को घर में ही न सुलझने पाया बल्कि स्वार्थी लोगों ने इनको अदालत में ही पहुंचाया, रामानन्द की पहिली बीवी ने ४०-४२ बरस तक जो कुछ जमा जोड़ी थी और हजार तर्कीब से जो कुछ अशरफ़ियां बटोरी थीं वह सब रामकली के ही हाथ आई थीं, और इन तीस वर्षों के बीच में उसने भी उनमें मिलाई थीं, इस तरह एक लाख रुपये का नक़द माल और पचास हजार रुपये का जेवर रामकली के हाथ में था जिससे उसकी आंखें फूल रही थीं और वह बार बार यह ही कहती थी कि सोने चांदी का तयार बना दूंगी और इस घर की ईंट से ईंट बजा दूंगी, सब धन लुटा दूंगी पर किसी के आधीन होकर न रहने पाऊंगी, फिर क्या था मक्कार और चालबाज़ लोगों ने उसको टिकटिकी पर चढ़ाया, जमनादास के मुंह में भी पानी भर आया, लड़ाई का अखाड़ा जमाया, बड़े २ वकील वैरिस्टरों को बुलाया, झूठ और फ़रेब का हवाई महल बनाया और मुक़द्दमा हाकिम के सामने आया हाकिम ने भी यह सवाल उठाया कि क्या इस सारे कारख़ाने में रामानन्द के भाइयों का कुछ भी हक़ नहीं है और वह अपने भाइयों से अलग ही रहता था और यह सब कारख़ाना उस ही ने पैदा किया था, और क्या तीनों भाइयों का सब कारोबार और खाना पीना इकट्ठा था और क्या इस कारण रामानन्द की बेवा को सिवाय रोटी कपड़े के और कुछ भी नहीं मिल सकता है और क्या सरावगियों में इस मामले में हिन्दुओं से अलग कोई और ही कानून या रिवाज है, ग़रज़ इस ही किस्म की अनेक बहस अदालत में उठी जिसके वास्ते दोनों

ही तरफ़ से सोने चांदी का जाल बिछाया गया और इलाके भर के लोगों को गवाह बनाया गया, गवाहों ने भी गिर्गट कैसे खूब ही रंग बदले और कभी इधर और कभी उधर या जाहिर में इधर और असल में उधर इस प्रकार के बहुत ही खेल दिखाये और दोनों तरफ़ वालों को खूब ही झिकाये, दोनों तरफ़ से भी शतरंज की सी बढ़िया चालें चलनी शुरू हुईं, जालसाज़ी और झूंठ का बाज़ार गरम हुआ, धरती को आकाश और आकाश को धरती बनाने का फ़िकर हुआ, चौधरी चुकड़ायत, तिलकधारी पंडित और विद्वान्, भगत और पुजारी, सेठ और साहूकार ग़रज़ सब ही इस काम में लगे, हिन्दू मुसलमानों और जैनियों का ईमान तोला गया, बड़े २ साखदारों का बहीखाता टटोला गया मगर कोई भी ऐसा न निकला जिसने सच को निबाहा हो और अपने ईमान को बचाया हो, बल्कि जो जिस तरफ़ खड़ा था वह उधर का ही गीत गाता था और दिन को रात और रात को दिन बताता था।

रामकली की तरफ जमनादास ही मुख्य पैरोकार था मगर वह बड़े घरों की बातों को और ऐसे मुक़द्दमों की घातों को क्या जानता था, इस वास्ते कारिंदों ने उसको खूब ही उल्लू बनाया और अपने चक्कर पर चढ़ाया, उन्होंने अपना तो घर भरा और नाम उसका धरा, तौ भी जमनादास अपने मतलब को नहीं भूला और लूट मार करने से नहीं चूका, इस एक ही मुक़द्दमे में अगर्चि रामकली की सारी नक़दी और ज़ेवर खर्च होगया और एक छल्ला भी उसके पास बाक़ी नहीं रहा लेकिन लोग तो यह ही कहते हैं कि इस में से पूरे पचास हज़ार रुपये जमनादास के हाथ आये पर असल बात यह है कि वह अठारह हजार रुपये से ज्यादा नहीं उड़ा सका, कुछ हो जमनादास के वास्ते इतने भी बहुतेरे हैं, इसके अलावा मुक़द्दमेबाज़ी की चालें जो सीखने में आई और इलाके भर के छोटे बड़े हाकिमों और सेठ साहूकारों से मेल मुलाक़ात

करने और सब तरह से खुल जाने का जो लाभ हुआ वह रहा अलहदा, इसके अलावा सब से बड़ा लाभ जमनादास को यह हुआ कि वह बहुत बढ़िया धर्मात्मा बन गया क्योंकि बेवा होजाने के पीछे रामकली ने भी पूरी तरह से नियम धरम पालना शुरू करदिया था और मिसरीलाल पंडित जो मंदिर में पूजा करने केलिये सात रुपये महीने पर नौकर था वह चार रुपया महीना लेकर रामकली को पढ़ाने के वास्ते आने लगा था, और उसको सूत्रजी और भक्तामर कंठ कराया करता था, उस पंडित के सिखाने के मूजिब रामकली बहुत कुछ नियम धरम पालने लग गई थी और पूरी पूरी धर्मात्मा बन गई थी, और उसको देख कर जमनादास भी वैसी ही वैसी क्रिया करने लग गया था, खाते समय नहीं बोलना, झूंठ नहीं छोड़ना, चौके में बैठे २ ही कुल्ली करना, कचौरी पूरी और मेवा मिठाई भी चौके में ही बैठ कर खाना, अनाज निरख चुगकर और धो पोंछ कर ही पिसवाना, चक्की धोकर हिन्दू के हाथ का दिन का पिसा हुआ आटा ही खाना, इस ही तरह दाल दलवाना, पेशाब करते समय भी पानी ले जाना और टट्टी होकर जरूर नहाना, इस ही प्रकार के और भी बहुत से नियम उसने ले लिये थे, इसके अलावा उसने भी सूत्रजी कंठ कर लिया था जिसका पाठ वह नित्य सुबह ही करके एक उपवास का फल प्राप्त कर लिया करता था, इस ही प्रकार की और भी बहुत सी धर्म क्रियायें उसने सीखली थीं और उन सबको पूरी पूरी श्रद्धा भक्ती के साथ करने लग गया था, इतवार को नमक; सोमवार को मिठाई, मंगल को खटाई, इस प्रकार एक एक दिन एक एक रस का भी परित्याग कर दिया था, परिग्रह का भी प्रमाण कर लिया था, हिन्दुस्तान से बाहर न जाने की प्रतिज्ञा करके दिग्व्रत भी धारण कर लिया था और आठैं चौदश को एक वक्त का उपवास भी करने लग गया था।

यह मुक़द्दमा पांच बरस तक लड़ा था और जमनादास ही इसका पैरोकार था इस वास्ते उसको इस बीच में बहुत करके यहीं रहना पड़ा था, लेकिन रामकली उसकी छोटी बहिन थी जिसके यहां का तो उसको पानी तक पीने से इनकार था, इस लिये जमनादास के वास्ते अलग रसोई बनती थी जिसका इन्तजाम भी सब कुछ रामकली ही करती थीं, जमनादास को जिस २ हरी सब्ज़ी का त्याग नहीं था वह सब कहीं न कहीं से तलाश करा कर नित्य मँगाई जाती थी अपने शहर में नहीं मिले तो बाहिर से लाई जाती थी, इसके अलावा दुनियां भर की सब प्रकार की भाजियां सुखा कर रखी जाती थीं और रसोई में नित्य दसों ही प्रकार की बनाई जाती थीं, अनेक प्रकार के मीठे और नमकीन चावल, अनेक प्रकार की खिचड़ी, अनेक प्रकार की खीर और अनेक प्रकार की दाल, बुगोरी, और कढ़ी आदिक तय्यार होती थीं; घर के सुखाये हुए आम इमली आलूबुख़ारा और किष्टे आदिक खटाई से और किशमिश छुवारा आदिक सूखे मेवों से अनेक प्रकार की चाट चटनी और मुरब्बे बनाये जाते थे और जिस दिन दाल की कोई चीज़ न खानी हो उस दिन घर की जमाई हुई दही से भी अनेक प्रकार के रायते तय्यार होते थे, सादी, बेढ़मी, बेसनी, खस्ता आदिक अनेक प्रकार की रोटियां तय्यार होती थीं और क़िस्म २ की भले पकौड़ियां बनाई जाती थीं, इन सब चीजों के बनवाने से रामकली का यह मतलब नहीं होता था कि जमनादास इन सब ही चीजों को खावे बल्कि नित्य सब ही चीजें तय्यार होती रहैं और भाई साहब को जिस दिन जिन जिन चीज़ों की रुचि हो उस दिन इनमें से वह ही खाते रहें इस ही प्रकार दो पहर के वास्ते भी वह घर की बनाई हुई खांड से अनेक प्रकार की मिठाई और लौज़ात बनवाती थी, घर पर ही अनेक प्रकार का चबैना भुनवाती थीं, तरह २ की नमकीन

और चाह तय्यार करवाती थी और जमनादास के खाने के वास्ते अलग रखवाती थी, और फिर शाम को इससे भी बढ़िया प्रबन्ध कराती थी और सत्तर प्रकार का भोजन खिलवाती थी, लगातार पांच बरस तक इस ही प्रकार का खाना मिलने से जमनादास मज़ेदार खानों का बहुत बड़ा लम्पटी होगया था यहां तक कि अब उससे मामूली खाना खाया भी नहीं जाता था, मुक़दमा ख़तम होने के पीछे अब उसके घर पर भी दिन भर उसके खाने का ही काम होता रहता था और सारे घर भर को इस ही में लगा रहना पड़ता था, बल्कि खुद जमनादास भी रात दिन खाने की ही चीजों के मँगाने में जुटा रहता था और बहुत कुछ फिकर उठाता था तब भी कभी उसकी मर्जी के मुताबिक़ खाना मिल जाता था नित्य तो वह रामकली के यहां के खाने को याद करके मन मसोस कर ही रह जाता था, और यह थोड़ा बहुत भी उसको उस वक्त तक ही मिलता रहा था जब तक कि उसकी पहिली बीबी जिन्दा रही थी, उसके मरने के बाद भागवन्ती के आने पर तो उसको टुकड़ों का भी सांसा होगया था और पेट भरना भी मुश्किल पड़ गया था।

इस पांच बरस के बीच में जमनादास को मुक़द्दमे की पैरवी में बाहर भी बहुत कुछ फिरना पड़ा था, इस वास्ते रामकली ने एक ऐसा आदमी उसके साथ कर दिया था जो संयम के साथ सब प्रकार का भोजन बनाता रहे और जमनादास को किसी प्रकार की दिक़्क़त न होने दे, वह आदमी अनेक प्रकार की सामिग्री और अनेक प्रकार का तय्यार भोजन साथ रखता था और जहां मौका मिलता था वहां ताजा भी तय्यार कर देता था, तो भी जहां कहीं जाना होता था वहां सब से पहिले जमनादास और उसके साथ के सब कारिन्दों और नौकरों को जमनादास के भोजन की सामिग्री जुटाने का ही बड़ा भारी फ़िकर पड़ता था और सब आदमी पूरी २ भाग दौड़ करके चौगुना पचगुना पैसा ख़र्च करके

और जो वस्तु मोल से न मिलती हो उसको लोगों से मांग तांग करके जब उसके भोजन का सब प्रबन्ध बँध जाता था तब ही उन लोगों को मुकदमे की पैरवी करनी सूझती थी, अकसर तो जहां कहीं भी जमनादास जाता था वहां के बड़े २ लोग लाला रामानन्दजी की वजह से खाने का न्यौता देने आते थे परन्तु जमनादास बड़े अभिमान के साथ उनको यह कहकर ही टाल देता था कि मेरे खाने की क्रिया बहुत कड़ी है जो दूसरी जगह किसी तरह भी नहीं बन सकती है, और अगर कोई बहुत ही ज्यादा ज़िद करता था तो जमनादास का आदमी ही उसके यहां जाकर भोजन बनाता था और शुचि क्रिया में उनकी नाक में दम ला देता था ऐसी बातों से जमनादास परदेश में भी सब जगह भगतजी ही मशहूर होजाता था और बड़ी भारी क़द्र पाता था, बाहर जाकर जमनादास का यह भी तरीका था कि वह नहा धोकर सुबह से ही मन्दिरजी में जाता और वहां बैठकर बड़े ध्यान के साथ माला जपता स्तोत्र पढ़ता और बड़ी भक्ती के साथ पूजा करता, जिसमें घण्टों लग जाते थे इस वास्ते उसके साथ के आदमी बार २ बुलाने आते थे, बहुत कुछ ज़रूरत जिताते थे, लेकिन जमनादास का यह ही जवाब होता था कि चाहे कुछ ही हरज होता हो पर मैं तो अपना नित्य नियम पूरा किये बिदून यहां से नहीं हिलूंगा और न तुम्हारी एक भी बात सुनूंगा, जमनादास की इन बातों से वहां के लोगों को उसको बड़ी श्रद्धा होजाती थी और उन लोगों की निगाह में वह धर्म की साक्षात् मूर्त्ति ही नज़र आने लग जाता था।

इस पांच बरस के बीच में जमनादास को दूर २ देश के त्यागियों पण्डितों और धर्मात्माओं से बहुत कुछ काम पड़ा था और इस मुकद्दमे में जैन शास्त्रों की व्यवस्था दिलवाने और अपने अनुसार रिवाज साबित कराने के लिये उनसे हर तरह खुल जाना हुआ था इस वास्ते उसको खूब जानकारी इस बात की होगई थी, कि

किस तरह बहुत से पण्डित और त्यागी लोग बाहर का ढौंग बनाते हैं, घर पर किस प्रकार बिताते हैं और लोगों के सामने किस तरह बदल जाते हैं, क्या २ रूप बनाते हैं, कैसी २ क्रिया दिखाते हैं और किस प्रकार अपने स्वांग को निबाहते हैं, जमनादास को अगर्चि सच्चे और सीधे धर्मात्मा भी मिले लेकिन उसको ढौंगियों का ही ढौंग पसन्द आया इस वास्ते अब उसने भी बड़ा २ पाखण्ड बनाना शुरू कर दिया था और ऐसी ऊंचे दर्जे की क्रिया दिखाने लग गया था कि लोग चकित होजाते थे और गृहस्थ रहने पर भी उसको बढ़िया त्यागी ही मानने लग जाते थे।

अध्याय ८

रामकली का यह मुक़दमा बहुत बड़ी हैसियत का मुक़दमा था जिसमें दोनों तरफ़ से लाखों रुपये का धुआं होगया था इस वास्ते इस मुक़द्दमें की पैरवी में जमनादास को अङ्गरेज़ और हिन्दुस्तानी, छोटे और बड़े सब ही तरह के हाकिमों से मिलने का इत्तिफ़ाक हुआ और हाकिमों को डाली देने, उनसे काम निकालने और रिश्वत लेनेवालों को रिश्वत देने के भी ढङ्ग मालूम हुए, इस वास्ते मुक़द्में के पीछे भी अब वह सब क़िस्म के हाकिमों से मिलता रहता था, खूब डालियां झुकाता था रिश्वत लेने वालों का दल्लाल बन जाता था, कुछ उन्हें देता था और कुछ आप खाता था जो हाकिम रिश्वत नहीं लेते थे उनके नाम से भी रक़में हज़म कर जाता था और अनेक बातें बनाकर उनसे भी बेईमानियें कराता था और सैकड़ों के गले कटवाता था, झूंठी सच्ची चुग़लियें खाकर लोगों पर टैक्स बढ़वाता था और पुलिस की तरफ़ से झूंठी गवाहियें देकर लोगों को कैद कराता था और इस तरह सर्कार का खैरख्वाह बन जाता था, इस प्रकार सारा ही इलाक़ा उससे

कांपता था और उसको अनेक प्रकार का जुल्म करने का मौका मिल जाता था।

इस मुक़दमें की पैरवी में उसको अनेक जगह के रईसों सेठों साहूकारों और वकील बैरिस्टरों से मिलने और कई २ दिन उनके साथ रहने का भी मौका पड़ा था, जिनमें से बहुत से ऐसे भी थे जिनका रोजमर्रा का दिल बहलावा शराब कबाब और रण्डी भड़वों से ही हुआ करता था इस कारण जमनादास को भी उनके यह सब खेल देखने पड़ते थे, वह उनके अयोग्य खाने पीने को देखकर तो दिल ही दिल में बहुत कुछ कुढ़ा करता था और नाक भौं सिकोड़ कर उनको सीधा नर्कगामी ही निश्चय कर लेता था लेकिन रण्डियों के गाने की तान उनका हँसी मज़ाक़ और आनबान उसको भी पसन्द आजाती थी इस वास्ते सौ बहाने बनाकर वह भी वहीं जा डटता था और उसकी आंखों के सामने कुछ ही होता रहे लेकिन वह वहां से नहीं हटता था, वह लोग भी उसको अपना सा समझ लेते थे और अपने पास ही जगह देते थे जमनादास भी उनसे बिल्कुल ही खुल जाता था और वेश्या सेवन में हर तरह उनके शामिल हाल होजाता था, लेकिन यह सब कुछ होने पर भी वह अपने नियम धर्म को ज़रा भी नहीं तोड़ता था और उनके खाने पीने की किसी चीज़ को हाथ तक भी नहीं लगाता था और अपनी शुचि क्रिया का यहां तक ख़याल जिताता था कि वेश्या के शरीर से छूजाने के कारण अपने सब कपड़े सुबह को ही अलग निकाल देता था और अपने शरीर को भी खूब मल मल कर धोता था और अच्छी तरह शुद्ध और पवित्र होकर ही मन्दिरजी में जाता था।

इस प्रकार इस मुक़दमे के कारण इन शौकीन लोगों की मुलाक़ात का यह असर जमनादास पर हुवा कि वह अव्वल दर्जे का व्यभिचारी होगया, बेशक रंडीबाज़ी आदि कामों का तो उसको

ऐसे ही अमीरों के मकान पर जाने से मिलता था लेकिन अपने घर पर रहते हुए तो उसको परस्त्री सेवन की इतनी ज्यादा धत होगई थी कि अपने बेटी के विधवा बहू तक से मिल जाने का कलंक भी उसने अपने माथे पर लगा लिया था, उसकी पहिली स्त्री ने उसके सब कुकर्म सहे पर यह कलंक उससे भी नहीं सहा गया था, वह बेचारी जी ही जो में घुलती थी और आखिर को इस ही सोच में अपनी जान भी गँवा बैठी थी, रंडियों की बाबत भी यह बात थी कि जमनादास अमीरों की तरह अपने शौक के लिये जिस दिन चाहा उस ही दिन तो रंडियों का मुजरा नहीं करा बैठता था लेकिन पुत्र के जन्म में, सगाई में, व्याह में, छटी में, टेवे, में और इस ही किस्म और भी अनेक रीति रस्मों में वह नाच कराये विदून किसी तरह भी नहीं चूकता था, दूर दूर की रंडियां बुलाता था और खूब ही ठाठ जमाता था, इसके अलावा शहर भर में भी जिस किसी के यहां नाच हो वहां उड़ कर जाता था और आखिर वक्त तक डटा रहता था, व्याह शादी में रंडी का नाच बन्द कर देने की चर्चा कई वार विरादरी के लोगों में उठी और बहुत लोग मान भी गये लेकिन लाला जमनादास ने सौ सौ बातें बनाईं, नये छोकरों को खूब ही सुनाई, कथा ग्रन्थों की साक्षी दिलाई, सतयुग की बातें बताईं और बड़ों की बांधी रस्म टूटने से बचाई।

लाला जमनादास की इस शौकीनी के कारण दस लाक्षणी पर्व और वार्षिक उत्सव के दिनों में श्रीमन्दिरजी में भी खूब रौनक होजाती थी क्योंकि वह कोशिश करके बाहर से स्वांगी के लौंडे बुला लिया करते थे और उनको दोचार जैनभजन भी सिखा दिया करते थे इन लौंडों के गाने से खूब प्रभावना होजाती थी और चाहे भजन गावें वा स्वांग पर इन लौंडों की बदौलत लखपती का तो बूढ़ा बच्चा मर्द औरत सब ही मन्दिर जी में आजाते

थे और जब तक इनका गाना रहता था टलाये से नहीं टलते थे, इन लौंडों के गाने की शहर भर में ऐसी धूम मचती थी कि अन्यमती भी जैन मन्दिर में खिंचे चले आते थे और धन्य धन्य ही कहते रह जाते थे, लाला जमनादास ने तो बिरादरी के लड़कों को उकसा कर एक जैन नाटक भी बनवाया था जिसमें सरावगियों के बीसियों बालक रंडियों के मिराशियों से नाचने गाने की शिक्षा पाते थे और मैनासुन्दरी का ऐसा बढ़िया नाटक खेलकर दिखाते थे, ऐसी चटक मटक और हावभाव बनाते थे कि दुनियां दंग रह जाती थी और जैन धर्म की बहुत ही ज्यादा प्रभावना हो जाती थी और खलकत वाह वाह ही करती चली जाती थी।

रामकली के मुक़द्दमें की पैरवी में जमनादास को जगह २ के सेठ साहूकारों से मिलने के कारण जवान जवान अमीर बच्चों की चाल ढाल, उनकी वज़ाक़ता, उनकी अक्ल तमीज़, समझ बूझ और उनकी सब तरह की ख्वाहिशों से पूरी पूरी जानकारी होगई थी और यह भी मालूम होगया था कि चालाक लोग किस तरह उनको काबू में लाते हैं, किस तरह उनको उल्लू बनाते हैं और लूट खसोट कर खुद अमीर बन जाते हैं, इस वास्ते मुक़द्दमे के पीछे अब वह भी ऐसे ही अमीर बच्चों की ओह में लगा रहता था और उनकी अच्छी तरह खातिर तवाज़ा करके उनके आगे पीछे फिरके, चाट पानी खिलाकर और बढ़िया २ शराब पिलवा कर, उनकी खूब बड़ाई गाकर और बातों ही बातों में उनको आसमान पर चढ़ाकर उनको क़ाबू में लाता था और सौ सौ दो दो सौ रुपये क़र्ज़ देकर हजारों के रुक्के लिखवाता था और काबू लगे तो कोरे कागज़ों पर ही अँगूठे लगवा लेता था और फिर जो चाहे दस्तावेज़ बना लेता था और यों उन्हें बर्बाद करके अपना घर बनाता था और कुछ उनके साथियों को भी चटा देता था।

पांच बरस तक अमीरों की संगत में रहने से जमनादास खुद भी

बहुत ज्यादा फ़जूल खर्च होगया था, चुनाचि मुकद्दमे के पीछे उसने भी खूब अमीरी ठाठ बनाये, कोठी कमरे सजाये, फ़रश बिछाये, गद्दी तकिये लगाये, पंखे खिचवाये, झाड़ फ़ानूस लटकाये, नौकर चाकर बुलवाये और बग्गी घोड़े चलाये, अब जमनादास के यहां खाने में पीने में लेने में देने में चन्दे में चिट्ठे में डांड में बाच में घर में बाहर में सगे में संत में, ग़रज़ हर काम में हैसियत से ज्यादा ही उठता था और आमदनी से ज़्यादा ही खर्च होजाता था, हररोज़ दोचार मिहमान भी उसके मकान पर आते ही रहते थे जिनकी खातिर तवाज़े में वह खूब ही उदारता दिखाता था और अपनी साहूकारी का सिक्का जमाता था, इसके अलावा मरने जीने और व्याह सादी के खर्चों में भी अब वह अमीरों का ही मुकाबिला करता था और रुपये को मिट्टी का ठीकरा समझने लग जाता था, कई बार उसने उत्सव भी कराया और आधसेर का लड्डू बांट कर मुल्कों मुल्कों में यश कमाया, सर्वतीर्थों की यात्रा भी उसने दोबार करी जिसमें यात्रा के बीच में भी लड्डू बांटा और घर पर आकर भी खूब ठस्से की ज्यौनार करी, ग़रज़ बहिन भानजी को लूट कर, सब प्रकार की बेईमानी और मक्र फ़रेब से कमाकर सैकड़ों के गले काट कर और हजारों के घर बर्बाद करके जो कुछ इकट्ठा करता था वह सब इन ही खर्चों में निकल जाता था बलिक सच पूछो तो वह उलटा करज़दार ही होजाता था जिसका हाल साल भर का चिट्ठा बंधने पर ही खुलता था, लेकिन दुनिया में हवा बँध गई थी, दिसावर से माल उधार मिल जाता था, हुण्डी पर्चा भी सिकर जाता था, करज भी आसानी से मिल जाता था, कोई २ धरोवर भी धर जाता था इस वास्ते काम चल रहा था और पानी का बुलबुला बँध रहा था, जमनादास को अपने इस हाल की बड़ी सोच थी लेकिन वह अपनी आदत से लाचार होगया था और खर्च को घटा कर अपनी हैसियत को कम कर दिखाना अब उसके लिये असम्भवसा ही

घन गया था इस वास्ते वह हर वक्त इस ही ताक में रहता था कि कोई बढ़िया दाव लगे और कहीं से खूब गहरा माल मिले तब यह घाटा पूरा हो और क़रज़ सिर से उतरे लेकिन कहीं से ओपरा माल मिल जाने पर और कोई गहरा गप्फा लग जाने पर वह और भी ज्यादा फ़जूल खर्च होजाता था और पहिले भी से ज्यादा ठाठ बढ़ा लेता था इस वास्ते वह तो सदा क़रज़दार ही बना रहता था और हमेशा दिवाला निकलजाने का ही भय रहता था।

अध्याय ९

पाठकगण ! आप अपने मन में ज़रूर कहते होंगे कि इस मुक़द्दमे की पैरवी से जमनादास को जो कुछ हानि लाभ हुआ वह तो सब कुछ कह सुनाया लेकिन अब तक यह न बताया कि मुकद्दमे में क्या हुआ, असल बात यह है कि हम मुकद्दमे के नतीजे को सुनाते हुए डरते हैं क्योंकि अव्वल तो एक बाल विधवा का मामला है, जिसका जेवर तक बिक कर इस मुकद्दमे में लग चुका है और अब जिसके पास एक छल्ला तक बाक़ी नहीं रहा है, दूसरे लाला जमनादास ने इस मुक़द्दमे के फ़तह होने के वास्ते श्रीवीतराग भगवान से जो जो अर्दास करी थी, पूजा करते, माला जपते, सूत्रजी के पाठ करते और सामायक पाठ पढ़ते हुए मन ही मन में वह जिस प्रकार श्रीजिनेन्द्रदेव से प्रार्थना किया करता था और गिड़गिड़ा २ कर कहा करता था कि हे भगवान ! इस बेचारी मुसीबत की मारी बाल विधवा की तरफ़ ध्यानकर जिससे इसकी भी बात बनी रहे और मेरी भी और हे भगवान ! इस विधवा ने क्या शिर पर धर कर लेजाना है, यह तो सब हमारे ही काम आना है, हम आपके भगत हैं, हम आपके चरणों के दास हैं, आपकी शरणागत हैं इस वास्ते और कुछ नहीं तो हमारी ही तरफ़ ध्यान करो, हम

भी क़बीलदार हैं, वाल बच्चे वाले हैं इस ही मुक़दमे पर हमारा भी आधार है, इस ही के जीतने में हमारा भी बेड़ा पार है. तुम तो तिरलोकी के नाथ हो और अपने भगतों के साथ हो, तुम्हारे दर्बार में तो किसी भी बात की कमी नहीं है, तुम तो पल की पल में जो चाहे कर सकते हो, राजा को रङ्क और रङ्क को राजा बना सकते हो, इस मुक़दमे के जीतने पर तो हम तुम्हारा मन्दिर बनवायेंगे, पूजा प्रतिष्ठा करवायेंगे, सब तीर्थों पर जाकर चँवर छतर चढ़ायेंगे, रामकली नहीं मानेगी तो हम खुद ही कर दिखायेंगे, ग़रज़ इस मुक़दमे के जीतने में हमारा भी काम सिद्ध होता है और आपका भी इस वास्ते चाहे जिस तरह पर भी हो पर हे भगवान ! यह मुक़दमा तो जितवा कर ही देना पड़ेगा, क्या तू अपने भगतों का भी कहना नहीं सुनेगा ।

गरज़ रात दिन जमनादास इस किस्म की ही प्रार्थना करता रहता था, इसके इलावा कभी सिद्धचक्र की, कभी इन्द्रध्वज की कभी अढ़ाई द्वीप और कभी तीन चौबीसी की पूजा भी कराता रहता था, जैन धर्म के मन्त्रों जन्त्रों के जानने वाले पण्डितों भट्टारिकों और ब्रह्मचारियों से अनेक प्रकार के जन्त्र मन्त्र लिखवाकर लाता था और जैन पुजारियों से उनकी सिद्धी कराता था खुद भी करता था और अपनी बहिन को भी साथ में लगाता था, पद्मावती और क्षेत्रपाल आदि अनेक देवी देवताओं को मनाता था, अग्नि जल वायु आदि देवताओं को बुलाता था, सूरज चांद आदि ग्रहों को अर्घ चढ़ाता था और उन सब से मुक़दमे की जीत की प्रार्थना किया करता था, अनेक जैन तीर्थों की भी क़बूलियत उसने बोल रखी थी, कहीं मकान बनवा देने का, कहीं सिखर बनवा देने का, कहीं कलश चढ़ा देने का और कहीं रथ गढ़वा देने का वचन दे रखा था, इसके अलावा शिवाले पर ब्राह्मण लोग अलग जप करते थे मंत्र वादी अलहदा मंत्र पढ़ते थे, मुल्ला लोग मस्जिदों में दुआयें मांगते थे,

गंडे तावीज़ बनाते थे, क़बरों पर चूरी चढ़ाते थे, जुमें के रोज़ मुसल्ली जिमाते थे, चंडी मुंडी काली भैरों आदि देवी देवताओं को भी मना रखा था लेकिन शराब की बोतल और बकरा अपने हाथ से चढ़ाने से घबराता था इस वास्ते पुजारियों को नक़द दाम भुगता देता था कि वह ख़ुशी से ख़ुद ही अपने २ देवता का भोग लगावें और सब के सामने नांव न आवें।

गरज़ जमनादास ने सब ही धर्म के देवी देवताओं को मनाया था, और चारों तरफ़ मंत्रों का पहरा बैठाया था, बड़े २ तावीज़ बांध कर कचहरी में जाता था, हाकिमों पर मंत्र चलाता था कचहरी में खड़ा खड़ा बुड़बुड़ाता था, उसने रामकली के देवरों पर मूठ भी चलवाई पर अफ़सोस है कि कोई भी तदबीर काम न आई और बनी बनाई बात भी गंवाई, यानी अदालत ने रामानन्द और उसके भाइयों को सारे कारख़ाने का साझीदार ठहराया और उन तीनों का इकट्ठा ही खान पान और इकट्ठा ही रहन सहन लिख करके रामानन्द के भाइयों को ही सारे कारख़ाने का मालिक बनाया और रामकली के रहने के वास्ते एक छोटा सा मकान दे देने और उसके रोटी कपड़े के वास्ते पचास रुपया महीना देते रहने का हुक्म लगाया, इस सख़्त फ़ैसले को सुनकर जमनादास के तो पैरों तले से धरती निकल गई और वह चक्कर खाकर धड़ाम से नीचे गिर पड़ा, लोगों ने बड़ी मुश्किल से उसको उठाया लखलखा सुंघाया, मुंह पर पानी के छींटे दिये, घंटों पंखा किया तब कुछ होश ठिकाने आया और जब रामकली ने यह हुक्म सुना तो वह तो पीट २ कर नीली होगई, उसने अपने देवरों को खूब ही दिल खोलकर कोसा और हाथ पसार २ कर कहा कि हे भगवन ! हे तिलोकी के नाथ ! तूने मुझ दुखिया की तो कुछ न सुनी पर अब भी जो तेरे में कुछ सत है तो उनके सारे पूत मर जावें, उनकी सारी बहुएं रांड होजावें,

यह सब कोढ़ी होजावें और कीड़े पड़ २ मरजावें, इन नाशगयों की अर्थी निकले मुझे तो तब सबर आवे, देखो इन बेदर्दों ने मेरा कुछ भी वास्ता न रक्खा और तिहाई हिस्सा जो मुक़दमे से पहिले देते थे वह भी ज़ब्त कर लिया, क्या अब मैं इनकी भिखारिन होकर रहूंगी और इनके पास से रोज़ीना पाया करूंगी, हे रामजी ! तू कहां सो गया, मैंने तो तुझको बहुत कुछ मनाया था और तुझे सब कुछ चढ़ाया था, मैं तो सूतरजी का भी नित्य पाठ करती थी सहस्र नाम पढ़ती थी और भक्ताम्बरजी असल संस्कृत रटती थी, इन पाठों में तो बहुत ही भारी शक्ति बताई जाती है और बहुत ही कुछ कहानियां सुनाई जाती हैं, पर मेरा तो सब ही करा कराया अकारथ गया, ऐसा अन्धेर तो दुनियां में कभी हुआ नहीं, क्या कलियुग इस ही का नाम है, हाय मैं तो यूं ही लुट गई, मेरे पास तो वैसे भी सब कुछ जमा पूंजी थी, जो मैं यूं जानती तो अपनी पूंजी ही क्यों खोती, पर अब तो मेरे पास ज़हर खाने को भी नहीं रहा है, हाय इन पापियों ने रिश्वत देकर हाकिम को तोड़ लिया और जो चाहा करा लिया, पर जो रामजी ने चाहा तो वह भी कीड़े पड़ २ मरेगा, एक दिन भी वह इन रुपयों को नहीं बिलसेगा, बल्कि यह सारा रिश्वत का रुपया उसकी देह में से फूट २ कर ही निकलेगा देख लेना मुझ दुखिया की आह को कि सात दिन के भीतर २ ही उसकी धी भी रांड होगी और पूत भी मरेगा, हाकिमी भी उसकी छिनेगी और वह टुकड़े २ को भी तरसता फिरेगा, ग़रज़ रामकली कई दिन तक इसी तरह रोती चिल्लाती रही और बिना खाये पिये ही पड़ी रही, कई दिन पीछे आहिस्ता २ उसको होश आया और लोगों ने भी बहुत कुछ समझाया, सबने अपील करने की ही सलाह बताई लेकिन इसके वास्ते घर में एक कौड़ी भी न पाई इस वास्ते सांप की तरह शिर धुनकर और कोस पीटकर हो बैठ रहना पड़ा और सब्र ही करते सरा, लेकिन तरफ़दारों ने बार बार

अपील की ही बात उठाई और यह ही सलाह बताई कि हाईकोर्ट से बीस बिसे जीत है, सब बड़े २ वकीलों की यह ही बातचीत है कि जमनादास अपने पास से अपील का रुपया लगावे और जीत जाने पर बेखटके ब्याज समेत ले जावे, यह बात सुनकर रामकली का भी जी भुरभुराया, सांप का सा फण उठाया, जमनादास को बहुत कुछ उकसाया, और दया धर्म का भी मन्त्र चलाया इन बातों से जमनादास बहुत ही घबड़ाया, घर पर एक जरूरी काम निकल आने का बहाना बनाया और यों अपना पीछा छुड़ाया, फिर घर जाकर उसने ऐसी गुचकी लगाई कि महीनों तक भी उसकी कुछ खबर न आई, उसके पीछे लोगों ने उसकी बहुत २ चुग़ली खाई, सच्ची झूंठी बात बनाई, जिससे रामकली को यह ही निश्चय होगया कि मेरा भाई ही मेरा मुक़द्दमा खो गया, इस वास्ते अब वह उसकी शकल देखने की भी रवादार न रही और वह भी उससे कतराता ही रहा।

अब रामकली बिलकुल एक अलग हवेली में रहती थी और पचास रुपया महीना खर्च का पाती थी न ससुराल वालों से उसकी बोलचाल थी और न मां-बाप वालों से, इस वास्ते अब वह बिल्कुल ही स्वच्छन्द होगई थी, स्याह करे या सफ़ेद, नेकी करे वा बदी, बुरी राह लगे या अच्छी, यह सब उसकी ही मर्जी पर था, कोई भी उसको टोकने वाला या अच्छी मन्दी की निगाह रखने वाला नहीं था, वह एक बुड्ढे खूसट से ब्याही गई थी और तीन बरस पीछे ही विधवा होगई थी, इस समय उसकी भर पूर जवानी थी, इस वास्ते वह जो कुछ भी गुल खिलाती थी उसको सारी ही दुनियां जानती थी पर यह बड़े घरों की बातें थीं इस वास्ते किसी की भी ज़बान पर नहीं आती थी, हिन्दुस्तान की ऊंची जातियों के ऐसे ही मामले हैं जहां साठ साठ सत्तर बरस के बुड्ढे भी ब्याहे जाते हैं, जिनके यहां बेटे पोतों के होते हुए भी चूड़ियां

फोड़ने के वास्ते लड़कियां मोल मिल जाती हैं और फिर भी यह जातियां ऊंची ही कहलाती हैं, इन ऊंची जातियों की ऐसी बहुत सी रांडें जो जो कुछ ऊधम मचाती हैं और जैसे २ गुल खिलाती हैं उसको पाठक गण स्वयम् ही बहुत कुछ जानते हैं हमारे लिखने की कोई भी जरूरत मालूम नहीं होती है, इसके अलावा जिस प्रकार पांचों उंगलियां यकसां नहीं होती हैं इस ही तरह विधवाओं में भी कोई नेक है कोई बद है कोई सुशील है कोई कुशील है इस वास्ते हम ही क्यों किसी को दोष लगावें और रामकली के पतड़े खोलकर इस पुस्तक के कागज़ काले बनावें, हां इतना लिख देना हम ज़रूरी समझते हैं कि जो कुछ नियम धर्म और सुच क्रिया उसने रांड होने के पीछे करनी शुरू करदी थी और जो कुछ धर्म वह सुहाग के बीच में पालती थी उसको उसने मरते दम तक निबाहा बल्कि उसको ज्यादा २ ही बढ़ाया इस वास्ते वह सदा धर्मात्मा ही कहलाई और बिरादरी से उसने सदा वाह वाह ही पाई।

अध्याय १०

रामकली की यह कहानी तो प्रसङ्ग वस ही कहनी पड़ गई है हमारे पाठक तो अधिक करके यह ही जानना चाहते होंगे कि बेचारे शेरसिंह पर क्या बीती और दुखियारी राजरानी का क्या हाल रहा, इस वास्ते अब हम अपने पाठकों को वहीं पहुंचाते हैं और उस ही की व्यथा सुनाते हैं कि जब लाला जमनादास के डराने और बहकाने से शेरसिंह ने गांव छोड़कर चला जाना मंजूर न किया तो जमनादास ने उसके दो बैल बिकवाकर उससे १५० इस बात के लिये लेलिये कि पुलिस वालों को देकर मामला रफ़ै दफ़ै करा दिया जावेगा और नाम उसका बदमाशी के रजिस्टर से कटवा दिया जावेगा, लेकिन असल में जमनादास ने

एक पैसा भी पुलिस वालों को नहीं दिया, सारा अपने आप ही हजम कर लिया बल्कि जहां तक हो सका उसके खिलाफ़ ही पैरवी करी और उसका बदमाशी में चालान होजाने की ही रपोर्ट कराई लेकिन कप्तान साहब ने अभी यह मामला चलाने लायक न समझा और एक बरस पीछे फिर दोबारा रिपोर्ट करने का हुक्म भेजा।

इस तरह यह आफ़त तो कुछ हलकी हुई पर थोड़े ही दिनों पीछे वह बेचारा शेरसिंह और राजरानी इससे भी बढ़िया एक दूसरी आफ़त में फँस गये, अबकी बार पुलसि ने उन पर यह इलजाम लगाया कि राजरानी ने शेरसिंह से यारयाना लगाया, गर्भ रखाया और फिर उस गर्भ को गिराया, गांव की दाई, भंगन, चमारी, धोबन, कहारी और कई अड़ौसी पड़ौसी इस बात के गवाह बने और मामले की तहक़ीक़ात शुरू होगई, इसमें शक नहीं कि राजरानी २०, २१, बरस की जवान बेवा थी और शेरसिंह भी ३० बरस का जवान पट्ठा था जिसका व्याह भी नहीं हुआ था इस वास्ते इन पर जो कुछ भी शक किया जावे वह थोड़ा है, लेकिन सच बात यह है कि राजरानी बनियों की स्त्रियों जैसी नहीं थी जिनका व्याह नौ दस बरस की ही उमर में होजाता है और तीसरे साल गौना होकर तेरह चौदह बरस की उमर में ही बच्चे की मां बन जाती हैं, और अपने कामके वेग को ज़रा भी नहीं थामने पाती हैं बल्कि वह तो ऐसे राजपूत घराने की बेटी थी जो रण में शिर कटाना ही अपना धर्म समझते हैं और तलवारों की चोट के सामने ही अपनी छाती अड़ाते हैं, जिनकी स्त्रियां रण में पीठ दिखाकर भागे हुए कायर की सुहागिण बनने की निस्बत उस शूर्मा की विधवा बनना पसन्द करती हैं जो युद्ध में डटा रहता है और प्राण रहने तक मैदान से नहीं हटता है, वह तो ऐसी जाति में पैदा हुई थी जो १६ बरस से कम उमर में लड़की का और २५ बरस से कम उमर में लड़के का विवाह नहीं करते हैं, इस वास्ते वीर्य के

ठीक परिपक्व होजाने पर ही जिनमें स्त्री पुरुष का समागम होता है और इस ही वास्ते बहुत दिनों तक जिनका बल वीर्य बना रहता है, इस ही वास्ते वह लोग कुत्ता कुत्ती की तरह काम के वश में नहीं होते हैं बल्कि अपनी इन्द्रियों को भली भांति अपने क़ाबू में रख सकते हैं, इस ही वास्ते राजरानी ने भी अपना रँडापा बड़ी सावधानी से काटा था और आगे को भी इस ही तरह रहने का इरादा था, इस ही तरह शेरसिंह भी बड़े २ शहरों का रहने वाला छैल बांका नहीं था जहां बहिन भानजी का भी परहेज़ नहीं किया जाता है और चची ताई तक को भी नहीं छोड़ा जाता है बल्कि वह तो ऐसे गांव का रहने वाला था जहां सारे ही गांव की बेटियां अपनी बेटी समझी जाती हैं और पराई सब ही स्त्रियां अपनी मां बहिन के समान गिनी जाती हैं और राजरानी तो सचमुच ही उसके रिश्ते की बहिन थी इस वास्ते उसके साथ तो उसका ऐसा कुकर्म हर्गिज भी नहीं हो सकता था, इस वास्ते यह मामला तो ऐसा था जिसका शिर था न पैर बल्कि बिल्कुल ही बनावटी और झूंठा था।

राजरानी ने अपने पति और ससुर के मरने को भी सहज ही में सहन कर लिया था, अपने सारे माल अस्बाब की चोरी को भी झेल लिया था, भूकों मरना और भीख मांग कर खाना भी क़बूल कर लिया था और शेरसिंह के ज़िम्मे चोरी कराने और बदमाशों को रखने का इल्जाम भी बर्दाश्त कर लिया था, लेकिन उससे यह कुशील का कलङ्क किसी तरह भी नहीं झेला गया, इस ही वास्ते पुलिस के गांव में आने पर और यह इल्जाम लगाया जाने पर उस सती सतवन्ती की नस नस भड़क उठी जिससे उसको सत चढ़ आया और वह बे धड़क मुंह खोले थानेदार के सामने आई और खूब ही कड़क कर आवाज़ लगाई कि ओ चण्डाल सूरत और पाप की मूरत कोतवाल! तूने किसी दुष्ट के बहकाये से और थोड़े से

ही रुपयोंके लालचसे मुझ अभागिनी पर यह झूठा इल्ज़ाम लगाया है, और मेरी आवरूको खाकमें मिलाया है,मगर याद रख कि यह मामला उलटा तेरे पर ही पड़ेगा और जिसने तुझे चढ़ाया है वह ही ख़ाक में मिलेगा,सती सतवन्तियोंकी ही सदा जय होगी और पापियोंकी ही हमेशा छै होगी, यह कह कर वह वहां से चलदी और दम की दम में कहीं गायब होगई, उस वक्त कुछ ऐसा समां बँधा था और उसके सत् का कुछ ऐसा रुआब जमा था कि चारों ही तरफ़ सन्नाटा छागया और सब कोई एक दूसरे का मुंह तकता ही रह गया, उस वक्त किस की मजाल थी जो कुछ ज़बान खोलता और उसको जाने से रोकता, घड़ी भर के बाद जब सब को होश आया, तो उसकी बहुतेरी ही ढूंढ कराई पर वह कहीं भी न पाई, तब सब ने यह ही अनुमान लगाया कि वह किसी कुए में कूद पड़ी है या किसी तालाब में डूब मरी है, इस वास्ते कूओं में भी जाल डलवाये और सब तरफ़ सवार दौड़ाये मगर कहीं भी उसका पता न चल सका और निराश होकर ही बैठ रहना पड़ा।

बात यह हुई कि उसने रामनगर को जाने की ही धुन लगाई और उस तरफ़ को ही अपने सत् के घोड़े की बाग उठाई फिर क्या था वह एकदम हवा की तरह उड़ने लगी और घंटों का रास्ता मिनटों में तै करती हुई और झाड़ झूंड़ और नदी नालों को भी बेधड़क लांघती हुई थोड़ी ही देर में रामनगर जा पहुंची और सीधी कलक्टर साहब के बङ्गले पर जा बिराजी, वहां जाते ही वह शेरनी की तरह गरजी और सिंहनी की तरह धड़क कर बोली कि ओ कलक्टर तेरे राज्यमें घोर अन्धकार फैल गया है और अबलाओं पर महा अन्याय और जुल्म होने लग गया है, इस वास्ते आंखें खोल और इन्तज़ाम कर नहीं तो एकदम यह तख्त लौट जायगा और सारा राज्य ही पलट जायगा, साक्षात् देवी स्वरूप उस राजरानी को देखकर और उसकी गरज़ और कड़क को सुन

कर कलक्टर साहब एकदम अचम्भे में आगये उन्होंने उसको इज़्ज़त से बिठाया, बहुत कुछ ढांरस बँधाया, कप्तान साहब को भी वहीं बुलाया, अव्वल से आख़ीर तक उसका सारा हाल सुनकर पुलिस के पुराने काग़ज़ों को भी मँगाया फिर अपनी अक़ल को चारों तरफ़ दौड़ाया तो सब मामलों की जड़ में जमनादास को ही पाया, जिसको यह दोनों साहब अच्छी तरह जानते थे, और उसको पहिले से ही पुराना पापी मानते थे, इस वास्ते ख़ुद कप्तान साहब ने ही यह मामला अपने हाथ में लिया और एक होशियार जासूस को बुला कर उसको पूरी २ खोज लगाने के वास्ते मुक़र्रिर किया।

अध्याय ११

पाठकगण! इधर तो अब जासूस साहब को अपनी ख़ुफिया ज़ोह लगाने दीजिये और तरह २ के भेप बदल कर असल मामले की पैड़ चलाने दीजिये, आइये इतने में हम जमनादास की ही ख़बर लें कि उस बेचारे पर क्या बीत रही है और उस बुड्ढे की नई ज़ोरू क्या २ तमाशें दिखा रही है, यह आपको मालूम ही है कि खोये हुए हार की टोह में अपने घर की तलाशी लेने पर जमनादास को वहां बिल्कुल भात मात ही नज़र आई थी, अब अपने बेटों के अलग किसी दूर मुहल्ले में चले जाने पर और यहां अकेले मियां बीबी के ही रहजाने पर जमनादास ने अपनी जोरू के पैरों में पड़ कर और आठ २ आंसू रोकर पूछा कि भागवान मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है जो तूने इस तरह मेरा घर उजाड़ा है; मेरे बेटों को मुझ से दूर भगाया है लड़ लड़ कर मेरा भी कलेजा खाया है और मारे फ़िकर के मेरी देह का भी पंजर बनाया है, इस पर वह भागवन्ती कड़क कर बोली कि ओ बेईमान क्या तेरे शिर में इतनी भी अक़ल

नहीं है कि तुझे अपना भी क़सूर मालूम नहीं है अच्छा सुन अगर तू मेरे ही मुंह से सुनना चाहता है पर यह तेरा रोना धोना मुझे नेक भी नहीं भाता है इस वास्ते आदमी की तरह सिंभल कर बैठ और अपने कानों को ऐंठ कि तूने मुझको व्याह कर लाने में कसाई से भी निर्दयता का काम किया है और महा घोर पापों का बोझा अपने शिर पर लिया है, पापी तूने व्याह के वक्त ज़रा भी न सोचा कि उस वक्त तेरी तो ढलती जवानी थी और मुझ पर अभी वह ही जवानी आनी थी, तू तो उस वक्त ४२ वरस का होकर अपने पोते पोतियों को गोदी में खिलाता था और मुझ १२ वरस की नन्ही बच्ची को मेरे मां बापों ने अपनी गोदी का खिलौना बनाया था, लेकिन हायरी खुदग़र्ज़ी और स्वार्थ, तूने अपने चार दिन के मज़े के वास्ते मेरी सारी जवानी ख़ाक में मिलाई और रुपये का लोभ दिखाकर मेरी मांको भी महा डायन बनाई,हाय! हाय!! जिस तरह कोई लोभी ब्राह्मण अपनी पूज्य गाय को कसाई के हाथ बेच-कर छुरी से उसके टुकड़े २ कराता है और उन टुकड़ों को बाज़ार में बिकवा कर मुसलमानों की हांडी पकवाता है इस ही तरह मेरी मां ने भी रुपये के लालच में आकर अपनी जान से प्यारी बेटी को तुझ महा क़साई के हाथ बेचा कर तेरे बुढ़ापे की छुरी से मेरी चढ़ती जवानी को चूर चूर कराया है और मुझे उस गाय से भी ज्यादा तड़पाया है, क्योंकि गाय तो उतनी ही देर तक तड़पती है जितनी देर तक कि कसाईकी छुरी उसकी गर्दनपर फिरती है जिसमें एक घड़ी भी नहीं लगती है, लेकिन मुझ पर तो ज़बरदस्त काम-देव की अनेक छुरियों को चलते हुए बरसों बीत गये हैं और तब भी मेरे प्राण नहीं निकले हैं, तुझ बुड्ढे के वश में पड़कर तो मैं मनुष्य योनि में पैदा होकर भी नर्कों के दुख भोग रही हूं और जिस प्रकार नारकियों के शरीर के टुकड़े २ कर देने पर भी, घानी में पेल देने पर भी और तैल के कढ़ाये में पका देने पर भी उनके

प्राण नहीं निकलते हैं, इस ही तरह मेरे भी कलेजे के खंड २ होते रहने पर और बरसों से बराबर २४ घण्टे तक जलते अँगारों पर लौटते रहने पर भी मेरी जान नहीं निकलती है और मेरे त्रासों में कमी नहीं होती है, इस वास्ते तू कसाई से भी ज्यादा महा कसाई है और शेर भेड़िया आदि हिंसक जीवों से भी ज्यादा निर्दई है सच तो यह है कि तेरी हिंसा का तो पार है न वार है क्योंकि तूने तो पंचेंद्री सैनी मनुष्य को तड़पाया है और मेरा यौवन खाक में मिलाया है, हा ! ओ महापापी बेईमान ! तूने कुछ भी परवाह इस बात की न की कि जो १२ बरस की कन्या मुझ ४२ बरस के बुड्ढे से व्याही जाती है उसको मैं कितनी जल्दी छोड़कर मरजाऊंगा और उसको ऐसी ऊंची जाति की विधवा बना जाऊंगा जो विधवाओंके कुकर्मों पर तो आंख मीचती है, उनके पापी जीवन को सब तरह से निभाती है बलिक गर्भ गिराने और हिंसा कराने में सहाई बन जाती है लेकिन विधवा के किसी एक पुरुष पर संतोष कर लेने से अर्थात् खुल्लमखुल्ला किसी एक को अपना पति बनाकर दुनियाभर के पुरुषों पर मन चलने से अपने आप को बचा लेने पर उस विधवा को दुर दुर पर पर कराती है और अपनी जाति से अलग निकालकर दूर भगाती है; हा ! खाक पड़े इन ऊंची जाति वालों पर जो बेटी के बेचनेवालों और दाम देकर मोल लेनेवालों को अपनी जाति से बाहर नहीं निकाल सकते हैं बलिक मूछों पर ताव देकर लड्डू खानेके लिये उनके साथ होजाते हैं और बराती बनकर बुड्ढे नोशा के पीछे इस तरह लग जाते हैं जिस तरह पुराने शिकारी के साथ कुत्ते जाते हैं लेकिन ओ पाजी नालायको ! यकीन मानो कि मुझे व्याह कर लाने में तुम लोगों ने जो अन्याय किया है उसके बदले में तुम को भी जरूर नरक में जाना पड़ेगा और बारबार वहां के महात्रास भोगने होंगे, मगर ओ ऊंची जाति के महादुष्टो ! नरक के त्रास ही

तुम्हारे वास्ते काफी सजा नहीं हो सकती है, इस वास्ते इस जन्म के भी त्रास भोगने के वास्ते तुम को तय्यार रहना चाहिये और आगे को किसी जन्म में कन्या बनकर किसी बुड्ढे के हाथ मोल भी बिकना चाहिये, जिससे तुमको कुछ तो हकीकत मालूम हो और हमारी तड़प का कुछ तो बदला चुके, बेशक हिन्दुस्तान की ऊंची जाति की कन्यायें यह बात अच्छी तरह जान गई हैं कि रामजी भी उनकी तरफ से बिलकुल ही अन्धा होगया है, नहीं तो क्या वह हम पर ऐसे जुल्म होते हुए देख सकता था और कुछ भी उपाय नहीं कर सकता था, बल्कि हम तो यहां तक देख रही हैं कि हिन्दुस्तान के वह अंग्रेज़ राजा जो इक्के और बग्गी के घोड़ों पर भी दया दिखाते हैं और उनपर ज्यादा बोझ नहीं लादने देते हैं वह भी हिन्दु कन्याओं की तो कुछ भी रखवाली नहीं करते हैं और उनको भेड़ बकरी की तरह बिकने देते हैं, इस वास्ते अगर हम ही अपना बदला चुकावें और व्याह होने पीछे तुम जैसे बुड्ढे पापियों को खूब ही रोनियों रुलावें और तुम्हारे घर को अच्छी तरह से उजाड़ कर दिखावें, तुम्हारी इज्जत को खाक में मिलावें, और तुम्हारे घर के सब लोगों को तेरह तीन और बारहबाट बनावें, तो इसमें हमारा क्या दोष बताया जा सकता है बल्कि हमको तो अफसोस इस बात का रह जाता है कि जो हमको मोल लेकर आता है वह बुड्ढा पापी तो हमारे काबू में आजाता है इस वास्ते उसको तो हम इस पाप का तो खूब ही मज़ा चखाती हैं और उसकी जिन्दगी बबाल बनाती हैं, लेकिन वह बेईमान चौधरी चुकड़ायत जो बारात में बड़े २ पगड़ बांधकर जाते हैं, वह करता जो चन्दन का टीका लगाकर गुणमुण गुणमुण करके व्याह कराते हैं और वह बाराती जो खूब पत्तल परोसा उड़ाते हैं और गाड़ियों में बैठ २ कर जाते हैं वह हमारे हाथ से दूर ही रह जाते हैं उनसे हम इस अन्याय का कुछ भी बदला नहीं चुकाती हैं और उनका कुछ भी बुरा नहीं कर पाती हैं

वेशक मन मन में तो हम उनको भी खूब ही कोसती रहती हैं और उनकी भी वहुओं को रांड़ वनाने और उनपर भारी २ गजव गिराने के वास्ते रात दिन रामजी को उकसाती रहती हैं लेकिन हमारे वास्ते तो न कोई रामजी हैं और न कोई राजा, इस वास्ते हम तो यह ही चाहती हैं कि किसी तरह वाराती भी सव हमारे काबू में आवें और उनसे भी हम अपना वदला चुकावें, इस वास्ते ऐ वुढ्ढे! तू होश में आ और साफ २ वात मत कहलवा, हमारे हृदयमें वहुत कुछ जोश भरा पड़ा है और वह सव तुम लोगों को त्रास देने के वास्ते ही उवला हुआ है इस वास्ते तुम जैसे पापी लोगों को तो हरदम त्रास भोगने के वास्ते तय्यार रहना चाहिये और कभी चूं तक भी न करनी चाहिये, यह कभी हो नहीं सकता है कि जो अनमेल विवाह करे वह त्रास न भरे इस वास्ते त्रास भुगतने के सिवाय तुम्हारे लिये और कोई सूरत नहीं है और हमको ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है लेकिन सुन तुझे आज अच्छी ही तरह समझाये देती हूं कि अगर हम तुम्हारी वैरिन भी न वनें और तुमको किसी प्रकार का त्रास देना भी न चाहें वल्कि अच्छी तरह सुख शांति के साथ ही वितावें तो भी क्या यह हो सकता है कि हम वारह वारह तेरह तेरह वरस की नन्हीं वच्चियां जो रो रो मुंह धुलवाती थीं और दिन भर गलियों में खेल मिचाती फिरती थीं तुम बुड्ढों के साथ व्याही जाने से तुम्हारे वेटे वेटियों की मा और तुम्हारे पोते पोतियों की दादी जैसे काम करने लग जावें और बुड्ढी तजरुवेकार स्त्रियों की तरह से घर को चलावें, ऐसी आशा रखना महामूर्खता और नादानी है इस वास्ते यह सारी मुसीवत तुमने ही अपने शिर आनी है, खूब समझ लो और अच्छी तरह याद रखलो कि किसी कन्या को व्याह लाकर चाहे उसको दादी वना दो या नानी पर काम तो उससे वैसा ही हो सकेगा जैसा कि नन्हें वच्चों से हुआ करता है इस वास्ते हमारे हाथों तो घर

का ऐसा ही बन्दोबस्त बधेगा जैसा बध रहा है और एक एक तिनके पर आपस में इस ही तरह लड़ाई दंगा होगा जिस तरह छोटे छोटे बच्चों में हुआ करता है और सब कामों में ऐसा ही खेल खिंडेगा जैसा कि बच्चों के हाथों से खिंडा करता है, इस वास्ते अनमेल व्याह करके भी घर के अच्छी तरह चलते रहने की उम्मेद करना और सुख शांन्ति की आशा रखना गधे के सींग बांझ के पुत्र और आकाश के फूलों की आशा के समान असम्भव है जो कभी पूरी नहीं हो सकती है, इस वास्ते जाओ अपना धंधा देखो और फिर कभी ऐसी बात मत पूछो, अन्त में इतना और भी कहे देती हूं कि जो लोग अनमेल विवाह करते हैं और ३०-४० बरस के होकर भी बारह तेरह बरस की छोकरी को व्याह लाते हैं उनके हृदय में तो दया का अंश भी नहीं होता है इस वास्ते उनका धर्मात्मा बनना, हरी सब्जी और कंदमूल का छोड़ना, रातको अन्न जल न करना और पानी छानकर पीना सब बाहर का ढोंग और लोक दिखावा ही है, दुनिया को ठगने के वास्ते ही उनका यह सारा स्वांग तमाशा है, भगवान ऐसे पाखण्डियों के बहकाने में नहीं आ सकता है और ऐसों की पूजा भक्ती से राज़ी नहीं हो सकता है, क्योंकि जब उनका हृदय ही पत्थर सा कठोर है तब उनके परिणाम किसी तरह भी ऐसे नहीं हो सकते हैं जिससे उनको किसी प्रकार भी पुण्य की प्राप्ति होसके और उनकी क्रियायें धर्म क्रियायें बन सकें इस वास्ते तुम अपने धर्मात्मापने के घमण्ड में भी मत रहना बल्कि यह ही निश्चय रखना कि छोटी सी छोकरी को व्याह लाने से हमारे परिणाम कसाइयों जैसे ही कठोर होगये हैं और उन अपने कठोर और निर्दय परिणामों के अनुसार ही हम महापाप कमा रहे हैं और नर्कों में जाने के सामान बांध रहे हैं जमनादास अपनी जोरू की यह तक़रीर सुनकर मुंह ताकता रह गया और सुन्न होकर चुप चाप बाहर बैठक में आ बैठा।

अध्याय १२

जमनादास के पोते रामप्रसाद की सगाई मुबारकपुर के सेठ घासीराम की लड़की से होरही थी, लाला घासीराम पुश्तैनी साहूकार थे, पूरी आन बान वाले और बात के करारे थे, जमनादास के बेटों ने जब अपने बाप से अलग होकर जुदा चूल्हा धरा था और अलग ही कमाना खाना शुरू किया था तब भी इस बात का चर्चा घासीराम तक पहुंचा था लेकिन उस वक्त यह ही समझ गया था कि जमनादास ने अपने बेटों को कारोबार सिखाने और हौसला बढ़ाने के वास्ते ही जुदा किया है इस ही कारण नाम मात्र को थोड़ा २ धन उनको दिया है, नहीं तो जमनादास के पास क्या कुछ कमी है, आज दिन उसकी तो बात सब तरह बनी है और जमा पूंजी भी घनी है, लेकिन अब जब कि उसके बेटे मकान भी छोड़कर चल दिये और दूर मुहल्ले में जाकर किराये के मकान में रहने लग-गये, तब तो जमनादास का भण्ड फूट गया और लोगों का सब भ्रम हट गया, बाहर की सब कलई खुल गई और बँधी बँधाई सब हवा बिखर गई यहां तक कि घासीराम ने भी अपनी लड़की की सगाई हटाली जिसका जमनादास को बड़ा दुःख हुआ, उसने बहुतेरी ही चालें चलीं बहुतेरे ही रङ्ग दिखाये सब कुछ बातें बनाईं लेकिन घासीराम पर उसकी इन चालों का अब कुछ भी असर न हुआ इस वास्ते यह सगाई किसी तरह भी कायम न रह सकी बल्कि और भी कहीं से सगाई न आसकी, जमनादास रातों रोता था और दिनों सोचता था लेकिन कोई भी तदबीर बन न आती थी, पर एक मुसीबत हो तो आदमी झेल ले और एक आफ़त हो तो सह ले, पर जमनादास पर तो अब मुसीबतों का पहाड़ ही टूट कर आपड़ा था और आपत्तियों ने उसको चारों तरफ़ से ही आ घेरा था, जमनादास की बँधी मुट्ठी के खुलते ही इलाके भर में,

रुई सी पिन गई और उसकी बुराई सब ही जगह फैल गई, फल इसका यह हुआ कि जमनादास को उधार मिलना तो बन्द होगया और जिसका जो चाहता था उसका तक़ाज़ा शुरू होगया, यहां तक कि नालिशें भी होने लगीं और डिगरी से पहिले ही कुर्की करा देने की कोशिश भी की जाने लगी, इधर जमनादास भी एक ही काइयां था उसने भी बड़े २ पैंतरे बदले, झूंठी वहियां बनाई, जाली दस्तावेज और रसीद पर्चे तय्यार कराये, अपनी लिखत से मुकरा कई २ तरह के दस्तख़त बनाकर दिखाये, अपने दोस्तों से झूंठी नालिशें अपने ऊपर कराई, अपने मकान और जायदाद के झूठे बैनामे अपने रिस्तेदारों और मेल मुलाक़ातियों के नाम लिखे बहुत कुछ माल आस्वाब और रुपया पैसा इधर उधर पहुंचाया, और अपने बचने का सब कुछ उपाय बनाया, आज कल वह ऐसे चक्कर में पड़ा था कि औरों के तो होश ही गुम होजाते, पर वाहरे जमनादास वह आखिर दम तक अपनी कोशिशों से नहीं चूका हर वक्त नई से नई चालाकी और नई से नई मक्कारी बनाता ही रहा जिससे उसके मुक़ाबिले वाले सख़्त हैरानी में पड़ जाते थे और रोने लग जाते थे, और कभी २ तो ऐसे दाव में आजाते थे कि अपनी ही खैर मनाने लग जाते थे।

जमनादास ने अपने मकान में कूंबल लगवाई, रातको चोर चोर की दुहाई मचाई और सब रुपया पैसा और माल अस्वाब चोरी चले जाने की रपट लिखाई, फिर थोड़े ही दिनों पीछे अपने एक दोस्त से अपने ऊपर नालिश कराई और डिगरी से पहिले ही अपने सब माल अस्वाब की कुर्की निकलवाई, जिसमें सारा घर-बार और हाट दूकान टटोल डालने पर भी सिर्फ़ दो सौ रुपये का घर का टूटा फूटा अस्वाब, सौ रुपये नक़द और तीन सौ रुपये का दूकान का माल और पांच सौ रुपये के रुक्के परचे निकले अल-बत्ता बही में सवा लाख रुपये का क़र्ज़ा लोगों के नाम ज़रूर

लिखा था पर उसका कोई भी तहरीरी सबूत वहां मौजूद न था, इस कुर्की का लोगों में बहुत ही ज्यादा चर्चा हुआ इस चर्चे में सब के मुंह से यह ही निकलता था कि चाहे कैसी ही चोरी होजाय तो भी इस लखपती घर में से कुछ भी न निकलना बड़े ही आश्चर्य की बात है, बहुतेरों का यह अनुमान हुआ कि सब कुछ बेटों के पास रख दिया है, इस ही वास्ते उनको अलहदा कर दिया है, ऐसी शोहरत होने पर एक डिगरीदार ने बेटों के घर के माल असबाब को भी जमनादास का ही माल बताकर कुर्की करा दी लेकिन वहां क्या धरा था, वहां तो वह ही माल निकला जो थोड़ा बहुत उनको गुज़ारे के वास्ते मिला था, लेकिन डिगरी-दार ने भागते चोर की लँगोटी की कहावत के समान इतने को ही ग़नीमत जाना और उस ही को जमनादास का माना, ऐसी दशा में जमनादास के बेटे बेचारे नंगे बूचे खाली हाथ खड़े रह गये और खाने पीने से भी मुहताज होगये।

इस तरह इन दिनों जमनादास और उसके बेटे महा विपत्ति में फँसे हुए थे और रात दिन अपने बचाव की फ़िकर में ही लगे रहते थे, लेकिन चाहे जो कुछ हो लाला जमनादास उस ही तरह मन्दिर में जाता, पूजा करता, माला जपता, व्रत उपवास रखता और अपनी सब प्रतिज्ञाओं और शुचि क्रियाओं को ज्यों का त्यों निभाता था, इन सब कामों में वह अब भी ऐसा ही दृढ़ था जैसा कि सुख शांति के दिनों में इस वास्ते उसकी वाह २ ही होती थी और वह और भी ज्यादा पक्का धर्मात्मा और सच्चा श्रद्धानी समझा जाने लगा था, इन दिनों मन्दिरजी में लोग उस ही की चर्चा उठाते थे और बार २ उसको समझाते थे कि लाला ज़मनादासजी मुसी-बत के आने पर धर्मात्मा पुरुषों को जरा भी घबराना नहीं चाहिये और न इस बात की मन में शङ्का ही लानी चाहिये कि धर्म करते भी क्यों हानि होती है और नियम धर्म पालते २ भी क्यों मुसीबत

उठानी पड़ती है क्योंकि कौन जानता है कि किस जनम में क्या २ पाप किये हैं और किस जन्म के पाप इस समय अगाड़ी आरहे हैं, इस पर जमनादास बड़ी आधीनताई से जवाब देता था कि भाई साहब तीस पैंतीस बरस हुए जब छुल्लकजी यहां आये थे, हमने तो तब से ही श्रीजी के चरणों में लौ लगाई है नियम धर्म भी जो अपने से बनता है पालते हैं और संयम भी जितना अपने से हो सकता है करते हैं, इस ही बीच में श्रीजी ने अपनी कृपा से हमको राई से पर्वत बनाया और अब फिर पर्वत से राई बना रहे हैं सो भाईजी हम तो उनके तुच्छ सेवक हैं, उनका इख़्तियार है जिस दशा में चाहें रक्खें हमारा तो यह ही प्रण है, इस ही को अब तक निबाहा है और आगे को निबाहेंगे कि उनके चरणों से नहीं टलेंगे और सदा उन ही का नाम जपेंगे इस पर लोग कहते कि नहीं लाला जमनादास तुम घबराओ मत, तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा, श्रीजी जरूर तुम्हारी सहाई करेंगे और फिर वह ही दरथूनी खड़ी हो जायँगी और क्या आश्चर्य है जो उससे भी दुगनी चौगनी बढ़वारी होजावे और उससे भी ज्यादा अरूज लग जावे, क्योंकि श्रीजी के दर्बार में किसी बात की कमी थोड़ा ही है, एक ज़रा मिहर की निगाह फिरने की देर है, सो धर्मात्माओं पर तो सदा उनकी मिहर ही रहती है और तुम तो उनके ऐसे भगत हो कि मेंह जाय आंधी जाय रोग हो शोक हो पर तुम अपना पूजा पाठ नहीं छोड़ते हो और नियम धर्म भी कड़े से कड़ा पालते हो, तुम्हारे जैसा धर्म तो कोई कर ही लीजो और यह कोई मुंह देखी बात नहीं है बल्कि तुम्हारे पीछे भी सब लोग यह ही चर्चा किया करते हैं और सच पूछो तो इस नगर में तो धर्म का सारा उपकार तुम्हारी ही बदौलत होरहा है नहीं तो यहां तो मंदिरजी के किवाड़ तक भी खुलने मुश्किल थे, धन्य है तुमको जो इतना धर्म पालते हो और इस चिन्ता के समय में भी इधर की ही लौ लगाये बैठे हो।

इस प्रकार श्रीमन्दिरजी में तो जमनादास की वड़ी प्रशंसा हुआ करती थी और वह वड़ा धर्मात्मा माना जाता था पर बाज़ार में अन्यमती लोग यह चर्चा किया करते थे कि जब यह जमनादास ऐसी २ वेईमानियां करता है, झूठ, फ़रेब, मक्कारी, दग़ाबाजी और जालसाज़ी करके तरह २ की चालें चलता है, अन्याय और ज़ुल्म करके लोगों के गले काटता है तब मंदिरजी में जाकर क्या धर्म कमाता होगा, हमारी समझ में तो वहां जाकर भी मकर और फ़रेब ही चलाता होगा और रामजी को वहकाने की जुगत लगाता होगा, पर जो ऐसे २ बेईमानों से भी रामजी खुश होजाता हो और उनके वहकाये में आजाता हो तब तो बड़े ही आश्चर्य की वात है, इस पर दूसरा कहता कि भाई वह तो अन्तरयामी है, घट घट की वात को जानता है और जैसी जिसकी नियत है वैसा ही फल देता है इस वास्ते इन लोगों के घण्टा वजाने से कुछ नहीं होता है, रामजी तो ऐसों के पास भी नहीं फटकता है, तीसरा कहता कि भाई इन शरावगियों की वात ही निराली है, यह लोग शुत्र क्रिया भी वहुत ज्यादा करते हैं पानी भी छानकर पीते हैं, हरी सब्ज़ी भी नहीं खाते हैं इस वास्ते इनके यहां ज़रूर ही इन वातों का कुछ फल होता होगा और सौ बेईमानी करते हुए और लोगों के गले काटते हुए भी मनुष्य धर्मात्मा बन जाता होगा, इस पर चौथा कहता कि नहीं भाई कुछ शरावगियों में ही ऐसी बात नहीं है वलिक सब ही लोगों में बहुत से बगुला भगत होते हैं जो वेईमान भी पूरे ही होते हैं और न्हाने धोने में भी सारा दिन खोते हैं, गली वाज़ार में बच २ कर चलते हैं और किसी को अपना पल्ला भी नहीं छूने देते हैं, माला हर वक्त हाथ में रखते हैं और होटों को हिलाकर मनका भी फिराते रहते हैं पर हृदय में उनके सदा कपट ही भरा रहता है और ठगी और दग़ावाज़ी से ही उनका काम चलता है, देखो हमारे ही यहां धनी-राम भगत कैसा मकार था पर दिन भर शिवाले पर ही पड़ा रहता

था और परम वैराग्य के ही गीत गाया करता था, ग़रज़ जमनादास की बाबत अब अनेक प्रकार की चर्चा उठती थी और कोई उसको परम धर्मात्मा और कोई महापापी बताता था।

अध्याय १३

इस पुस्तक के दूसरे ही अध्याय में हमने कथन किया था कि जमनादास की एक विधवा बेटी भी थी जो अपनी मां के पास ही रहा करती थी, फिर उसकी मां के मरजाने पर और जमनादास का दूसरा ब्याह होजाने पर जब जमनादास की नई बहू और उसके बेटों में नहीं पटी और वह अलग होगये, तब यह बेचारी भी अपने भाइयों में ही रहने लगी थी और जब वह यह हवेली छोड़कर किराये के मकान में चले गये थे तो वह भी उन ही के साथ चली गई थी, इसके ग्यारह हज़ार रुपये नक़द और पन्द्रह हज़ार का जेवर जमनादास के पास जमा था, और जमनादास ने उसको यक़ीन दिला रक्खा था कि रुपया तो उसका ब्याज पर चढ़ा हुआ है और जेवर ज्यों का त्यों हिफ़ाज़त से रक्खा है, अपने रुपये के ब्याज में से वह बेचारी दस बीस रुपया महीना ले लिया करती थी और अपने भाई भतीजों में ख़र्च कर दिया करती थी, इस ही वास्ते उसका रखना किसी को भी दूभर नहीं मालूम होता था और मन ही मन में हिसाब होजाता था, परन्तु हार के खोये जाने पर जब जमनादास ने अपने घर को टटोला और वहां बिल्कुल सफ़ाया ही नज़र आया तब इस बेचारी को भी अपने ज़ेवर की फ़िकर हुई थी लेकिन उस वक्त जमनादास ने उसकी तसल्ली कर दी थी कि वह ज़ेवर तेरी मतेई को नहीं सौंपा गया है बल्कि अलग ही रक्खा हुआ है, इस प्रकार समझाने से उस समय तो उस बेचारी की तसल्ली होगई थी लेकिन अब जो कुर्कियां होने

लगीं और बेटी तक का सब माल अस्बाब पकड़ा गया तो उसको बहुत ही ज्यादा फ़िकर हुई और वह जमनादास के पास आकर और आंखों में आंसू भरलाकर कहने लगी कि ऐसे समय में जब कि तुम्हारे ही ऊपर ऐसी भारी आफ़त आरही है मुझे अपने माल की कुछ भी खैर नज़र नहीं आती है इस वास्ते अब मैंने, यह ही विचारा है कि मैं अपनी ससुराल चली जाऊं और वहीं अपना माल अस्बाब रख आऊं, जी तो यह ही करता है कि जन्म भर तक न तो उनकी शकल देखूं और न अपनी दिखाऊं पर क्या करूं इस समय तो सिवाय इसके और कुछ चारा नहीं है और वहां जाये बिदून मेरा गुजारा नहीं है, अपनी बेटी की यह बात सुनकर जमनादास की छाती पर बिजली सी गिर गई और उसके दिमाग़ में चक्कर आकर सा रह गया और उसका सारा शरीर पसीने से तर बतर होगया, कारण इसका यह था कि जमनादास ने शुरू ही से उसका सारा जेवर बेच डाला था और न उसका रुपया सूद पर चढ़ाया था बल्कि ११ हजार रुपया नक़द और यह १५ हज़ार रुपया जो ज़ेवर बेच कर हाथ आया था सब का सब अपने ही कारख़ाने में लगा लिया था, वह जानता था कि वह विधवा है इस वास्ते ज़ेवर के मांगने की तो उसको कभी जरूरत ही नहीं पड़ेगी और अपनी ससुराल वालों से वह ऐसी नाराज़ है कि उनका नाम भी लेना नहीं चाहती है इस वास्ते वह तो सदा मेरे ही यहां रहैगी इस लिये रुपया भी अपना वापिस क्यों मांगेगी, इस प्रकार जमनादास को तो यह ही यकीन था कि अपनी बेटी का यह सब माल मेरे ही पेट में हज़म हो जावेगा और कभी भी उगल कर देना न पड़ैगा, लेकिन अब अपने घर का सब नक़शा बदल जाने से उसके ससुराल जाने का इरादा मालूम होने पर जमनादास का वह सब ख़याल रद्द होगया और उसकी आंखों के सामने अंधेरा छागया, अगर ठीक २ हिसाब

लगाया जावे और जो व्याज इस रुपये से वसूल होता वह सब जोड़ लिया जावे तब तो यह कुल रुपया अस्सी हज़ार से भी ज्यादा होगया था और अगर व्याज का भी कुछ ख़याल न किया जावे तब भी छव्वीस हज़ार रुपये का तो मामला था ही जिसको जमनादास दे तो सकता था पर उसके देने से सारा कारखाना सिमटता था और फिर कुछ भी बाक़ी नहीं बचता था, इसके अलावा वह तो इसको अपना ही माल समझ बैठा था और हज़म करके डकार भी लेचुका था, इस वास्ते जमनादास बहुत रोया और ठण्डी आह भरकर बेटी से बोला कि बेटी मेरे दिन माड़े न आते तो क्यों तू उन लोगों के पास जाने का इरादा करती जिनकी तू शकल तक भी देखना नहीं चाहती थी, पर मेरे पाप कर्म्मों ने तुझको भी सताया और तेरा भी जी घबड़ाया, पर तेरा तो सब रुपया व्याज पर चढ़ा है बल्कि जेवर भी सब का सब बेचकर सूद पर ही दे दिया है, इस तरह तेरे रुपये तो पड़े २ दूध पीरहे हैं और दिन दूने रात चौगुने बढ़ रहे हैं, तेरे रुपयों को तो किसी प्रकार की भी जोखम नहीं है इस वास्ते तू रत्ती भर भी मत घबड़ा और बेफ़िकर होकर भगवान् से ध्यान लगा, ससुराल में हर्गिज़ भी मत जा बल्कि यहीं रह कर नियम धर्म पाल और अपने दिन काट।

जेवर के बिकजाने का नाम सुनकर वह बेचारी एकदम ही कांप उठी और सहमकर बोली कि पिताजी मैं तो कहीं की भी न रही, क्योंकि जेवर के बिकने की बात अगर ससुराल वाले सुनेंगे तो वह नो नहीं मालूम मेरी क्या गत करेंगे, जमनादास ने कहा कि बेटी रुपये से ही तो जेवर बनता है, इस वास्ते जब तेरा रुपया कौड़ी २ मौजूद है बलिक व्याज बँधकर दुगना तिगुना होगया है तो फिर फ़िकर किस बात की, अगर तेरे ससुराल वालों को जेवर ही की ज़िद होगी तो उस रुपये से तो पल की पल में उससे कई गुना जेवर खरीद किया जा सकता है, और उनको दिया जा-

सकता है, लड़की ने कहा कि पिताजी तुम्हारी तो सब ही चीज़ लोग कुरक करा रहे हैं यहां तक कि मेरे भाइयों की चीज़ को भी तुम्हारी ही बताकर पकड़वा रहे हैं तब मेरे रुपये का कौन ठिकाना हो सकता है और उसके बचाने का कौन बहाना बन सकता है. जमनादास ने कहा कि बेटी तेरे रुपयों के तो सब हुण्डी पर्चे तेरे ही नाम के लिखवा रक्खे हैं इस वास्ते उनको कौन छेड़ सकता है और किस तरह उनको मेरे बताकर कुरक करा सकता है, लड़की ने कहा कि कुछ हो पर पिताजी इस समय तो मुझे यहां का कुछ भी पतियारा नहीं हैं और ससुराल के सिवाय और कोई मेरा सहारा नहीं है, जमनादास बोला कि बेटा सिवाय धरम साधन के अब तुझे और करना ही क्या है, सो बड़ों का तो यह कहना है कि "धन दे तन को रखिये तन दे रखियें लाज। धन दे, तन दे, लाज दे, एक धरम के काज" सो जब ससुराल में रहते हुए तेरे धरम साधन का ठीक २ प्रबन्ध ही नहीं हो सकता है तो चाहे कुछ हो वहां जाने का तो तू नाम भी मत ले, और यहां तो बिना तेरी कोशिश के ही निरखा चुगा भोजन बनता है. कन्द मूल का कोई नाम तक भी नहीं लेता है और सब शुचक्रिया ठीक ही ठीक होती है और कोई बात तेरी मर्जी के खिलाफ़ नहीं हो सकती है तब तू यहां से क्यों जाती है, यह सुनकर वह लड़की रोपड़ी उसको हिड़कियां बँध गईं और वह कुछ भी न बोल सकी।

अध्याय १४

हमारे पाठक इस लड़की का पिछला सब हाल और इसके ससुराल वालों की सब बात जानने के बड़े उत्सुक होंगे इस वास्ते हम इस लड़की का जन्म से लेकर अब तक का सब हाल बल्कि उससे भी पहिले की सब बातें सुना देना ज़रूरी समझते हैं और

वह इस तरह पर है कि जमनादास का पहिला ब्याह होने पर सब से पहिले एक लड़की पैदा हुई थी जिसको जमनादास की स्त्री की कोख खुलने की निशानी समझ कर बहुत खुशियां मनाई गई थीं और मनमोहिनी नाम रखकर वह बड़े ही लाड़ प्यार से पाली गई थी, उसके पैदा होने के एक बरस पीछे फिर गर्भ रहा, इस समय गंगाराम धर्मात्मा बन चुके थे, नित्य मन्दिरजी में जाते थे और पूजा पाठ करके दो दो तीन तीन घण्टे पीछे आते थे, इस वास्ते इस गर्भ रहने पर उन्होंने भगवान् से बहुत ज्यादा अर्दास करनी शुरू की कि हे भगवान्! अब की बार तो जिस तरह होसके तू बेटा ही दीजिये जिससे वंशबेल फले और आगे को हमारा नाम चले, उन्होंने मिन्नत भी मानी कि बेटा होने पर खूब ठस्से के उछाव करावेंगे और भगवान की सवारी को बीच बाज़ार से निकालेंगे लेकिन हुआ वह ही जो होना था, यानी अबकी बार भी बेटी ही पैदा हुई जिससे घर भर में अँधेरा छाया और खुल्लमखुल्ला सबने उसका मरना ही मनाया, यहां तक कि ज़च्चा को खाना देने में भी खैंच की गई जिससे दूध उतरने में कमी होजाय और वह लड़की भूखों मर जाय, दिलभरी उसका नाम रक्खा गया और तरह तरह से उसको सताया गया, कभी २ उसकी मां को उस पर दया भी आजाती थी और वह यह भी कहने लग जाती थी कि यह कन्या तो तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ेगी बल्कि अपना ही भाग ले जावेगी, लेकिन इन बातों का कुछ भी असर न होता था और सर्दी गर्मी से उस कन्या का कुछ भी बचाव न किया जाता था, बीमार पड़ने पर भी उसकी कुछ दवा न की जाती थी बल्कि रात दिन उसके मरने की ही भावना भाई जाती थी और वह मरजानी के नाम से ही पुकारी जाती थी।

तीसरी बार फिर गर्भ रहने पर और भी ज्यादा मिन्नत मनाई गई और लड़का पैदा होने पर तीर्थयात्रा का संघ चलाने की ठह-

राई गई लेकिन अवकी वार भी लड़की ही पैदा हुई जो और भी ज्यादा सताई गई, दशकरी जिसका नाम हुआ और तू मरजा और गढ़े में दबजा यह उसका काम हुआ, चौथीवार में यह अभागी और कर्मों की मारी गर्भ में आई जिसकी नक़दी और ज़ेवर का ऊपर कथन होरहा है, इसके पैदा होने पर तो बहुत ही शोक मनाया गया और ऐसा निर्दई हृदय बनाया गया कि अगर अंग्रेज़ी राज न होता और फांसी पाने का भय न रहता तो ज़रूर उसका गला घोंट कर अपनी ऊंची जाति का सबूत दे दिया होता, तो भी आंखों से नज़र न आनेवाले एक इन्द्री स्थावर काय के सूक्ष्म जीवों पर दया करके कंदमूल का त्याग करने वाले और हरी सब्ज़ी न खाने वाले दया धर्मियों की दया पालने को भली भांति सिद्ध कर दिखाने के वास्ते उन्होंने क्षमा तो उसका नाम धरा और उसको कूड़े कर्कट की तरह डाल कर उसका मरना मनाना शुरू करा।

पांचवीवार श्रीभगवान् ने उनको गुलगुला सा ऐसा खूबसूरत बेटा दिया जिसको देखकर सारा ही घर बागबाग होगया अवकी वार जमनादास ने मांगने वालों में खूब ही धन लुटाया और मिलनेचिलने वालों के वास्ते बढ़िया २ रण्डियों का नाच कराया, शौक़ीनों को सब तरह रिझाया और दावत में खूब तरमाल खिलाया, हिन्दू मुसलमानों के देवी देवताओं को भी मनाया और यात्रा का संघ भी चलाया, जमनादास की बहू बारबार यह ही कहती थी कि अब की वार सब ही तीर्थों की यात्रा बोली थी उन ही के प्रताप से बेटे का मुख देखना मिला है इस ही वास्ते धर्मचन्द इसका नाम धरा है, मैं तो जच्चाखाने से निकलते ही जाऊंगी और सब ही तीर्थों की यात्रा करके आऊंगी और मैं तो यू कहूं हूं कि जिन्होंने यह बेटा दिया है वह ही इसे पालेंगे भी और वह ही इसकी उमर भी करैंगे, हमें तो अब उन ही का सरना है और हमें क्या करना है,

इस पर पड़ोस की एक औरत ने समझाया कि जीवेगा भी बचेगा भी और उमर भी बहुतेरी होगी तू घबरावे मत पर एक बात मेरे कहे से करियो कि पांच बरस तक इसके बाल मत उतरवाइयो, जब पांच बरस का होजावे तब मात की जात देकर उस ही के थान पर बाल उतरवाइयो. जमनादास की बहू ने कहा कि हांजी यह तो मैंने पहिले ही सोच रखी है, कि तुम्हारी दया से जब यह पांच बरस का होजावेगा तो आधे बाल तो हस्तनापुर क्षेत्र पर उतरवाऊंगी और आधे बाल माता के थान पर कटवाऊंगी, मैं वारी उसके नाम पर माता का तो मुझे सब से पहिले खयाल है, मैं तो उसका मुर्गा भी छुड़वाऊंगी और घेंटा (सुअर का बच्चा) भी शिर के ऊपर को फिरवाऊंगी, और मैं तुमसे सच्ची कहूं मैं तो कलन्दर पीर पर भी आऊंगा और लौंडे के पिता को भी नंगे पैरों ले जाऊंगी, क्योंकि मैंने तो उनकी भी मिन्नत मान रखी थी, खबर नहीं जिसके प्रताप से हमको तो पांचवीं बार में यह पुत्र का मुख देखना नसीब हुआ है सो मैं तो सब को ही मनाऊंगी, हमारी तो सदा से सब ही ने प्रतिपाल करी है और अब भी सब ही प्रतिपाल करेंगे।

अध्याय १५

बच्चे के पैदा होने के एक ही महीने पीछे जमनादास ने यात्रा का संघ चलाया और बहुतों को अपने साथ लगाया, इस यात्रा में उसने बहुत ही उदारता दिखाई और संघ में यह आवाज़ लगाई कि जिस किसी भी यात्री के पास ख़र्च की कमी हो वह हम से रुपया लो और होसके तो घर जाकर वापिस दो और न हो सके तो न दो, मगर कौन उधार लेता था, सब ही के पास काफ़ी रुपया पैसा था, हर जगह जहां रेल में चढ़ना उतरना होता था वहां

पहिले ही से जमनादास रेल के बाबू से मिल लेता था और दो चार रुपये रिश्वत के दे देता था, इस कार्रवाई से वह यात्रियों का बहुत कुछ खर्च बचाता था और पचास टिकट लेकर ही सत्तर सत्तर अस्सी २ आदमी बिठा देता था, जहां से रेल में बैठना होता था वहां तो रेल का बाबू ही पिछले मुसाफ़िरों को उतार कर और उनको दूसरी गाड़ियों में ठूस कर कई गाड़ी ख़ाली करा देता था और उनमें इन यात्रियों को बिठा देता था और किसी दूसरे मुसाफ़िर को नहीं बैठने देता था, और आगे चल कर हर स्टेशन पर यह यात्री लोग ही गाड़ी के दरवाज़े पर खड़े होजाते थे और किसी को भी चढ़ने नहीं देते थे, जो कोई ज़ोर से चढ़ना चाहता था उसको धक्कों मुक्कों से दूर हटाते थे और अगर किसी कारण से कोई चढ़ ही जाता था तो आपतो गाड़ी में लेटे ही लेटे आते थे और उसको खड़ा खड़ा ही चलाते थे, ग़रज़ यह यात्री लोग सारे रस्ते रेल के मालिक ही बने रहते थे और अन्य मुसाफिरों को दुख देकर खुद मौज उड़ाते रहा करते थे, यात्रियों के पास, शुद्ध घी आटा दाल सूखी भाजियां, शुद्ध बना हुआ पकवान और बर्तन भांडे आदि माल अस्बाब इतना ज्यादा होता था जिसका महसूल बहुत ही कुछ देना पड़े लेकिन जमनादास की कोशिश और तदबीर से थोड़ी सी रिश्वत देकर इसका भी खटका दूर होजाता था और कुछ भी महसूल न देना पड़ता था, इस ही तरह जहां २ चुंगी लगती है और सब अस्बाब खोलकर दिखाना होता है वहां भी जमनादास की बदौलत यूं ही काम बन जाता था और बहुत ही थोड़ा महसूल सर्कार में जाता था, इस ही तरह जिन २ तीर्थ स्थानों पर यात्रियों पर भी महसूल लगता है और जीव सिरा कुछ देना पड़ता है वहां भी ऐसा ही गोलमाल किया जाता था और ५० की जगह २० का ही महसूल दिया जाता था।

ग़रज़ जमनादास के संघपति होने से संघवालों को बहुत ही कुछ सुबीता रहा और सब ही की यात्रा बड़े आराम से होगई, यहां तक कि घर आकर यात्रियों ने अपनी इन चालाकियों और बेईमानियों की बहुत ही कुछ डींग मारी, हमने यात्रा में क्या २ फरेब किया, किस २तरह का धोखा दिया, क्या २ दाव पेच खेला; क्या २ कुछ झेला, कहां २ लड़े, कहां २ अड़े, ग़रज़ सब ही कुछ सुनाते थे और अपनी ही बात ऊंची दिखाते थे, तीर्थ स्थान पर जाकर ठहरने के मकान के लिये आपस में लड़ना, अपने संघ के सिवाय दूसरे संघ के यात्रियों को तङ्ग करना, सदा विजय पाना और अपना काम बनाना, यह ही सब क़िस्सा कहानियां थीं जो यात्री लोग वापिस आकर सुनाते थे, मानो यात्रा से यह ही सबक़ सीखकर आते थे और सुनाते २ लट्टू हो हो जाते थे।

जहां इक्का या बैल गाड़ियों की सवारी होती थी वहां जमनादास और अन्य भी कई धर्मात्मा लोग पैदल ही चला करते थे और सवारी पर बैठना मंजूर नहीं किया करते थे, उस समय उनका यह कहना होता था कि बैल घोड़ा आदिक पशु भी हमारे ही जैसे जीव हैं जिन पर चढ़कर चलने से हिंसा का दोष लगता है, बेशक इस हिंसा को हम नित्य नहीं टाल सकते हैं पर यात्रा के समय तो हम इसे बहुत ही आसानी से बचा सकते हैं, यह कहकर यह धर्मात्मा लोग स्वयम् तो पैदल चलते थे और अपना असबाब उन गाड़ियों में लाद देते थे जिनमें इनके सङ्ग साथी बैठे होते थे, इस प्रकार पांच २ सवारियों के साथ दस २ सवारियों का असबाब लद जाने से बैलों से चला नहीं जाता था और गाड़ी वाला चिल्लाता था, लेकिन उसको यह ही समझा दिया जाता था कि यह कुल असबाब उन ही सवारियों का है जो तेरी गाड़ी में बैठे हैं, यात्रा को आये हैं, खाना दाना और भांडे बर्तन साथ लाये हैं, इस वास्ते यह सब असबाब तो इन ही के साथ जायगा, और खा पीकर

रास्ते में कुछ कम भी होजायगा, इस तरह बेशक उनकी यात्रा तो पैदल ही होजाती थी लेकिन ज्यादा बोझ लद जाने से बेचारे बैलों की खूब जान मारी जाती थी, ज्यादा बोझ से दबकर उन बैलों से चला नहीं जाता था तब गाड़ी वाला आर लगाता था और उनको सांटे मार २ कर चलाता था. तब यह धर्मात्मा लोग बड़ी दया दिखाते थे और गाड़ी वाले को समझा कर बैलों को मारने से बचाते थे, लाचार होकर गाड़ी वाले को यह ही कहना पड़ता था कि सेठजी अगर इन बैलों पर दया करनी थी तो गाड़ी ज्यादा बोझ से नहीं भरनी थी. बल्कि एक २ की जगह दो २ गाड़ी किराये करनी थी जिससे गाडी में थोड़ा बोझ रहता और बैल आपसे आप दौड़ा हुआ चलता, अब तो बिना मारे यह नहीं चलेंगे और रो पीटकर ही मंजिल तै करेंगे, यह सुनकर वह धर्मात्मा लोग चुप होजाते थे और इधर उधर टल जाते थे।

तीर्थ स्थानों पर बहुत से यात्री लड्डू बनाकर भी बांट देते थे और श्रीसम्मेदशिखर आदि बड़े २ तीर्थों पर तो अनेकों की तरफ़ से लड्डू बटने से एक २ यात्री के पास बीस २ लड्डू जमा होजाते थे, जिनको वह आगे चलकर हलवाइयों के हाथ बेच दिया करते थे पर तो भी बहुत से यात्री ऐसे ही होते थे जो चार चार पांच पांच आदमी होने पर भी लड्डू बटते समय दस दस आदमी बता दिया करते थे और यों दस दस ही लड्डू उड़ा लिया करते थे, जमनादास भी अपने बाल बच्चों समेत १२ ही जीव थे पर लड्डू वह सदा १८ ही लिया करते थे और अटरम सटरम करके इतने ही आदमी गिनवा दिया करते थे, यह लड्डू शुद्ध घी और निरखे चुगे अन्न के नहीं हो सकते थे इस वास्ते अधिक करके यात्रियों के खाने में नहीं आते थे और बाज़ार में ही बेचे जाते थे, शिखरजी पर जाकर जमनादास ने भी लड्डू बांटा था और खूब तरमाल लगाकर बहुत ही बढ़िया लड्डू बनाया

था इस वास्ते उसका खूब ही नाम हुआ था और वह सेठजी ही कहलाने लग गया था।

मकान पर आकर भी जमनादास ने यात्रा की खुशी में दिल खोलकर ज्योनार करी थी जिसमें हिन्दू मात्र को बढ़िया भोजन खिलाया था और खूब धन लगाया था, इस तरह उस बालक के कारण बहुतों की यात्रा होगई और जमनादास के सात हजार रुपये धर्म में लग गये, इस यात्रा के बीच में यात्री लोग खूब ही अभिमान में तुले रहते थे और शेखी से लाचार होकर गुस्से में भरे रहते थे, लोभ लालच भी सब ही किस्म का करते थे और मायाचारी भी सब ही प्रकार की बताते थे, वह आपस में भी लड़ते थे और अन्य लोगों से भी अड़ते थे, जिसकी वजह से हर वक्त एक न एक तरह का तमाशा ही बना रहता था और यात्रा का समय झगड़े टण्टों में ही कटता था, कभी २ तो तीर्थ पर जाकर भी दङ्गा होजाता था पर बहुत देर नहीं रहने पाता था और जल्दी ही निमट जाता था, जमनादास के सङ्घ ने सब ही तीर्थों की वन्दना तीन तीन बार करी और बहुत ही श्रद्धा के साथ करी इस वास्ते उनके तो मानो जन्म जन्म के पाप छै होगये और पुण्य के भण्डार भर गये, इन तीर्थों की तो मिट्टी के स्पर्श से ही मनुष्य का कल्याण होता है ऐसा श्रद्धान होने से जमनादास और अन्य भी कई धर्मात्मा लोग वहां से बहुत सी मिट्टी खोदकर लाये थे जिसमें से वह कुछ मिट्टी नित्य मन्दिरजी में रख देते थे और मन्दिर में आने वाले स्त्री पुरुष वह रज अपने माथे को लगाकर अपना जन्म सफल होना समझते थे।

अध्याय १६

जमनादास का यह लड़का मां बाप के घर का उजाला माना गया था इस वास्ते बहुत ही लाड़ चाव से पाला गया था उन्होंने उसको अपनी आंखों का तारा बना रक्खा था और हरदम अपनी छाती से ही लगा रक्खा था, वह बात बात पर वहम उठाते थे और ख्वामख्वाह ही उसको बीमार बनाते थे, रात दिन स्यानों को बुलाते थे, झाड़ फूक कराते थे, देव पितरों को मनाते थे, गण्डे तावीज़ पहनाते थे और तरह तरह के टोटके बनाते थे, जमनादास की चारों लड़कियां भी हरदम अपने भाई की सेवा में खड़ी रहती थीं, और ज़रा ज़रा सी बात पर भारी भारी मार सहती थीं, वह लड़का भी दो डेढ़ बरस का होने पर उन्हें खूब सताता था, बुड़कों काट खाता था, नाक कान नोच लेजाता था, और उनके बालों को पकड़ २ कर उखाड़ डालता था, अगर वह ज़रा भी मना करती थीं तो रोने लग जाता था जिस पर उन लड़कियों की बहुत ही ज्यादा कम्बख़्ती आती थी, और मां बाप के द्वारा उनकी खूब ही घड़न्त बनाई जाती थी, इसके अलावा उस लड़के के हाथों से भी बारबार उनके बाल फ़ड़वाये जाते थे, बदन में बुड़के भरवाये जाते थे और नाखूनों से शरीर नुचवाया जाता था, तब कहीं वह लड़का राज़ी होता था नहीं तो रो रो जान खोता था, वह लड़का इन लड़कियों को खाने पीने की कोई चीज़ वा खेल खिलौना कुछ भी लेने नहीं देता था बल्कि सब आप ही ले लेता था और जो चोरी छप्पे से इन लड़कियों को कुछ मिल भी जाता था तो वह तुरन्त ही छीन लेता था और तोड़ मरोड़ कर फेंक देता था, वह बेचारियां देखती की देखती ही रह जाती थीं और कुछ भी कहने नहीं पाती थीं, इस तरह इन लड़कियों को रात दिन अनेक प्रकार की मुसीबत सहनी पड़ती थी परन्तु किसी को उन पर

ज़रा भर भी दया नहीं आती थी, बल्कि जमनादास के बर्ताव से तो ऐसा ही मालूम होता था मानों इन लड़कियों को दुःख देना ही उसने धर्म समझ रखा था, यह चारों लड़कियां उसको कांटा सी खटकती थीं इस वास्ते वह सदा उनका मरना ही मनाता रहता था और इस बात की सिद्धि के वास्ते श्रीभगवान से भी प्रार्थना करता रहता था आखिर कुछ दिनों पीछे उसका मनोरथ पूरा हुआ और उसकी लड़कियों का मरना शुरू हुआ, चार साल के बीच में पहिली तीन लड़कियां मरगईं और खुशियों से घर भर गई, लेकिन इस बीच में और भी कोई औलाद पैदा न हुई इस वास्ते बहुत ही ज्यादा घबराहट पैदा हुई अनेक देवी देवियां मनाईं गईं और अन्त में साकुम्बरी देवी भी ध्याई गई, तब एक और भी पुत्र पैदा हुआ साकुम्बरीदास जिसका नाम हुआ, इसके तीन बरस पीछे चण्डी देवी के प्रसाद से एक और पुत्र हुआ जो चण्डीप्रसाद के नाम से विख्यात हुआ, इस प्रकार एक लड़की और तीन लड़के जमनादास के मौजूद रहे परन्तु व्याह होनेके पीछे साकुम्बरीदास का भी देहान्त होगया जिसकी विधवास्त्री मौजूद है और अपने जेठ देवरों के ही साथ रहती है, इस ही विधवा से जमनादास का कुमेल होगया था जिसके रञ्ज में जमनादास की पहिली स्त्री ने अपनी जान खोदी थी और जमनादास को दोबारा व्याह कराने का मौक़ा दे गई थी।

अपने तीनों भाईयों के बीच में बेचारी एक लड़की छिमा की जो दुर्दशा होती रही है और जिन जिन महाकष्टों को सहकर भी यह जिन्दा रही है उनको यह लड़की ही जानती है, हमारे क़लम में तो यह ताक़त नहीं है कि हम उन सब मुसीबतों का बखान कर सकें और उनके बखान से पाठकों का दिल दुखाने के सिवाय और कुछ फ़ायदा भी तो नहीं है, संक्षेप में इतना ही

लिखना काफ़ी है कि अपने भाइयों की सेवा में वह रात दिन खड़ी नलियों नाचती थी, उनका गू मूत उठाती थी, उलटा सीधा हुक्म बजाती थी, लात मुक्के खाती थी आंखों में आंसू भर लाती थी लेकिन बोलने नहीं पाती थी, मां बाप के हाथों भी खूब पीटी जाती थी, अच्छी तरह से उसकी हड्डियां तक तोड़ी जाती थीं और खाल भी उधेड़ी जाती थी फिर भी रोने नहीं पाती थी, खाने को अपने भाइयों का झूठा कूठा खाती थी, सूखे टुकड़े चबाती थी; बिना बिछौना खोरड़ी खाट पर सुलाई जाती थी, ओढ़ने को फटा पुराना पाती थी, गर्मी सर्दी की कुछ भी परवाह न की जाती थी, बीमार होने पर एक तरफ डालदी जाती थी, बल्कि बीमारी में भी काम में जोत दी जाती थी, दवा उसको कुछ भी नहीं दी जाती थी, कम्बख़्त तो खुद ही अच्छी होजाती थी वह और मरती मरती भी बच जाती थी।

आखिर लड़की के उठान होने पर जमनादास को उसके व्याह की सोच हुई और योग्य वर की खोज हुई, लेकिन जमनादास अभी नया ही अमीर बना था इस वास्ते शेखी में बहुत ही ज्यादा तना था उसको तो यह सबसे ही पहिला कारज परूंधना था, इस वास्ते वह सबसे ही बड़ा घर ढूंढता था, जिससे लड़कों की सगाई भी बड़े ही घरों की आवें और हम भी बड़े घरों में ही गिने जावें; वह चाहता था कि किसी बहुत ही बड़े अमीर घर सगाई हो और खूब ही धूम धड़क्के से व्याह हो, इस व्याह में दिल खोल कर रुपया लगाऊं जिससे मैं बहुत बड़ा अमीर कहलाऊं, इस वास्ते उसको कोई भी घर पसन्द नहीं आता था और कहीं भी रिश्ता नहीं हो पाता था लड़की जवान हुई जाती थी इस वास्ते लड़की की मां व्याह के वास्ते रात दिन जान खाती थी, मगर जमनादास अपनी आन के पूरे थे, वह किस बात में अधूरे थे, इस वास्ते सदा यह ही कहते थे कि कोई कूड़ा कड़कट तो है नहीं जो उठाकर बाहर

फेंक दूं, बल्कि यह तो अपनी आत्मा है, और अपने जिगर का टुकड़ा है इस वास्ते इसका तो सब सुख देखकर ही किसी को हाथ पकड़ाया जावेगा और इसके अपने कलेजे से अलग किया जावेगा।

इस ही बीच में सिकन्दरपुर शहर के करोड़पति सेठ लाला प्रसादीलाल के छोटे बेटे माताप्रसाद की स्त्री को तपेदिक की बीमारी होजाने की खबर लाला जमनादास को मिल गई, बस फिर क्या था, मानो जमनादास के तो मनचीते कारज ही होगये, अब उसने और कहीं खोज करनी ही छोड़दी और माताप्रसाद की स्त्री के मरने की इन्तजारी करने लगा, उसने इधर उधर फिरकर और लोगों से खूब ही पूछ गिनकर यह जोह लगाली कि न तो उस स्त्री के बचने की कुछ आशा ही है और न उसका कुछ इलाज ही किया जाता है इस वास्ते वह जल्द ही मर जावेगी और किसी अभागन लड़की के वास्ते जगह खाली कर जावेगी, बात यह थी कि खुद लाला प्रसादीलाल ही हद से ज्यादा अय्याश थे, शराब पीने और बाजारी औरतों को घर पर बुलाकर दिल बहलाने के सिवाय उनको और कुछ काम न था, साठ सत्तर लाख रुपया उनका सदा बाजार में कर्ज पर चढ़ा रहता था, इसके सिवाय लोगों का और भी बहुत कुछ काम उनसे निकलता था इस वास्ते सब लोग उनका यश ही गाते थे और वह सारी बिरादरी के सर्दार ही गिने जाते थे, बरस भर में एक जैन मेला भी होता था जिसका कुल खर्च लालाजी की कोठी से ही उठता था इस वास्ते रथ में भी सदा लाला प्रसादीलाल ही बैठते थे और इलाके भर में बड़े भारी धर्मात्मा गिने जाते थे, लाला प्रसादीलाल के दो बेटे थे जिनका चालचलन अपने पिता से भी ज्यादा खराब था, यह दोनों तो शराब पीकर हरवक्त नशे में ही चूर रहते थे और मां बहिन की भी पहिचान नहीं कर सकते थे, रण्डियां तो इनके साथ २ ही रहा करती थीं और

वग्गियों में इनके साथ ही बैठी फिरा करती थी, इसके सिवाय यह लोग पर स्त्री सेवन भी किया करते थे जिसकी वजह से बहुत ही ज्यादा बदनाम रहा करते थे, घर की स्त्री से यह लोग बहुत ही कम वास्ना रखते थे और अगर वह कुछ व.ल पड़ती थी तो लाठियों से खाल उधेड़ डालते थे या जूतियों से पिटवाते थे, इन दोनों में भी जो छोटे थे वह सबसे ज्यादा खोटे थे, उसकी स्त्री बेचारी अन्दर ही अन्दर घुली जाती थी लेकिन कुछ भी तदबीर नहीं कर पाती थी, इस ही वास्ते उसको दिक की बीमारी थी और मरने की इन्तजारी थी, वह घड़ी २ अपने दिन गिनती थी और यह ही भगवान से उसकी विनती थी कि मैं तुरन्त ही मर जाऊं और इन पापों से छूट जाऊं।

इधर जमनादास ने भी भगवान से लौ लगाई थी और अपनी अर्दास सुनाई थी कि किसी तरह जल्द ही यह लड़का खाली होजाय और मेरी लाड़ो बेटी का रिश्ता होजाय; वह विनती किया करता था और हाथ जोड़ २ कर कहा करता था कि अगर यह अवसर चूक जावेगा तो फिर ऐसा लायक वर फिर किसी तरह भी हाथ न आवेगा, गरज़ नहीं मालूम कि माताप्रसाद को दुखिया स्त्री की प्रार्थना भगवान ने सुनली थी जमनादास की अर्दास कबूल करली थी, या उस स्त्री का आयु कर्म ही पूरा होगया, जो हो पर वह बेचारी इस दुनियां से चली गई और किसी दूसरी लड़की को ऐसे ही त्रास भोगने के वास्ते जगह छोड़ गई, मातामसाद की उमर इस समय २२ साल की थी इस वास्ते छिमा के वास्ते वह बहुत ही योग्य वर था और धनवान तो वह ऐसा था कि अगर २२ की जगह ६२ साल का भी होता तो भी योग्य ही समझा जाता लेकिन जमनादास की स्त्री को बिरादरी की औरतों ने उसका सारा हाल सुनाया और लड़की को उसके साथ व्याहना नरक में डाल देने के समान बताया, यह सुनकर वह बहुत घबड़ाई लेकिन

जमनादास ने उसको बहुत ऊंच नीच सुझाई और आखरी बात यह बताई कि लड़की तो घूरी का कूड़ा है जो उठाकर बाहर कूड़ी पर ही फेंका जाता है और यह तो करोड़पति घर है लड़का जोगमजोग है, ऐसा वर तो नसीबों से ही मिलता है और बिरादरी की औरतों का तो डाह के मारे जी जलता है, इस ही वास्ते बातें बनाती हैं और तुझे बहकाती हैं इसके अलावा अमीर लोग तो हज़ार २ स्त्री व्याहते हैं, सब शास्त्र यह ही बात गाते हैं और फिर भी बड़े २ आदमी उनको अपनी लड़की देने के वास्ते अपना मन ललचाते हैं, इस घर में जाकर तो बेटी राज करेगी और स्वर्गों कैसे सुख भोगेगी, ऐसी २ बातों से जमनादास ने अपनी स्त्री को राजी कर लिया और सिकन्दरपुर पहुंचकर अपना रिश्ता मंजूर होजाने की युक्तियां लड़ाने लगा, रिश्ते वहां सैकड़ों ही आये थे जिनमें बहुत से रिश्ते जमनादास से दसों गुणा ज्यादा धनवानों के भी थे, लेकिन माताप्रसाद ने वह ही रिश्ता लेना चाहा जो आंखों से देखकर खुद उसको पसन्द आजावे, उन दिनों लड़की का दिखाना बहुत ही बुरा समझा जाता था इस वास्ते बहुतों ने तो लड़की का दिखाना ही मंजूर न किया और किसी ने दिखाई भी तो छिप छिपाकर बहुत ही दूर से दिखाई इस वास्ते माताप्रसाद के पसन्द न आई, लेकिन जमनादासने अपनी लड़कीको बीमार मशहूर करके गोविन्दपुर के मशहूर वैद्य को दिखाने के बहाने से गोविन्दपुर की सराय में ले जाकर ठहराई और माताप्रसाद को भी उस ही सराय में बुलाकर दोनों की खूब ही अच्छी तरह बातचीत कराई, लड़की जवान होचुकी थी, योवन खिल गया था नख सिख भी बुरा नहीं था, उसका भोलापन बहुत ही ज्यादा ग़ज़ब ढारहा था, इस वास्ते माताप्रसाद को वह लड़की पसन्द आगई और सगाई मंजूर होगई, फिर जल्दी ही व्याह की तारीख भी ठहर गई और बड़े धूम धड़के के साथ बारात भी आगई, जमनादास ने भी खूब दिल खोलकर व्याह

किया और बड़ी खूबसूरती से बारात का आगा लिया, माता-प्रसाद ऐसा पक्की शराबी था कि वह इन दिनों भी शराब पीने से नहीं चूका था, यहां तक कि फेरों के वक्त भी उसने इतनी पी रक्खी थी कि चलते में पैर लड़खड़ाते थे, बोलने में जबान तुतलाती थी और मुंह से भी शराब की बू आती थी, लोगों ने अगरचि मुंह पर कुछ नहीं कहा लेकिन चुपके ही चुपके इस बात का बहुत ज्यादा चर्चा किया कि जमनादास खुद तो ऐसा धर्मात्मा बनता है कि क़दम भी फूक २ कर ही धरता है और जो किसी का पल्ला भी छू जाय तो सौ २ घड़े पानी से न्हाता है पर जमाई ऐसा खोजा है जो फेरों पर भी पीकर ही आया है।

इस व्याह में अमीरबच्चा व्याहने आया था, अनगणित बारात चढ़ाकर लाया था, रण्डियां तो हिन्दुस्तान भर से ऐसी छांट २ कर मंगाई थीं कि जिन्होंने दूर २ तक अपनी धाक मचाई थी, खलकत दूर २ से उनका गाना सुनने को टूक पड़ी थी और शहर में तिल धरने को भी जगह नहीं रही थी, इस व्याह में जमनादास ने भी खूब ही उदारता दिखाई, बहुत बढ़िया पत्तल बनाई और दिल खोलकर बारात जिमाई, दहेज भी उसने अपनी बेटी को ऐसा बढ़िया दिया जो आस पास के लोगों ने इससे पहिले देखा न सुना, और क्यों न दें एक ही तो बेचारे के बेटी थी जो बेटों से भी ज्यादा लाड़चाव से पाली थी, ऐसी ही ऐसी बातें कहकर रुखसत के वक्त जमनादास रोता था और आंसुओं से मुंह धोता था, आखिर छाती पर पत्थर बांधकर उसने अपनी प्यारी बेटी को डोले बैठाया और डोला विदा करके रोता हुआ घर आया।

अध्याय १७

अफ़सोस है कि जमनादास का डोला विदा करते समय रोना मनमुख का ही रोना होगया, क्योंकि गौना होने पर जब वह दोबारा ससुराल में पहुंची तो नये नये चाव में कुछ दिन तक माताप्रसाद उसके पास आया, पर उसके मुख की महादुर्गन्ध ने इस बेचारी को बहुत सताया, शराब की सड़ांध के मारे इसका मग़ज़ फटा जाता था मगर कुछ भी करते धरते बन नहीं आता था, दो चार दिन तो इस बेचारी ने जिस तरह हो सका इस कष्ट को सहा-फिर उसके पैरों में पड़ कर और हाथ जोड़कर यह कहा कि बाहर तो तुम जो चाहो करो और जो चाहो पिओ पर इतनी कृपा मुझ दासी पर भी किया करो कि यहां शराब पीकर न आया करो, क्योंकि मुझ से उसकी बू सही नहीं जाती है बल्कि उसकी दुर्गंधी से जान भी निकली जाती है।

उस बेचारी भोली लड़की के मुंह से इतनी बात का निकलना था कि माताप्रसाद आग बगूला होगया, उसने उस निर्दोष बालिका को ऐसा मारा कि सारे शरीर में लोथड़े लटक गये, बदन सूज गया, नील पड़ गये और कहीं २ खून भी निकलने लगा, माताप्रसाद ने इतने ही पर बस नहीं किया बल्कि उस ही वक्त उसको उसके बाप के यहां रवाना कर दिया, यहां बापके घर आने पर लोगों ने अनेक बात बघूरीं, गड़े कोयले उछाले, और जमनादास के दोष निकाले, जमनादास भी लोगों के सामने अपनी किसमत को बहुत रोया और आंसुवों मुंह धोया, फिर कुछ दिन पीछे बात भूल भुलय्यां होगई और लड़की यहीं रहने लग गई, दोचार ही महीने पीछे माताप्रसाद ने एक और व्याह करा लिया और अपने जीते जी न तो इस बेचारी छिमाको खुद ही बुलाया और न उसको अपने यहां आने ही दिया, जमनादास ने हज़ार कोशिश की और

बहुत कुछ तदबीरें करीं जिससे उसकी लड़की ससुराल पहुंच जाये मगर उसकी एक भी न चली।

अफ़सोस है कि माताप्रसाद बहुत ही ज्यादा शराब पीता था जिससे उसका फेफड़ा गला जाता था इस वास्ते वह ज्यादा दिनों तक न जी सका और दो ही बरस पीछे मर गया, उसके मरने पर यह बेचारी छिमा भी वहां गई, और तेरहवीं के दिन ग्यारह ग्यारह हज़ार रुपया नक़द और पांच पांच हज़ार रुपये का जेवर माता-प्रसाद की दोनों विधवाओं को रिश्तेदारों से रँडापे का मिल गया, व्याह में तो छिमा को पचास हज़ार रुपये का ज़ेवर पड़ा था लेकिन जिस समय माताप्रसाद ने उसको मारकर निकाल दिया था उस वक्त उसके बदन पर दस ही हज़ार रुपये का जेवर था, बाक़ी सब जेवर उसकी सास के पास धरा था, इस वास्ते नि-काले जाने पर दस ही हज़ार रुपये का जेवर उसके पास रह गया था और उसका बाक़ी सब जेवर दो महीने पीछे उसकी सौक को पड़ गया था अब रँडापे में छिमा के पास पांच हज़ार रुपये का जेवर और ग्यारह हज़ार रुपये नक़द आगये, इस वास्ते उसके पास कुल १५ हज़ार रुपये का जेवर और ग्यारह हज़ार रुपये नक़द होगये; रांड़ होजाने पर अब इस बेचारी को यह उम्मेद होगई थी कि अब मैं भी ससुराल में रह सकूंगी और मेरा और मेरी सौक का जेवर भी आधों सूध कर दिया जावेगा, लेकिन इसकी और इसकी सौक की एक घड़ी भी न पटी बल्कि उसके ससुर और जेठ ने भी इसकी सौक की ही तरफ़दारी करी जिससे इसका वहां ठहरना ही भारी होगया और उसको अपने ग्यारह हज़ार रुपये नक़द और १५ हज़ार रुपये के ज़ेवर पर ही सबर करना पड़ा और अपनी आबरू बचाकर अपने बाप के ही यहां भाग आना हुआ, तब से यह बेचारी यहीं रहती थी और ज्यों त्यों अपने दिन पूरे करती थी, अपनी मां के जिन्दा रहने तक तो इस बेचारी की

कुछ अच्छी कटगई पर जब से वह मर गई और इसके पिता ने दूसरा ब्याह करा लिया तब से यह बेचारी बहुत ही सख्त मुसीबत में फँस गई और अपनी भावजों की शरण में रहकर और उनकी टहल टकोरी करके ही अपने दिन काटने लगी थी कि इस की किस्मत ने इसको इस दशा में भी न रहने दिया और इसके भाइयों के सब अस्बाब की कुर्की होजाने से अब इसको फिर ससुराल में ही चले जाने का इरादा करना पड़ा।

इस लड़की का जेवर और नक़द जो जमनादास ने हजम करलिया था वह वापस देना न पड़े इसलिये जमनादास तो इसको ससुराल जाने से डराता था और इसको अपने ही यहां रखना चाहता था लेकिन इसने तो अब ससुराल जाने का ही ख़याल जमाया था और अपने मन को समझाया था कि इत्तफाक़ से एक दिन अगर जेठजी ने मेरे साथ बदकलामी भी करी है और भूंडी भली भी कही हैं तो क्या हमेशा थोड़ा ही ऐसा हुआ करता है और फिर जब तक मेरी सास जिन्दा है तब तक मुझ को क्या डर हो सकता है और सास भी जिन्दा न हो तो भी वहां तो मैं अलग ही मकान में रहूंगी जहां नौकर बांदियों के सिवाय कोई मेरे पास तक भी फटकने न पावेगा और मेरा सारा समय धर्म ध्यान में ही कट सकेगा, ऐसा २ विचार करके उस बेचारी ने बहुत ही सिर पटका, बहुत रोई झिकाई और अपने पिता के सामने धर्म की दुहाई मचाई और कहा कि अगर मेरी नकदी सूद पर चढ़ी हुई है तो मेरा जेवर ही वापस दे दिया जावे और अगर सचमुच मेरा जेवर बेच ही दिया है और उसका रुपया भी ब्याज पर ही दे दिया है तो मुझे मेरे कुछ रुपये के हुंडी पर्चे ही दे दिये जावें जिनको लेकर मैं ससुराल चली जाऊं और वहां रहकर अपनी आयु के बाकी दिन बिताऊं, लेकिन उसके बाप ने उसकी एक भी न सुनी और उसको यहीं रहने के लिये मंजूर

करी, उसके भाइयों ने अपने अस्बाब की कुर्की होजाने के पीछे अपनी स्त्रियों को तो उनके बापों के यहां भेज दिया था और खुद किसी रोजगार की फ़िकर में किसी दूसरे शहर को चले गये थे इस वास्ते लाचार इस लड़की को अब अपने बाप की नई स्त्री के पास ही रहना पड़ा जिसने अव्वल ही दिन से इसको हद्द से ज्यादा तंग करना शुरू किया, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि कोई दूसरा उसके पास रहे जिससे उसकी मौज में फ़रक पड़े, आख़िर जब इस बेचारी छिमा का नाक ही में दम आगया और किसी तरह भी यहां उसका निभाव न होसका तब वह रुपया ज़ेवर और हुंडी पर्चा लिये बिदून ही ससुराल को चली गई, वहां जो कुछ उस पर बीती वह ऐसी दर्द भरी व्यथा है जिसके सुनाने का इस समय तो हमको साहस नहीं होता है, मौका लगा तो फिर कभी सुनायेंगे और पाठकों के दिल को दुखा कर ऊंची ज़ातियों के सुधार की दुहाई मचायेंगे।

अध्याय १८

जब छिमा अपनी ससुराल को जारही थी तो उस समय तो अपने बाप को ही कोसती जाती थी कि हत्यारे तूने बाप बनकर भी मुझ से किस जन्म का बदला लिया कि जन्म भर मुझे ऐसा त्रास दिया, बचपन में जो दुःख तूने मुझे दिये हैं ऐसे तो किसी कसाई के हाथ से गाय भैंस ने भी नहीं सहे हैं फिर अपनी मान बड़ाई के लालच में और एक करोड़ पति घर में अपना दख़ल होजाने के लोभ में तूने जान-बूझ कर मुझको ऐसे पापियों के यहां व्याही जो रंडीबाज़ी और शराबख़ोरी को ही अपना धर्म समझते हैं और रात दिन नशे में चूर पड़े रहते हैं, तू तो बहुत बड़ा धर्मात्मा बनता

है और फूंक २ कर पैर धरता है, पर मेरे व्याह के समय तेरा यह धर्मात्मापना कहां चला गया था जो मुझे ऐसे पापियों को सौंप देना पसन्द किया था, सच तो यह है कि तू महापापी है धर्म का तो लेश भी तुझ में नहीं बाकी है, इस ही वास्ते तू ने तो यह सोचा था कि इन अधर्मियों और कुचारियों को अपनी बेटी देकर मैं उमर भर तक उनको लूटता रहूंगा और हज़ार बहाने बनाकर और मकर फरेब चलाकर लाखों का धन खैंचता रहूंगा मगर कमबख्त वहां तो सिर मुड़ाते ही औले पड़ गये इस वास्ते तू तो उस घर में घुसकर अपने हाथ क्या रँगता बल्कि उससे पहिले मेरा ही बदन खून में रँग गया और मुझे मारकर निकाल दियागया और चट दूसरा व्याह कराकर मेरी जगह सौकन को ला बिठाया गया फिर थोड़े ही दिन पीछे जो रही सही आशा थी वह भी जाती रही और मैं नाममात्र की सुहागन सचमुच की रांड बनादी गई, पर हाय अफ़सोस कि उस घर में तो मैं रांड होकर भी न ठहर सकी और बरस दिन भी अपनी सौकिन के साथ निभा कर न रह सकी, हाय! मैंने तो यह समझा था कि मुझ दुखियारी और कर्म्मों की मारी को अब तो मेरा बाप छाती से लगावेगा और कुछ तो मुझ पर तरस खावेगा, इसके सिवाय मैं तो खाली हाथ भी नहीं आई थी बल्कि ग्यारह हज़ार रुपये नक़द लाई थी, उनका तो सूद ही इतना होता है कि जिससे एक कुनबा भलीभांति पलता है पर मैं मैं तो रूखा सूखा खाती थी और दिनभर टहल बजाती थी, खैर मेरी मां ने तो कुछ मुझे निवाही भी मेरे दर्द भरे दिल को कुछ ढाढ़स बँधाई भी, पर यह पापी हत्यारा मेरा बाप तो ऐसा कठोर निर्दई और कुकर्मी है कि इसने रञ्चमात्र भी मेरे रँडापे का खयाल न किया और बिल्कुल ही बे परवाही के साथ अपने विषय भोगों में लगा रहा, फिर एक और भी बिजली इस पर पड़ी यानी मेरे जवान भाई साकुम्बरीदास का देहान्त होगया, यह ऐसी कहरी

जहरी मौत थी कि सुनने वालों को भी छाती फटकती थी पर इस पाप के हृदय पर तो इस मौत ने भी कुछ असर न किया बल्कि वह तो पहिले से भी ज्यादा पापी होगया, यानी हया शरम सब छोड़कर और धर्म कर्म से मुंह मोड़ कर अपने बेटे की विधवा से ही फँस बैठा अपने पाप कर्मों में अन्धा होकर शायद वह समझता होगा कि उसका यह कुकर्म लुका छिपा ही रहा है और उसका यह भेद किसी पर भी नहीं खुला है मगर उस पापी को यह खबर नहीं है कि घर का तो बच्चा २ ही इस बात को जानता है बल्कि बाहर भी बहुत कुछ इसका चर्चा है, मगर आज कल तो समय ही कुछ ऐसा खोटा आ रहा है कि बड़ी जातियों में ऐसे कुकर्मों का कुछ भी गिला शिकवा नहीं रहा है; इस ही वास्ते बिरादरी के लोग लुक छिप कर तो ऐसे कुकर्मियों का चर्चा कर लेते हैं और हँसी मज़ाक़ के तौर पर नाम भी धर लेते हैं लेकिन मुंह पर कोई कुछ नहीं कहता है और न ऐसे कुकर्मियों को किसी प्रकार का कोई दंड ही देता है बल्कि वैसी ही उनकी इज्ज़त बनी रहती है और बिरादरी में सब तरह से उनकी पूछ गिन होती रहती है, आग लगे ऐसी ऊंची जातियों को और सत्यानाश जाय ऐसी पञ्चायतियों का जहां जवान २ बेटे की बहुवों और जवान २ बेटियों के रांड बैठी रहने पर भी बुड्ढे बाबा एक छोटी सी छोकरी ब्याह लाते हैं और बेखटके मौज उड़ाते हैं, वह अपनी रांड बहू बेटियों की छाती पर मूंग दलते हैं और ऐसा करते हुए ज़रा नहीं दहलते हैं, मैं नहीं जानती कि मेरा यह निर्दई बुड्ढा बाप क्या मुझ को मिट्टी ही की मूर्त्ती समझता था या बिल्कुल शून्य हृदय ही मान बैठा था जो कि मेरी आंखों के सामने ही अपनी नई बहू से लाड प्यार करने लग जाता और मुझ से भी रात दिन उसकी टहल टकोरी करवाता था और उसके नखरे उठवाता था खैर यह सब कुछ हुआ तो हुआ पर इस पापी ने तो मेरा रुपया और जेवर भी

हज़म कर लिया और मुझ अभागनी को टकासा जवाब दे दिया, मैं इनको क्या कोसूं और क्या दुर्वचन कहूं क्योंकि यह मेरा बाप है इस वास्ते मैं तो अपने आपे को बहुत ही कुछ थामती हूं और मुंह को लगाम लगाती हूं पर अपने अंदर के हृदय को क्या करूं जिसमें से आह निकलती है और मेरे कलेजे को फूंके डालती है, हे भगवान! क्या तेरे घर में यह ही इनसाफ़ है कि मेरे बाप जैसा पत्थर का हृदय रखनेवाले निर्दई मनुष्य भी धर्मात्मा कहलावें और तेरे परम भगत समझे जावें, अगर तेरे भगतों की यह ही निशानी है और ऐसों ही से तू राजी है तो मेरी तो तुझे दूर से ही दंडवत् है पर शास्त्रों में तो मैं यह ही सुनती आरही हूं और अपने हृदय को भी यह समझा रही हूं कि पाप पुण्य तो अपने परिणामों के ही अनुसार लगता है और अच्छी बुरी नियत के मुवाफ़िक ही फल मिलता है इस वास्ते भगवान् तो ऐसे आदमी से हर्गिज़ भी राज़ी नहीं होता है जो उसकी पूजा पाठ तो बहुत कुछ करता है पर हृदय को अपने कठोर ही बनाये रखता है जो मान माया लोभ क्रोध के वश में होकर सब तरह की बेईमानी और दगाबाज़ी ही करता रहता है और अपने स्वार्थ में अंधा होकर किसी दूसरे के नफ़े नुकसान को बिल्कुल भी नहीं तकता है, इस वास्ते हमें तो ऐसा ही मालूम होता है कि मेरे बाप की पूजा पाठ तो कुछ भी काम नहीं आनी है बल्कि इसकी नाव तो एकदम ही डूब जानी है क्योंकि वह तो झूठमूठ का ही धर्मात्मा बनता है और बाहर की शुच क्रियायें करके ही लोगों को ठगता है, असल में धर्म का तो एक रत्ती भर भी अंश उसमें नहीं है बल्कि उसके अंदर तो पापों की ही भारी पोट भरी है, मेरा रुपया और जेवर मार कर जब उसने अपनी बेटी का ही कलेजा निकाल लिया है और उसके प्राणों को हर लिया तब वह तो बहुत ही बढ़िया निर्दई है ऐसी दशा में उसका आठें चौदश को हरी न खाना और कंदमूल को हाथ

भी न लगाना क्या दया धर्म के अनुसार कहा जा सकता है, इस ही तरह उसकी सब शुचि क्रिया और नहाना धोना भी धर्म नहीं माना जा सकता है, शास्त्र में तो साफ़ ही कहा है कि अगर नहाने धोने ही का नाम धर्म होता तो समुद्र की मछलियां ही धर्मात्मा होतीं और कंदमूल और साग सब्जी के न खाने से ही अगर कोई धर्मात्मा गिना जाता तो बहुत से गरीब कंगाल ही धर्मात्मा समझे जाते जिनको सूखा टुकड़ा भी मुश्किल से ही मियस्सर आता है और सारी उमर भी जिनको साग सब्जी खाने को नहीं मिलता है, सुना है कि काशी के बहुत से ब्राह्मण मांस मच्छी खाते हैं पर किसी दूसरे से अपना कपड़ा तक भी नहीं भिड़ाते हैं और अपने ही हाथ का अन्न जल खाते हैं और इस ही छूतछात के कारण परम धर्मात्मा कहलाते हैं परन्तु यह तो सब बाहर के दिखलावे हैं और दुनियां को बहकाने के खेल तमाशे हैं। धर्म तो अपने परिणामों के सुधारने शील सन्तोष के पालने और मान माया लोभ क्रोध आदिक कषायों के घटाने में हैं सो इनकी तरफ़ तो कोई कुछ भी ध्यान नहीं देता है बल्कि सब कोई बाहर का ही ढौंग भरता है, मैं भी तो औरों को ही दोष देती हूं और अपनी कषायों को नहीं दबाती हूं, मैं भी अपने बाप के ही ऐबों को क्यों बखानूं बल्कि अपने ही परिणामों को क्यों न सँभालूं मुझे तो यह चाहिये कि जो कुछ बीत चुकी है उसे तो बिल्कुल ही अपने हृदय से भुला दूं आगे को जो कुछ मुसीबत आवे उसको शांति के साथ निवाहलूं और अपने परिणामों को मलीन होने से बचालूं जिससे यह जन्म भी अच्छी तरह से बीत जावे और आगामी को भी मेरा जीव सुख पावे, ऐसा २ विचार करती हुई वह ससुराल पहुंच गई और वहां जो कुछ भी त्रास उसको दिये गये उन सब को सहन करके अपने परिणामों को दुरुस्त करने में लगी रही।

अध्याय १९

अब बेचारी मुसीबत की मारी राजरानी, का हाल सुनिये कि सरकारी जासूस ने पूरी पूरी छानबीन करके इस बात की रिपोर्ट करदी कि राजरानी पर गर्भ गिराने का मुक़द्दमा बिल्कुल ही झूंठा लगाया गया है उसको न कभी गर्भ रहा है और न उसने गर्भ गिराया है, बल्कि एक दूसरे ही गांव में अचानक एक चमारी का गर्भ गिर गया था जिसने उसको कूड़ी पर फेंक दिया था, जमनादास के कहने से पुलिस का सिपाही उस गर्भ को उठा लाया और उसका इल्ज़ाम इस बेचारी के शिर लगाया, इस ही तरह राजरानी के यहां चोरी भी जमनादास ने ही कराई थी, और शेरसिंह का बदमाशी में चालान होजाने की चाल भी उस ही ने चलाई थी, कलक्टर साहब ने जासूस की इस रिपोर्ट पर गर्भ गिराने का मामला तो खारिज़ कर दिया और राजरानी और शेरसिंह की पूरी पूरी तसल्ली करदी कि अब उन पर कोई भी आदमी किसी तरह की ज्यादती न कर सकेगा; इस वास्ते वह तो अब बड़े इत्मीनान से गांव में रहने लगे हैं और भोंदू चमार की सहायता से खेती करके सब कुछ पैदा करते हैं और सुख चैन से रहते हैं, मगर अब कल कलक्टर साहब ने कप्तान साहब को यह हुक्म दिया है कि वह जमनादास की इन सब करतूतों का सबूत इकट्ठा करके फौजदारी में उसका चालान करावें और उसको माकूल सज़ा दिलवावें; इस वास्ते अब पुलिस के लोग कप्तान साहब के हुक्म से इन मुक़द्दमों के बांधने में ही लगे हुए हैं और जमनादास और उसके साथियों का चालान करने ही वाले हैं, जमनादास को भी इन सब बातों की पूरी पूरी खबर मिल चुकी है इस वास्ते वह भी आजकल रात दिन इस ही के तोड़जोड़ में लगा हुआ है और रुपये को पानी की तरह बहा रहा है और ठीकरों की तरह

से फेंक रहा है, मामला वेढब है लेकिन जमनादास भी कुछ थोड़े पानी में नहीं है इस वास्ते देखिये क्या होता है और किस करवट ऊंट बैठता है।

अभी हम इस मामले को यहीं छोड़ते हैं और जमनादास के वेटों का जिकर सुनाते हैं कि डिगरीदारों ने जो उनका सब माल अस्वाब कुरक़ करा दिया था और वेटों ने उस माल का जो झगड़ा अदालत में किया था उसकी वावत अदालत से यह तै पाया कि जमनादास और उसके सब वेटे इकट्ठे ही रहते हैं और इकट्ठा ही उनका सब माल अस्वाब है इस वास्ते जमनादास के ऊपर की डिगरियों में यह माल जरूर कुरक होना चाहिये और नीलाम होजाना चाहिये क्योंकि जिस रुपये की वावत जमनादास के ऊपर यह डिगरियां हुई हैं वह रुपया वाप वेटों के इकट्ठे ही कारखाने में लगा है इस वास्ते उनका सब कारखाना उसके देने का जिम्मेदार है, इस कुर्की से जमनादास के वेटों की बहुओं का जेवर बचा हुआ था क्योंकि स्त्रियों का जेवर किसी तरह भी कुर्क नहीं हो सकता था, वह चाहते थे कि व. जेवर गिरवी रख कर कोई कार. वार चलावें और दो पैसे की आजीविका वनावें लेकिन उनको वहुत ही जबरदस्त खौफ़ इस बात का लगा हुआ था कि उनके इस माल को भी डिगरीदार कुर्क करा लेंगे और अदालत में भी जो चाहेंगे साबित करा देंगे, इस वास्ते वह कोई भी कारवार शुरू न करते थे और खाली ही फिरा करते थे, ज्यादा लाचार होने पर उन्होंने यह भी चाहा कि कोई दूकानदार उनको अन्दर ही अन्दर साझी वनाले और जाहिर में दूकान को अपने ही नाम से चलाले, या कोई उनको अपनी दूकान पर नौकर ही रखले, लेकिन कोई भी उनकी इन बातों पर राज़ी नहीं होता था वल्कि सब कोई इस ही वात से डरता था कि इन लोगों के हमारी दूकान पर बैठने से या ज़रासा भी कोई लगाव होजाने से डिगरीदार लोग हमारा

भी माल कुर्क करा देंगे और हमारे माल को भी इन ही का माल बता देंगे, इस वास्ते इन बेचारों को सिवाय इसके और कुछ न सूझा कि उन्होंने औरतों को तो उनके बाप के यहां भेजा और खुद आजीविका की तलाश में परदेश को निकल गये, लेकिन जहां कहीं भी यह लोग जाते थे, अनजान होने के कारण कोई माकूल रोज़गार नहीं पाते थे और छोटा मोटा रोज़गार इनके पसन्द नहीं आता था इस वास्ते इनको सब जगह से खाली ही लौटना पड़ जाता था, आखिर ज्यादा तङ्ग होकर यह लोग अपने चचा मथुरादास के पास गये जो इस समय मुरादनगर में रहता था और लखपती सेठ बना बैठा था, उसने इनको अपने मकान पर टिकाया, धीरज देकर समझाया और अपने पास से कुछ रुपया देकर इनका रोज़गार चलाया, लाला मथुरादास के भतीजे होने के कारण शहर के लोगों ने भी इनका बहुत कुछ एत-बार किया और हरकिस्म का माल उधार दिया इस वास्ते इनका अच्छी तरह काम चलने लगा, तब इन्होंने अपनी स्त्रियों को भी वहीं बुला लिया और मथुरादास से अलग रहना शुरू कर दिया।

दूसरा भाग।

अध्याय २०

पाठकगण आश्चर्य में होंगे कि वह मथुरादास जो तीन रुपये महीने पर एक दूकानदार के यहां पड़ा रहता था और उसकी टहल टकोरी करके ही अपना पेट भरता था वह किस तरह लखपती सेठ बन गया, इस वास्ते अब हम उस ही का हाल सुनाते हैं और संसार की विचित्रता दिखाते हैं कि बहिन रामकली को एक साठ बरस के बुड्ढे के हाथ बेच देने से नाराज़ होकर तो इसने अपने मां बाप और भाई से अलग होकर और इस अन्याय से प्राप्त किये हुए धन को लात मार कर और बहिन के बदले में अपना व्याहा जाना नामंजूर करके एक बनिये के यहां तीन रुपये महीने की नौकरी पसन्द की थी जहां वह ईमानदारी से रहता था और रात दिन उसकी ख़िदमत गुज़ारी करके आनन्द से दिन बिताता था, लेकिन फिर जब जमनादास चोरी का माल लेने लगा और अनेक प्रकार के धोके देकर लोगों का माल हरने लगा और साथ ही इसके मन्दिरजी में जाकर, पूजा पाठ करके और शुच क्रिया का बहुत ज्यादा ढोंग बांध कर बगुला भगत भी बनने लगा जिसका चर्चा निन्दा के तौर पर सब ही जगह रहने लगा तो मथुरादास को और भी ज्यादा शरम आई और उसने उस शहर में रहना ही पसन्द न किया और परदेश निकल गया, आप जानते हैं कि चाहे कोई कैसा ही ईमानदार हो पर अनजान को कौन नौकर रखता

है, इस वास्ते कई शहरों में घूमते फिरने पर भी मथुरादास को कहीं नौकरी न मिली, इस वास्ते अव्वल तो उसने टोकरी ढोनी शुरू करी और मकानों की चिनाई पर नहर की खुदाई पर या किसी सड़क की कुटाई पर मिहनत मज़दूरी करली, फिर कुछ दिनों पीछे लोगों से कुछ जानकारी होजाने पर एक हलवाई की दूकान पर कमेरा रह गया, हलवाइयों के नौकर बहुत ही ज्यादा चटोरे होजाते हैं, हर वक्त मिठाई चुरा चुरा कर खाते हैं, लेकिन यह बेचारा एक भी कण नहीं उठाता था और बिना दिये कुछ नहीं खाता था, हलवाई ने उसकी इस बात से खुश होकर उसको बहुत ही प्यार से रक्खा और बड़ी कोशिश से उसको हलवाई का सब काम सिखाया और फिर अपनी जगह बेचने बिठाया, इस बीच में २०-३० रुपया उसकी तनख़्वाह से बचकर उसके पास जमा भी होगया इस वास्ते अब उसने अपने मालिक की सलाह लेकर बहुत ही बढ़िया २ मिठाइयों और नमकीन चीजों का ख्वान्चा बनाया उसमें शुद्ध देशी खांड ताजा आटा और अच्छा ताज़ा घी लगाया, उसका यह ख्वाञ्चा सब ही को पसन्द आया और उसको सब कुछ हाथ आया, सुबह से दोपहर तक तो वह ख्वाञ्चा बनाता था और दोपहर से शाम तक तमाम शहर में फिर कर उसे बेच लाता था, जो बच रहता था उसको अगले दिन ताज़े माल में नहीं मिलाता था, बल्कि बासी माल के नाम से अलहदा ही रखता था और कुछ सस्ता ही देता था, इसके अलावा वह जानकर बेजान, और मर्द, बूढ़े बच्चे सब को एक ही भाव देता था और ठीक ठीक ही देता था जिसकी वजह से शहर में उसके ख्वाञ्चे का बहुत ही ज्यादा ऐतबार होगया और दूसरे ख्वाञ्चे वालों से कई गुना ज्यादा बिकने लगा, इसमें उसको बहुत ही ज्यादा मुनाफ़ा हुआ और एक ही बरस में खापी कर ढाई सौ रुपया बच रहा, अब उसने उस ही हलवाई की सलाह से ख्वाञ्चा

छोड़कर हलवाई की दूकान करली और उस ही तरह शुद्ध देशी खांड, ताजा आटा और खरा घी लगाकर सब चीज़ें बनाने लगा, ख्वांञ्चा लेकर गली गली घूमने से सारे शहर में उसकी बनाई चीजों की साख पहिले ही से अच्छी तरह बैठ चुकी थी इस वास्ते खरी चीज़ लेने वाले उस ही की दूकान पर आने लगे और बिना भाव किये ही माल तुलवाने लगे, थोड़े ही दिनों में उसकी दूकान की ऐसी धाक बैठी कि उसकी बनाई हुई मिठाई सौगात के तौर पर बाहर भी जाने लगी और बाहर से बड़ी ख्वाहिश के साथ मँगाई भी जाने लगी इस दूकान से उसको पहिले ही साल में १२००) रुपये का मुनाफ़ा हुआ और दूसरे सालमें ढाई हज़ार रुपया बचा, अब वह शुद्ध देशी खांड भी थोक रखने लगा जो बोरियों की बोरियां निकलने लगीं और दूर दूर तक जाने लगीं, उस शुद्ध खांड का बूरा भी वह अपनी दूकान पर बनवाता था जो सारे ही शहर में जाता था, अब उसको चार हज़ार रुपये साल बचने लगा और काम खूब चलने लगा, थोड़े दिनों पीछे उसने हलवाई की दूकान भी छोड़ दी और गुड़ शकर और खांड की आढ़त की दूकान करली।

उसके कारखाने की इस तरह बढ़ती देख कर और उसको सब तरह से सुशील और सज्जन परखकर अब एक भाई ने अपनी लड़की भी उसको व्याह दी, इस तरह उसका घर भी बस गया और वह हर तरह से सुखी होगया, पीछे से उसने अपनी दूकान पर और भी बहुत चीज़ों की आढ़त शुरू करदी और अपनी ईमान-दारी और सचाई को आखीर वक़्त तक निबाही जिसकी वजह से उसकी दूकान दिनदूनी रातचौगुनी बढ़ने लगी और दस-बारह हज़ार रुपये साल की बचत रहने लगी, आहिस्ता २ वह हुंडी पर्चा भी करने लगा और रुपया सूद पर भी देने लगा, लोग बाग भी अपना रुपया उस ही की दूकान पर जमा कराने लगे और वहीं अपना एन-

वार जमाने लगे, फिर उसने आढ़त की दूकान भी छोड़ दी और सिर्फ़ साहूकारा ही करने लगा। जिससे उसको बीस पच्चीस हज़ार रुपया साल बच जाता था और वह ईमानदार सेठ कहलाता था।

अध्याय २१

जमनादास के बेटे साकुम्बरीदास के मरने पर मथुरादास भी जमनादास के यहां आया था और तब उसने देखा था कि उसके माता पिता बहुत बूढ़े और पौरुषहीन होगये हैं इस वास्ते कुछ भी काम नहीं कर सकते हैं, उठना बैठना और चलना फिरना भी उनको मुश्किल होगया है इस वास्ते टट्टी तक जाने में भी उनको मौत का सामना करना पड़ता है, परन्तु यहां उनकी कुछ भी ख़बर नहीं ली जाती है, बल्कि जमनादास की बहू उनको बहुत ही ज्यादा त्रास पहुंचाती है, वह बेचारे एक तरफ पड़े रहते हैं और उठने बैठने से लाचार होकर अपने पास बहुत ही गन्दगी फैलाये रखते हैं और बहुत ही ज्यादा गन्दे और मैले कुचैले रहते हैं, जमनादास की बहू उनसे बहुत ही ज्यादा ग्लानी करती है और उनको सैकड़ों ही गालियां सुनाती है, इन गालियों से उनका कलेजा बिंध जाता है लेकिन कुछ भी करते बन नहीं आता है, वह बहुत मारके अन्न पानी को भी तरसते हैं और बहुधा कपड़े बिदून नङ्गे ही पड़े रहते हैं, अगर वह कोई चीज़ मांगते हैं तो हज़ारों झिड़कियां खाते हैं, हां जब आप ही जमनादास की बहू को दया आजाती है तो नाक भौं चढ़ाकर रूखासूखा और बचाकुचा सड़ाबुसा खाना उनके आगे पटक आती है और गालियां देती हुई चली आती है, कपड़ा भी जो बिल्कुल ही निकम्मा होजाता है और भङ्गी चमार और भङ्गते कङ्गाल को भी देने योग्य नहीं रहता है और कूड़ी पर ही फेंकने योग्य होजाता है वह कभी २ उनको मिल जाता है और वह भी

ऐसा होता है कि जाड़ों के योग्य तो गर्मियों में मिल जाता है और गर्मियों के योग्य जाड़ों में मियस्सर आजाता है चुनान्चि जब मथुरादास वहां गया तो जेठ असाढ़ की टट्टार गर्मी पड़ रही थी परन्तु वह बेचारे बुड्ढे एक गले सड़े और फटे पुराने लिहाफ़ से ही अपना शरीर ढक रहे थे और अपनी मौत के दिन गिन रहे थे, जमनादास को उनकी कुछ भी परवाह नहीं थी बल्कि वह भी उनको मौत ही मनाता था और उनके सामने तक नहीं जाता था, उनकी यह दशा देखकर मथुरादास उनको वहां से अपने साथ ले आया था और उनके खाने पीने और कपड़े लत्ते का पूरा २ प्रबन्ध करके अपनी माता की टहल के वास्ते एक स्त्री को और पिता के वास्ते एक पुरुष को नौकर रख दिया था जो उनको उठाते बिठाते और न्हलाते धुलाते बिल्कुल ही साफ़ सुथरे और भले चङ्गे बनाये रखते थे और रात दिन उन्हीं की टहल में लगे रहते थे, इसके इलावा मथुरादास खुद भी उनकी पूरी २ टहल करता था, और अपनी स्त्री से भी कराता था, घण्टों उनके पास बैठा रहता था, इधर उधर की बातें सुनाकर उनके दिल को तसल्ली देता था और उनके दुख दर्द को दूर होने के वास्ते किस्म २ की दवाई बनवाता था और उन्हें खिलाता था, और उनकी गन्दगी तक उठाने में नहीं हिचकिचाता था।

तीन बरस पीछे मथुरादास के पिता का देहान्त होगया, लोगों ने विमान बनाने और शाल दुशाले डालकर बाज़ार में को निकालने और अर्थी के ऊपर चांदी सोने और रुपये पैसे की बखेर करने को कहा लेकिन मथुरादास ने कुछ भी न किया और बिल्कुल सादा तरीक़ से ही लेगया, दो तीन दिन पीछे जमनादास भी आगया और विमान न बनाने पर मथुरादास को बहुत ही बुरा भला कहा और अन्त में इस बात पर ज़ोर दिया कि जो कुछ हुआ सो हुआ पर अब इस नगर में तो तुम ३६ जात की ज्योंनार दो और घर पर जाकर अपने नगर में मैं ज्योंनार दूं, क्योंकि जिस पिता ने हमको

पैदा किया और पालपोप कर इस योग्य किया उसके वास्ते अगर हम इतना भी न करें तो धिक्कार है हमारी कमाई पर और सेठ साहूकार वन जाने पर, दो पैसे हाथ में होने का यह ही तो फल है कि उनको कारज सिर लगावें न कि जोड़ २ मरजावें, इसके उत्तर में मथुरादास ने कहा कि भाई साहव जोड़ २ कर न मैं रखता हूं और न आप रखते हैं अपनी २ जरूरत में आप भी खर्च करते हैं और मैं भी मगर फर्क इतना है कि मैं तो किसी काम को जरूरी समझता हूं और आप किसी को, पिताजी की वावत विचार लीजिये कि आपने तो उनकी जिन्दगी में उनके आराम के वास्ते कुछ भी खर्च करना जरूरी न समझा और अब उनके मरे पीछे उनके नाम पर सब कुछ लुटाना जरूरी समझ रहे हो; लेकिन मैंने उनकी जिन्दगी में उनके आराम के वास्ते ही खर्च करना जरूरी समझा और अपनी वित्त के मुवाफिक सब कुछ खर्च भी किया इस ही वास्ते अब खर्च करने से इनकार करता हूं, ग़रज़ यह है कि मैं तो असली काम में खर्च करना जरूरी समझता हूं और आप लोक दिखावे में, इस ही वास्ते जिस प्रकार आप असली काम में एक कौड़ी भी खर्च करना पसन्द नहीं करते हैं, इस ही तरह मैं दिखावे के काम में एक भी कौड़ी लगाना नहीं चाहता हूं और ऐसा करना ठीक भी है क्योंकि अगर आप असली कामों में भी पैसा खर्च करने लगें तो फिर दिखावे के कामोंमें इतना रुपया न लुटा सकेंगे जितना अब लुटाते हैं, इस ही तरह अगर मैं भी दिखावे के कामोंमें रुपया लुटाने लगूं तो फिर असली कामोंमें इतना रुपया न लगा सकूंगा जितना अब लगाता हूं, पर यह मुझे मंजूर नहीं है कि मेरे असली कामों में कुछ कमी आजावे इस वास्ते मैं तो दिखावे के कामों में हर्गिज़ भी कुछ न लगाऊंगा और असली कामों को ही निभाऊंगा।

जमनादास की राय में शहर के और भी सब लोग शामिल थे और उन सब ने मिलकर भी मथुरादास को समझाया, उसकी बड़ाई का गीत गाया, ऊंचे दर्जे पर चढ़ाया, बहकाया, फुसलाया मगर मथुरादास अपनी ही बात पर डटा रहा और उसने पिता के मरने पर का जीमन बीमन कुछ भी न किया, लेकिन जमनादास ने अपने नगर में आकर खूब ठस्से की ज्योंनार करी, ३६ जात को जिमाया और अहलकारों और हाकिमों के यहां भर २ थाल परोस भिजवाया, ब्राह्मणों को दक्षिणा बांटी, मङ्गतों को दान दिया और मन्दिरों और तीर्थों में बहुत कुछ द्रव्य भिजवाया, यों अपने पिता के मरने पर जमनादास सपूत कहलाया और जगत में नाम पाया।

मथुरादास बेचारे का यद्यपि नाम नहीं हुआ बल्कि लोगों ने उसका बहुत चर्चा किया तो भी वह अपने हृदय में खुश था कि मैं अपना कर्तव्य भली भांति पाल रहा हूं और किसी प्रकार भी दुनियां के बहकाये में नहीं आरहा हूं, दुनियां के लोग भी उसके कर्तव्य पालन को देखकर आहिस्ता २ उसके मन्तव्य को समझते जाते थे और समझकर फिर उसकी बड़ाई ही करने लग जाते थे, यहां तक कि उसको पूज्य मानने लग जाते थे।

अध्याय २२

जब से बचपन में ही मथुरादास अपने बाप और भाई के साथ मन्दिरजी में जाने लगा था तब से ही उसको भी धर्म का बहुत कुछ शौक़ पैदा हो गया था, लेकिन जो दूसरे आदमी कर रहे हों आंख मींचकर वैसा ही करने लग जाना, कुछ सोचना न समझना और लकीर का ही फ़कीर बना रहना उसको बिल्कुल भी पसन्द नहीं था, वह धर्म के असली तत्त्व को समझना चाहता था लेकिन अफ़सोस है कि कोई भी उसको यह बात न बतलाता था, वह सदा शास्त्र सभा में जाता था और तत्व कथनी के समझने में

बहुत ही ज्यादा ध्यान लगाता था, शास्त्र बांचने वाले से अगर्चि उसके प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया जाता था तो भी शास्त्र के कथन से ही उसको बहुत कुछ पता मिल जाता था, उसने खुद भी शास्त्र स्वाध्याय करने का बहुत कुछ अभ्यास कर लिया था और मालिक को टहल करके जो कुछ समय उसको मिलता था उसमें वह स्वाध्याय ही किया करता था और अन्य मतियों की उपदेशी पुस्तकें भी देखता रहता था, बल्कि जहां कहीं भी कोई धर्म उपदेश होता हो चाहे वह उपदेश किसी भी मत का हो अगर उसको अवकाश मिलता था तो वह वहां अवश्य जाता था और उपदेश को बड़े ध्यान से सुनता था और घर आकर उस पर विचार करता रहता था, सब ही मत मतान्तर के विद्वानों से वह धर्मचर्चा भी छेड़ता रहता था और बड़ी नम्रता और शिष्टाचार से उनसे प्रश्न कर करके अपने ज्ञान को बढ़ाता रहता था, इस प्रकार अगर्चि वह बिल्कुल ही निर्धन और कङ्गाल था और मिहनत मजदूरी और टहलटकोरी करके ही अपना पेट भरता था लेकिन गुदड़ी में लाल की कहावत के समान उसकी आत्मा बहुत ऊंचे दर्जे पर चढ़ी हुई थी, इसही वास्ते आत्मिक ज्ञान भी उसका कम नहीं था बल्कि सच पूछो तो वह इस विषय में बड़े २ विद्वानों से भी आगे बढ़ गया था और बहुत ही बारीक २ बातें निकालने लग गया था वह अपनी गरीबी में ही मस्त था और विवाह न होने और आगे को वंश न चलने का भी उसको कुछ फिकर नहीं था, हां फिकर था तो यह था कि मुझसे कोई ऐसा पाप का कार्य न होने पावे जिससे मेरी आत्माको कलङ्क लग जावे, और यह मनुष्य जन्म ही भ्रष्ट होजावे; दुनियां के लोग जबान से तो कहते हैं कि धर्म के वास्ते तो हम अपनी जान तक दे देने को तय्यार हैं लेकिन वह ही लोग एक २ पैसे पर बेईमान होजाते हैं और जरा जरासी बातों के लिये धर्म कर्म सब भूल जाते हैं, मगर मथुरादास ने

साक्षात यह वात दिखा दी थी कि धर्म कर्म की क़दर किस तरह की जाती है; इसही वास्ते उसने जमनादास की तरह से वहन के वदले में अपना व्याह कराना और उसही वहन को वेचकर जो रुपया आया था उससे मालदार वन जाना पसन्द नहीं किया था वलिक लोगों की टहल टकोरी करके और महादरिद्री रहकर ही अपना गुज़ारा किया था, ऐसी महान् आत्माकी जितनी तारीफ़ की जावे उतनी थोड़ी है और दुनियां के कामों में चाहे उसकी क़दर न की जावे लेकिन धर्म के मामले में तो ऐसों की ही क़दर होनी चाहिये और उपदेश भी ऐसों का ही सुनना चाहिये, वेशक दुनिया के लोग पैसे के ही दास हो रहे हैं और पैसे वाले को ही पूजते हैं और उस ही की वात सुनते हैं यहां तक कि महापापी और कुकर्मी धनवान् को भी वड़ा धर्मात्मा वताते हैं और उसही के वचनों को ईश्वर वाक्य वनाते हैं तो भी धर्म के सच्चे खोजियों को इस चाल पर नहीं चलना चाहिये वलिक धर्म पर चलने वाले सच्चरित्री पुरुषों को ही सच्चे धर्मात्मा समझना चाहिये और धर्मके विषय में उन्ही के वाक्यों को ध्यान देकर सुनना चाहिये; वह चाहे अमीर हों या ग़रीव धनवान् हों या फकीर इस वात का कुछ भी ख़याल नहीं करना चाहिये, इस ही वात को लेकर हम भी अपने पाठकों को मथुरादास का एक व्याख्यान सुनाते हैं जो उसने एकवार सार्वजनिक सभा में अपनी दरिद्रावस्था में ही सुनाया था और लोगों को वहुत पसन्द आया था, इससे आपको यह मालूम हो-जायगा कि खिदमतगुजारी करके और तीन रुपया महीना कमाकर ही अपना पेट पालने वाले मथुरादास ने धर्म की कैसी गहरी खोज लगाई थी और कैसी तन्त की वात सुनाई थी, उसका यह उपदेश वेशक विद्वानों के उपदेश की तरह भली भांति गुथा हुआ नहीं था और साहित्य की खूवियों से शून्य था परन्तु काम की वातों से भरपूर था।

धर्मोपदेश ।

संसार के सब ही जीव सुख पाने की तो इच्छा करते हैं और दुख से बचना चाहते हैं, संसार के जीवों की सारी भाग-दौड़ और सब ही प्रकार के उद्यम और उपाय इस ही वास्ते होते हैं कि सुख की तो प्राप्ती हो और दुख दूर होजाय परन्तु सुख की प्राप्ति का उपाय लोगोंने यह ही समझ रक्खा है कि जिस चीज़ की हमको इच्छा हो उसकी तो पूर्ति होजाय और जिसको हम नापसन्द करते हों वह हट जाय, संसार में अनन्तानन्त वस्तु भरी पड़ी हैं और वह भी सदा एक रूप नहीं रहती हैं बल्कि अनन्तानन्त प्रकार के रूप बदलती रहती हैं, इस ही प्रकार हमारी इच्छायें भी सदा एक समान नहीं रहती हैं बल्कि वह भी क्षण २ में बदलती ही रहा करती हैं तो भी हम यह ही चाहते रहते हैं कि संसार की सब चीजें हमारी इच्छाओं के अनुसार ही बनती बदलतीं रहें और हमारी मर्जी के मुताबिक ही चलती रहें, लेकिन ऐसा होना बिल्कुल ही असम्भव है, इस ही कारण अपनी इच्छा के अनुसार न होने पर अपने हृदयमें दुख मानते हैं और इच्छाके अनुसार होजाने को सुख गर्दानते हैं, यह ही हमारी भूल है, अगर हम वस्तु स्वभावको जानते तो यह बात भली भांति पहिचानते कि संसारका सारा कारखाना हमारे आधीन नहीं हो सकता है बल्कि अपने ही स्वभावके अनुसार चलता है इस ही वास्ते संसार की कोई भी चीज हमारी इच्छा के आधीन नहीं प्रवर्त्त सकती है बल्कि अपने ही कायदे के अनुसार बनती बिगड़ती है, और सबसे मोटी बात इसमें विचार करने की यह हैं कि संसार का सारा कारखाना मनुष्यों के ही आधीन कैसे होजाय और कैसे उनही की इच्छा के मुताबिक चलने लगे क्योंकि मनुष्य तो संसार में लाखों करोड़ों और अर्बों खर्बों हैं इस कारण वह बेचारा संसार किस मनुष्य के आधीन चले और

किसके आधीन न चले, किस की आज्ञा माने और किसकी न माने अर्थात् किसकी इच्छा पूरी करे और किसकी न करे और फिर संसार के मनुष्य अपनी इच्छाओं को भी तो पल २ में बदलते रहते हैं तब किस तरह यह संसार उनकी इच्छाओं के अनुसार नाचे और उनकी आज्ञाओं को पाले।

दृष्टान्त रूप विचार कीजिये कि बैसाख जेठ के महीने में शहर के लोग तो अपने घर पर बैठे हुए यह चाहते हैं कि बारिस बरस कर गर्मी दूर होजाय, लेकिन गांव के जिन किसानों का खेत कट-कर अनाज जंगल में पड़ा है वह यह हुक्म चढ़ाते हैं कि जबतक हम अपना सब अनाज और भूसा उठा न लेजावें तबतक एक बूंद भी न पड़ने पावे, इन ही किसानों में जिन्होंने अपना अनाज उठा लिया है और ईख बो रखा है वह तुरन्त ही बारिस मांगते हैं और न बरसने में बड़ा भारी नुक़सान बताते हैं, शहर वालों में भी जो पल भर पहिले अपने घर पर बैठे हुए बारिश मांग रहे थे उनमें से जिनको बाज़ार जाना पड़ जाता है तो वह तुरन्त ही यह चाहने लग जाते हैं कि जबतक हम बाज़ार से लौटकर न आवें तबतक तो एक भी बूंद न पड़ने पावे और हमारे घर पहुंचते ही ज़रूर बर-सने लग जावे ग़रज एक बारिस ही के बारे में जितने मनुष्य हैं उ-तनी ही उनकी ख्वाहिशें हैं और हरएक की ख्वाहिश भी पल पल भर में उसकी ज़रूरतों के अनुसार बदलती रहती है तब बेचारी बारिस किसका हुकम माने और किसका न माने और उनकी इच्छाओं के अनुसार पल पल में किस तरह अपना रूप बदलती रहै और उनकी इच्छा पूरी करती रहै, बात असल यह है कि बारिस तो न किसी की इच्छा के अनुसार बरसती है और न किसी की इच्छा के अनुसार बन्द ही होती है, बल्कि वह तो अपने ही स्वभाव के अनुसार जब उसे बरसना होता है बरसती है और जब बन्द होना होता है बन्द होजाती है, लेकिन मनुष्य ख्वाम-

ख्वाह ही उसके बरसने और बन्द होने की ख्वाहिश करके सुख और दुःख मानने लग जाते हैं और वृथा क्लेश उठाते हैं।

संसार के इन जीवों में मान माया, लोभ क्रोध आदिक अनेक प्रकार की भड़क उठती रहा करती हैं जो कषाय कहलाती हैं, इन ही कषायों के कारण तरह तरह की इच्छायें उत्पन्न होती हैं, और इन ही कषायों के वश में होकर यह जीव ऐसा अन्धा हो जाता है कि वस्तु स्वभाव को तो भूल जाता है और बिल्कुल ही असम्भव और उलटी पुलटी इच्छायें करने लग जाता है और उनके पूरा न होने पर दुख पाता है जैसा कि मनुष्य स्वास्थ्य के बिगड़ जाने और बीमारी पैदा होजाने के काम करता हुआ भी बिल्कुल तन्दु-रुस्त रहने की ही इच्छा करता है, व्याह शादी में खूब दिल खोल कर फ़जूलखर्ची करके और अपनी सब जमा पूंजी को अपनी स्त्रियों के जेवर घड़वानें में लगा कर और बहुत कुछ कर्ज अपने शिर चढ़ाकर भी धनवान ही बना रहना चाहता है और ऐसी दशा में भी भली भांति अपना व्यापार चलता रहने और खूब कमाई होती रहने की आशा बांधे रखता है, अपनी सन्तान को बहुत ज्यादा लाड़ प्यार में बिगाड़कर और उसकी रक्षा शिक्षा पर कुछ भी ध्यान न देकर भी यह ख्वाहिश रखता है कि वह सब तरह लायक़ ही उठे और संसार में नाम ही पावें, संसार के लोगों के साथ बुराई बांधकर, उनको नुक़सान पहुंचा कर और उनके कुछ भी काम न आकर भी यह ही चाहता है कि दुनियां के सब लोग मेरे साथ कोई बुराई न करें बल्कि वह हरतरह मेरे काम आवें, इस ही तरह सौ बेईमानी करता हुआ, दुनिया का माल हरता हुआ और पापों की पोट भरता हुआ भी यह ही चाहता है कि मेरे पापों का उदय न आवे और बिना पुण्य किये ही मुझे पुण्य का फल मिल जावे अर्थात् मेरे सब ही कारज सिद्ध होजावें और मेरी सब ही इच्छा पूरी होजावें।

यह भी बात नहीं है कि यह जीव अपनी ज़रूरत की ही चीज़ों की इच्छा करता हो जिनके बिदून किसी तरह भी न सरता हो. बल्कि कषाय के बस होकर इसमें तो कुछ ऐसा पागलपन आजाता है कि बेमतलब सी इच्छायें बांधने लग लाता है और उनके पूरा न होने पर दुःख पाता है, जैसा कि रास्ता चलते भी अगर हम दो पहिलवानों को कुस्ती करता हुआ देख लेते हैं और तमाशा देखने खड़े हो जाते हैं, तो उन पहलवानों में से किसी से भी किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध वा जान पहिचान न होने पर भी हम वहां खड़े २ ही उनमें से किसी एक की जीत और दूसरे की हार मनाने लग जाते हैं और जो वैसा नहीं होता है तो हृदय में दुख पाते हैं, इस प्रकार हम संसार की सब ही बातों में सदा बे मतलब का पक्ष बांधते रहा करते हैं और अपनी ही बात ऊंची करने के वास्ते जान महनत लड़ाते रहा करते हैं और इस ही में हर्ष विषाद मानते रहा करते हैं।

इसके इलावा यह भी बात नहीं है कि इच्छाओं के पूरा होने पर हमारी तृती होजाती हो बल्कि जिस प्रकार अग्नि में लकड़ियां डालने से वह अधिक २ बढ़ती है इस ही प्रकार इच्छाओं की पूर्ती होने पर भी वह ज्यादा ज्यादा ही बढ़ती चली जाती है और कहीं भी ठहरने नहीं पाती हैं, पहिले तो हम बहुत छोटी ही छोटी इच्छायें बांधते हैं लेकिन उनके पूरा होने पर वह ही इच्छायें अपना पेट फुलाने लग जाती हैं और होते २ ऐसे लम्बे पैर फैलाती हैं कि सारा संसार प्राप्त होजाने पर भी उनकी तृती नहीं हो पाती है, बल्कि ज्यादा २ ही बढ़ती चली जाती है, चुनाचि नित्य देखने में आता है कि जो आदमी पांच रुपया महीना कमाता है वह सात रुपया महीना मिलने के वास्ते अपने मनको तड़पाता है, लेकिन जब सात रुपये महीना मिलने लग जाता है तो वह दस रुपये महीने की ख्वाहिश करने लग जाता है और दस मिलने लगने पर

पन्द्रह के लिये ललचाता है और पन्द्रह मिलने पर पच्चीस को जी चाहता है और २५ मिले तो पचास की तरफ़ मन दौड़ाता है और पचास मिले तो चट सौ की इच्छा बांधने लग जाता है, ग़रज़ इच्छा की पूर्त्ति होने पर आगे २ ही बढ़ा चला जाता है और यों सदा तड़प २ कर दुःख ही उठाता रहा करता है।

इसके विरुद्ध यह भी देखने में आता है कि जो मनुष्य अपनी इच्छाओं को दबाता है और सन्तोष से ही रहना चाहता है वह संसार की बहुत थोड़ी चीजें मिलने पर भी सुखसाता ही पाता है और हरएक अवस्था में आनन्द मङ्गल ही मनाता है, जिससे यह बात साफ़ सिद्ध होती है कि सुख की प्राप्ति इच्छाओं की पूर्त्ति में नहीं है बल्कि इच्छायें तो एक प्रकार का रोग है जिसके दूर होने या कम होजाने में ही सुख शान्ति का भोग है, जिस प्रकार कि खुजली की बीमारी में खाज के खुजाने से खुजली दूर नहीं होती है बल्कि दवा लगाकर खुजली के परमाणुओं का नाश करने से ही वह खुजली जाती है वा जिस प्रकार की बलग़म (कफ़) की बीमारी में मिठाई खाने की इच्छा होने पर मिठाई खाने से तृप्ति नहीं होजाती है बल्कि ज्यादह २ ही बढ़ती चली जाती है और औषधि द्वारा बलग़म के दूर होने से ही मिठाई खाने की चाह दूर हो पाती है, इस ही तरह इच्छा की पूर्त्ति करने से तो उस इच्छा की शान्ति कदाचित् भी नहीं की जा सकती है, बल्कि इस तरह तो वह ज्यादा २ ही बढ़ती चली जाती है और ज्यादा २ ही दुखदाई होती जाती है, किन्तु ज्ञान वैराग्य और शील सन्तोष-रूपी औषधी के द्वारा ही जितनी २ यह इच्छा दूर की जाती है उतनी २ ही सुख शान्ति प्राप्त होती जाती है।

अनुभव से यह भी स्पष्ट ज्ञात होता है कि जिस प्रकार कि भंग शराब और अफ़ीम आदिक नशे की चीज़ों को बारबार खाने से उनकी आदत पड़ जाती है और फिर ज़रूरत बेज़रूरत भी सेवन की

जाती हैं वलिक महाहानि पहुंचने पर भी उनका छोड़ना मुश्किल होजाता है, इस ही तरह मान, माया, लोभ, क्रोध आदिक कषायों की भी आदत पड़ जाती है और उनका छोड़ना या कम करना असम्भव के ही तुल्य वन जाता है, इससे यह ही सिद्धान्त निकलता है कि इस समय जो हम मान, माया, लोभ, क्रोध आदिक कषायों में फँस रहे हैं और उनसे छुटकारा पाना असम्भव सा ही समझ रहे हैं, उसका कारण यह ही है कि इससे पहिले वारवार हमने कषाय करी है जिससे कषाय करने की हमको आदत पड़ गई है, वह ही आदत हमको अब भी नाच नचा रही है और कषाय उत्पन्न करा कराकर तरह २ के दुख दिला रही है, इस ही प्रकार जो २ कषाय हम इस समय करते जाते हैं उनकी आदत भी हमको पड़ती जाती है जो आगे के वास्ते दुख की देने वाली है; यह ही कर्म वन्धन है जिसमें हम पीछे से वँधे चले आरहे हैं और आगे को भी वँधते जारहे हैं, अगर हम कषाय करना छोड़ दें तो आगेको वँधने का रास्ता भी तोड़ दें, फिर पिछला भी अभ्यास छूट जाय और दुखों से विलकुल ही छुटकारा होजाय, यह ही परम मुक्ति है और यह ही धर्म की महान् युक्ति है, लेकिन हमारी तो यह वहुत ही पुरानी बीमारी है, हमको तो जन्म जन्मान्तर से ही कषाय करने की आदत चली आती है, इस वास्ते हम इन कषायों को एकदम नहीं छोड़ सकते हैं और इनसे एकदम ही मुंह नहीं मोड़ सकते हैं, वलिक जिस तरह पुराना अफीमी अगर हररोज एक २ लकीर कम करना शुरू कर देता है तो एक दिन अफीम का खाना विलकुल ही छोड़ देता है, इस ही तरह हम भी अगर अपनी कषायों को कुछ २ कमती करते जायँगे तो एक दिन विलकुल ही छुटकारा पा जायँगे, लेकिन इस वक्त तो इन कषायोंने हम पर ऐसा क़ाबू पाया है कि कषाय के आने पर हम ज़रा भी आपेमें नहीं रहते हैं, अपनी हानि लाभ और नफे नुक़सान के विचार को विलकुल ही भूल जाते हैं और

अपने ज्ञान गुण को दबाकर अपनी कषाय के अनुसार ही नाचने लग जाते हैं और ऐसे २ उलटेपुलटे कार्य्य करने लग जाते हैं कि जिनसे हम बिल्कुल ही तबाह और बरबाद होजाते हैं, लेकिन फिर भी बाज़ नहीं आते हैं, बल्कि और भी ज्यादा २ कषाय करने लग जाते हैं और इस ही में अपनी चतुराई दिखाते हैं इस वास्ते यह ही हमारा धर्म है और यह ही हमारा शुभ कर्म है कि मान, माया, लोभ, क्रोध आदिक कषायों का उफान जो हमारे हृदयमें उठता है अर्थात् अपने को बड़ा समझने, घमण्ड करने और अपने आपे में तिङ्कड़कर दूसरों को नीचा दिखाने और आप ऊँचा बनने यानी मान करने का जो नशा हमको चढ़ता है और छल कपट, दग़ा, झूंठ, मक्कर, फ़रेब के द्वारा अपना काम निकालने और चतुराई दिखाने यानी मायाचारी करने का जो शौक़ हमको पैदा होता है और संसार के पदार्थों की इच्छा लोभ, लालच, खुदगर्ज़ी और स्वार्थ अर्थात् लोभ कषाय का जो फन्दा हमारे गले में पड़ता है और दूसरों को नाश कर देने और नुक़सान पहुंचाने अर्थात् क्रोध कषाय की जो अग्नि हमारे अन्दर भड़कती है इत्यादिक इन सब ही कषायों की तेज़ी को कम करना हम शुरू कर देवें और बराबर कम करते ही चले जावें जब तक कि यह बिल्कुल ही नाश को प्राप्त न होजावें।

परन्तु जिस प्रकार कोई २ बीमार तो ऐसे शूर्मा होते हैं जो कड़वी से कड़वी दवा भी खा लेते हैं, कठिन से कठिन परहेज़ को भी निभाते हैं और वैद्य के कहने के अनुसार कई २ दिन का लङ्घन भी कर जाते हैं उनका ऐसा ही कड़ा इलाज किया जाता है और आराम भी उनको बहुत ही जल्द होजाता है, लेकिन जो बीमार दिलके बहुत कमज़ोर होते हैं इस कारण अपनी आदतों से लाचार होकर दवा भी मज़ेदार ही चाहते हैं परहेज़ भी कुछ नहीं निबाहते हैं, ज़रासी सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास से भी घबरा जाते हैं उनका इलाज नरम ही किया जाता है उनके वास्ते दवाइयों का मीठा २

शर्वत बनवाया जाता है कड़वी २ दवाइयों का अर्क खिंचवाया जाता है, मजेदार चटनियां और मुरब्बे तैयार होते हैं और उनकी जीभ के स्वाद पूरे किये जाते हैं और उनको परहेज़ भी बहुत ढीले ही बताये जाते हैं इस ही वास्ते आराम भी उनको बहुत देर बाद ही हो पाता है, इस ही प्रकार कषाय के रोगियों की भी दो क़िस्में हैं, एक तो वह हैं जो एकदम अपनी कषायों को बहुत ही ज्यादा दबा लेते हैं, घर छोड़ जङ्गल में चले जाते हैं और अपनी कषायों को जड़ मूल से नाश करने के लिये आत्म ध्यान में लग जाते हैं और जल्द ही मुक्तिधाम को पहुंच जाते हैं, परन्तु ऐसे महाशूर्मा कोई विरले ही निकल आते हैं, दूसरे लोग हम हैं और हम जैसे ही सारी दुनियां में भरे हैं जो गृहस्थमें ही फँसे रहते हैं और गृहस्थी कहलाते हैं, हम गृहस्थियों को तो मान, माया, लोभ क्रोध आदिक कषाय भी दबाती हैं और पांचों इन्द्रियों के भोग भी सताते हैं, इस वास्ते हम तो इतना ही धर्म कर सकते हैं कि अपनी कषायों को इतना ही दबावें और अपने इन्द्रियों के भोगोंको इतना ही घटावें जिसमें भली भांति हमारा गृहस्थ चलता रहे पाप टलता रहे और पुण्य ही पुण्य होता रहे।

हमारे परिणामों की अवस्था तीन प्रकार की होती है, एक तो सबसे पहिली वह अवस्था है जिसमें हम पूरी तरह से अपनी कषायों के वश में होते हैं, अपनी कषायों के ही अनुसार ही सर्व प्रकार का नाच नाचते हैं और अपनी विचारशक्ति को कुछ भी काम में नहीं लाते हैं, यह बहुत ही घटिया और बुरी अवस्था है जिससे इस समय भी दुख ही दुख प्राप्त होता है और आगामी को भी इन कषायों के वश में रहने की ही आदत पड़ती है, ऐसे ही परिणाम महादुखदाई वा अशुभ परिणाम माने जाते हैं और इनसे पैदा हुई आदतें ही पाप कर्म कहलाती हैं दूसरी अवस्था वह है जिसमें हम कुछ २ अपनी कषायों को दबाते हैं और उनके ज़ोर को हलका

करके कुछ तो उन कषायों के अनुसार चलते हैं और कुछ उनको अपनी विचारशक्ति के अनुसार चलाते हैं, यह गृहस्थी की उत्तम अवस्था है जिससे इस समय भी सुख शांति में ही बीतती है और आगामी के वास्ते भी हलकी कषाय करने की ही आदत पड़ती है, ऐसे ही परिणाम सुखदाई वा शुभ परिणाम माने जाते हैं और इनसे पैदा हुई आदतें ही पुण्यकर्म कहलाती हैं, तीसरी अवस्था वह है जिसमें हम इन कषायों को सर्वथा ही दबा देते हैं या जड़ मूल से ही नाश कर डालते हैं और कुछ भी इन कषायों के अनुसार नहीं चलते हैं अर्थात् संसार सम्बन्धी कुछ भी कार्य्य नहीं करते हैं बल्कि अपनी आत्मा के ध्यान में ही मग्न होजाते हैं, ऐसे परिणामों से इस समय भी परम आनन्द होता है और आगे के वास्ते भी किसी प्रकारकी कषाय करनेकी आदत न पड़कर अर्थात् किसी भी प्रकार के कर्मों का बन्ध न होकर परम आनन्द ही आनन्द रहता है, ऐसे ही परिणाम महाकल्याणकारी वा शुद्ध परिणाम माने जाते हैं और इनसे ही मोक्ष की प्राप्ति बताते हैं, इस प्रकार हमारे परिणाम तीन प्रकार के होते हैं एक अशुभ वा पापमय परिणाम जो कषाय की तेज़ी से होते हैं, दूसरे शुभ वा पुण्यरूप परिणाम जो कषाय के हलका होनेसे होते हैं और तीसरे शुद्ध वा कल्याणकारी परिणाम जो कषाय के बिल्कुल न होने से ही होते हैं, इनमें से शुद्ध परिणाम तो गृहत्यागी साधुओं को हो सकते हैं जिनको वह ही अच्छी तरह समझ सकते हैं और वह ही भली भांति उनका वर्णन भी कर सकते हैं इस वास्ते शुद्ध परिणामों के कथन को छोड़कर हम शुभ और अशुभ परिणामों का ही कथन करते हैं जो गृहस्थियों को सदा ही होते रहते हैं।

गृहत्यागी साधुओं की बाबत तो हम कुछ नहीं कह सकते हैं परन्तु गृहस्थी मनुष्यों का मन तो ऐसा चञ्चल है कि वह किसी समय भी विश्राम नहीं लेता है बल्कि क्षण २ में तरह २ की कषाय

ही उत्पन्न करता रहता है, क्षण २ में पैदा होने वाली इन कषायों का प्रभाव भी मनुष्य पर पड़ता ही रहता है अर्थात् आगामी के वास्ते कषाय करने की आदत भी उसको पड़नी ही चली जाती है यानी क्षण २ में उसको नवीन कर्मों का बन्ध भी होता ही रहता है और जिस क्षण में हलकी या तेज़ जैसी कषाय होती है उस क्षण में वैसा ही प्रभाव भी वह कषाय हम पर छोड़ जाती है यानी उस क्षण में वैसा ही हलका या भारी कर्म बन्ध भी हमको हो ही जाता है, अर्थात् जिस क्षण में हमारी कषाय तेज़ होती है उस क्षण में तो हमको पाप कर्म का बन्ध पड़ता है और जिस क्षण में हमारी कषाय हलकी होती है उस क्षण में हमको पुण्यकर्म का बन्ध होता है, ग़रज़ गृहस्थी मनुष्य का कोई भी क्षण ऐसा नहीं है जिसमें उसको पाप या पुण्य कर्मों का बन्ध न होता रहता हो, क्योंकि वह तो पल २ में तरह २ की कषाय करता ही रहता है और इस ही कारण उसको पल २ में तरह २ के कर्मों का बन्ध भी होता ही रहता है, पापकर्म प्राप्त करने को ही अधर्म और पुण्य कर्म प्राप्त करने को ही गृहस्थी का धर्म कहते हैं इस वास्ते जिस क्षण में उसकी कषाय तेज होती है उस क्षण में वह अधर्म करता है और पाप कमाता है और जिस क्षण में उसकी कषाय हलकी होती है उस क्षण में वह धर्म करता है और पुण्य कमाता है, ग़रज गृहस्थी का यह ही धर्मसाधन है कि वह अपनी कषाय को हलकी ही रक्खे और यह ही उसका अधर्म से बचना है कि वह अपनी कषाय को तेज़ न होने देवे।

सुबह से लेकर शाम तक और शाम से लेकर सुबह तक अर्थात् उठते बैठते, खाते पीते, सोते जागते, दौड़ते भागते, बोलते चालते, चलते फिरते और दुनियां का सब ही धन्धा करते हुए गृहस्थी लोग कर्मों का बन्ध तो बराबर करते ही रहते हैं परन्तु जिस २ समय वह अपनी कषाय हलकी रखते हैं उस २ समय तो वह पुण्य

ही कमाते हैं इस वास्ते मानो धर्म ही करते हैं और जिस २ समय उनकी कषाय तेज होजाती है उस २ समय वह पाप ही कमाते हैं इस वास्ते मानो अधर्म ही करते हैं, इस हेतु बढ़िया धर्मात्मा हैं वह गृहस्थी जो हरवक्त ही अपनी कषाय को हलकी रखते हैं और कभी भी अपने परिणामों में कषाय की तेज़ भड़क पैदा नहीं होने देते हैं; वह अपना गृहस्थ सम्बन्धी कोई भी कार्य्य कर रहे हों परन्तु हलकी कषाय रखने के कारण वह तो मानो धर्मसाधन ही कर रहे हैं और घर का सब धन्धा करते हुए भी पुण्य ही कमा रहे हैं, इसके विपरीत जो मनुष्य चाहे वह घर का कोई भी धन्धा न कर रहे हों बल्कि मन्दिर में बैठ धर्म कार्यों में ही लग रहे हों लेकिन अगर उनके परिणामों में कषाय की तेजी है और उनके भावों में अशान्ति और बेचैनी है तो वास्तव में वह अधर्म ही कर रहे हैं और पाप ही कमा रहे हैं, इस वास्ते गृहस्थियों को हरदम ही अपने परिणामों की सँभाल रखनी चाहिये और अपनी कषायों को कभी भी तेज नहीं होने देना चाहिये, बल्कि जहां तक होसके अपनी कषाय को हलकी ही रहने की कोशिश करते रहना चाहिये, जो गृहस्थी जहां-तक भी अपनी इस कोशिश में कामयाब होता है अर्थात् जितना २ वह अपनी कषाय को तेज नहीं होने देता है उतना ही मानो वह धर्मसाधन करता है और पुण्य कमाता है।

इस प्रकार गृहस्थी लोग अपने सांसारिक सब ही कार्यों को करते हुए अपने परिणामों की सँभाल रखने और अपनी कषायोंको तेज़ न होने देने के द्वारा हरदम ही धर्मसाधन कर सकते हैं और हरवक्त ही पुण्य कमा सकते हैं और यदि वह अपने परिणामों को नहीं सँभालते हैं और अपने मन की वागडोर को ढीली छोड़कर कषायों को तेज़ होने देते हैं तो वह चाहे धर्म सम्बन्धी कार्य्य कर रहे हों वा गृह सम्बन्धी परन्तु वह तो वास्तव में अधर्म ही कर रहे हैं और पाप ही कमा रहे हैं यह बात हमको अच्छी तरह समझ

लेनी चाहिये कि पाप कर्म हो चाहे पुण्य कर्म हो किन्तु कर्म तो किसी न किसी प्रकार का हमको हरवक्त बँधता ही रहता है, ऐसा तो कोई समय है ही नहीं जिसमें हम गृहस्थियों को. कर्म बन्ध न होता हो अर्थात् किसी न किसी प्रकार की कषाय करने और कर्म-बन्ध होने से तो हम गृहस्थो लोग किसी वक्त बच ही नहीं सकते हैं, हां यह हमारे इख़्तियार में है कि हम पापकर्म बांधें वा पुण्यकर्म, क्योंकि जिस २ वक्त हम अपनी कषायों को तेज कर देंगे तो उस २ वक्त तो हमको पाप कर्म बँधेंगे और जिस २ वक्त हम अपनी कषायों को हलकी रखेंगे उस २ वक्त हमको पुण्य कर्मो का बंध होगा, इस वास्ते यह ही हमारा धर्मसाधन है कि हम अपनी कषायों को तेज न होने दें और हलकी ही रखें, इसमें भी इतनी बात है कि जितनी जितनी ज़्यादा तेज हमारी कषाय होगी उतना ही उतना जबरदस्त पाप हमको बँधता रहेगा और जितनी २ ज्यादा हलकी हमारी कषाय होगी उतना ही उतना बढ़िया पुण्य का बन्ध हमको होगा, इस वास्ते हम गृहस्थियों का तो यह ही धर्मसाधन है और यह ही हमारी पुण्य प्राप्ति का मारग है कि हम अपनी कषायों को अधिक से अधिक हलकी करने की कोशिश करते रहैं और सुवह से शाम तक और शाम से सुवह तक अपना गृहस्थ सम्बन्धी सवही प्रकार के काम करते हुए हरवक्त अपनी कषाय को हलकी रखकर धर्म ही कमाते रहें।

हम संसारियों की कभी एकसी अवस्था नहीं रह सकती है, वल्कि कभी तो कोई काम हमारी ख्वाहिश के मुआफ़िक होजाता है जिसमें हम खुशी मनाते हैं और कभी कोई काम हमारी इच्छा के विरुद्ध होजाता है जिसमें हम रञ्ज करने लग जाते हैं और यह रञ्ज खुशी के विचित्र खेल हरवक्त होते ही रहते हैं, लेकिन अगर हम हद्द से ज्यादा खुशी या हद्द से ज्यादा रञ्ज करते हैं और अपने आपे में नहीं रहते हैं तो मानो हम अपनी कषाय को ज्यादा भड़काते हैं

और तेज़ बनाते हैं, जिससे इस समय भी हमारे हृदय में बेचैनी पैदा होकर हमको आकुलता और दुख पैदा ही होता है और आगे के वास्ते भी हमको पाप कर्मों का ही बन्ध पड़ता है, लेकिन अगर हम न तो खुशी में ज्यादा खुशी करते हैं और न रञ्ज में ज्यादा रञ्ज ही मनाते हैं अर्थात् खुशी और रञ्ज में बेसुध नहीं होजाते हैं तो मानो हम अपनी कषाय की भड़क को दबाकर उसको हलकी ही बनाते हैं जिससे इस समय भी हमारे हृदय में शान्ति रहकर हमको सुख चैन ही प्राप्त होता है और आगामी के वास्ते भी हमको पुण्य कर्मों का ही बन्ध पड़ता है; इस वास्ते यह ही हमारा धर्म है और यह ही हमारा कर्म है कि हम खुशीमें ज्यादा खुशी न मनावें और रञ्ज में ज्यादा रञ्ज न करने लग जावें बल्कि जहां तक होसके अपनी इस रञ्ज और खुशी को कमती ही कमती करते जावें जिससे होते २ किसी समय हम बिल्कुल ही समभावी बन जावें और परम आनन्द में मग्न रहने लग जावें।

हम गृहस्थी लोग अगर दुनियांकी उन ही चीज़ों की अभिलाषा करें जिनकी प्राप्ति के वास्ते हम कोशिश कर सकते हों तो हमारे गृहस्थके कार्य्यमें तो किसी भी प्रकारकी कमी नहीं आती है किन्तु हमारी ख्वामख्वाह की अभिलाषायें जरूर घट जाती हैं जिससे फ़िज़ूल और बेमतलब की आकुलता हमको बिल्कुल भी नहीं सताने पाती हैं, लेकिन हम तो शेखचिल्ली की तरह हवामें क़िला बांधते हैं और अफ़ीमियों की तरह आकाश में उड़े फिरा करते हैं, हमारा तो बिल्कुल ही ऐसा हाल है और मानो हमारी ही यह मिसाल है कि रहने को तो नहीं झोंपड़ा भी और स्वप्न देखें महलों का, यह ही कारण है कि हम दूसरों की सुख सम्पति देखकर बैठे ही बैठे अपने मन को लुभाते हैं और बेफ़ायदा ही अपने हृदय को तड़पाते हैं और व्याकुल होकर फ़िज़ूल ही दुख उठाते हैं; दृष्टान्तरूप अगर हम बाज़ार में चलते जाते हुए दूकानों में भरी हुई चीजों को देख २ कर

अपने मन को तो ललचावें और उनके ख़रीदने की सामर्थ्य अपनेमें बिल्कुल भी न पावें तो हमारा यह ललचाना बेमतलब अपने मन को तड़पाने और बेफ़ायदा दुख उठाने के सिवाय और कुछ भी कार्य्यकारी नहीं हो सकता है, हां अगर हम ऐसी चीज़ की ख्वाहिश करें जिसको हम ख़रीद सकें तो उसके वास्ते तो चाहे हम सारे ही बाजार में चक्कर लगावें और सब ही दूकानों में देखते फिर जावें तो भी ठीक है, क्योंकि गृहस्थी अपनी अभिलाषाओं को सर्वथा नहीं दबा सकता है इस वास्ते हमारे लिये धर्मसाधन का यह ही रास्ता है कि हम अपने मन को समझावें और ऐसा सधावें कि वह मन दुनियां की सब ही चीजों की तरफ़ न जाया करे और बेफ़ा-यदा ही हमको न भटकाया करे बल्कि जिस २ चीज की प्राप्ति के वास्ते हम कोशिश कर सका करें इच्छा भी हम उन्हीं चीजों की किया करें और उससे ज्यादा ख्वाहिश करने से अपने मन को रोक दिया करें, ऐसा करने से बहुत ही ज्यादा सुख शान्ति हमको मिल सकती है और आगे के वास्ते भी फ़िज़ूल मन भटकाने की आदत नहीं पड़ती है, यानी इस तरह व्यर्थ की इच्छा से अपने मन को रो-कने से ऐसा कर्म बन्ध भी नहीं होता है जिससे आगे को भी बेमत-लब ही हमारा मन भटकता फिरे।

इस तरह की लगाम लगाकर अपने मन को काबूमें रखना और व्यर्थ की कूद फांद न करने देना भी गृहस्थी का संयम और परिग्रह को कम करना है क्योंकि संसार की चीज़ों पर मोहित होने ही को परिग्रह कहते हैं और जब हम उन ही चीजों पर मोहित होते हैं जिनकी प्राप्तिके वास्ते कोशिश कर सकते हैं और संसार की बाक़ी सब चीजों की तरफ़ मनको नहीं जाने देते हैं तो ऐसा करने से हम अपनी परिग्रह को बहुत ही ज्यादा घटाते हैं और बहुत कुछ रोक थाम कर लेते हैं, लेकिन दुनियांके सब ही मनुष्योंकी न तो एकसी अवस्था है और न सब में एकसी ताक़त है और न सबके पास

एकसे साधन हैं, बल्कि कोई अमीर है, कोई ग़रीब है, कोई अकेला है और किसी के हज़ार साथी हैं, कोई कमज़ोर है और कोई ज़ोरावर है, कोई बीमार है कोई तन्दुरुस्त है, कोई बेवक़ूफ़ है कोई अक़्लमन्द है, इस तरह सबकी भिन्न २ रूप ही अवस्था है, इस वास्ते हरएक को अपनी २ अवस्था के अनुसार ही अभिलाषा करनी चाहिये और उतनी ही चीज की अभिलाषा करनी चाहिये जितनी की प्राप्ति का वह उपाय कर सकता हो और उपाय करने से पा सकता हो, उससे अधिक के वास्ते उसको सन्तोष करना चाहिये और अपने मन को उन चीज़ों की तरफ़ से रोके रखना चाहिये।

यह मनुष्य अपनी कषायों से ऐसा लाचार है और उनका इस पर ऐसा भारी प्रभाव है कि उनकी वजहसे वह अपनी विचारशक्ति को भी खो देता है और अपने हानि लाभ के ख़याल को भी छोड़ देता है और सिर्फ़ अपनी कषायों के अनुसार कार्य्य करने को ही ज़रूरी समझ लेता है, जिसकी वजह से इसके अपने ही बहुत कार्य्य बिगड़ जाते हैं और अनेक उपद्रव खड़े होजाते हैं, मनुष्य की तीव्र (तेज) कषाय उससे इस ही तरह के उलटेपुलटे कार्य्य कराती है और उसको तरह २ के नाच नचाती है, चुनाचि नित्य देखनेमें आता है कि जब मनुष्य को अधिक क्रोध आजाता है तो आपे से बाहर होकर वह यहां तक कहने लग जाता है कि चाहे मेरा ईंट का घर मिट्टी होजाय और चाहे मुझे फांसी आजाय पर मैं तो अब अपने वैरी को इस बैर का मजा चखाकर छोडूंगा और उसको अपनी ताक़त दिखाकर ही मुंह मोडूंगा, इस ही तरह यह भी देखने में आता है कि बहुत से बीमार महीनों चारपाई पर पड़े रहेंगे और हाय २ करते हुए महादुख सहेंगे लेकिन कड़वी दवा खाना हर्गिज़ भी मंजूर न करेंगे और न हकीम के कहने के मुताबिक़ परहेज़ ही कर सकेंगे बल्कि अपनी जीभ के स्वाद के अनुसार खट्टी मीठी सब ही चीज खाते रहेंगे, इस ही प्रकार बहुत से विद्यार्थी खूब सजा

पाने और नित्य पिटते रहने पर भी खेल में ही समय गँवाते हैं और अपना पाठ याद करने में चित्त नहीं लगाते हैं, इस ही प्रकार बहुत से शराबी शराब पीकर अनेक बार बहुत से अनुचित कार्य्य कर डालते हैं, बहुत कुछ हानि उठाते हैं, शराब की तेजी से फेफड़ा गलकर जल्द ही मरजाने का निश्चय कर लेते हैं पर तो भी शराब पीना नहीं छोड़ते हैं, ऐसा ही बहुत से रण्डीबाज आतशक की बीमारी होजाने और महाकष्ट उठाने पर भी यह कुकर्म नहीं छोड़ते हैं और बेधड़क वहीं दौड़ते हैं, इस ही प्रकार हमारे हिन्दुस्तानी भाई कुरीतियों के कारण अनेक प्रकार की महान् हानि उठाते हुए भी उन कुरीतियों को नहीं छोड़ते हैं।

इस ही प्रकार और भी लाखों दृष्टान्त दिये जा सकते हैं जिनसे यह बात स्पष्ट सिद्ध होती है कि मनुष्य किसी एक कषाय में फँस कर और किसी एक चाह में पड़कर अपनी ही अनेक बातों की हानि कर डालता है, यहां तक कि अपनी उस कषाय को और अपनी उस चाह को दुखदाई मानता हुआ भी उसे नहीं छोड़ता है बल्कि उसके अनुसार ही चलता है, ऐसे मनुष्यकी यह सब क्रियायें तीव्र मोह अर्थात् किसी एक बात की तरफ किसी कषाय के ज्यादा भड़क जाने और ज्यादा तेज होने के कारण ही होती हैं इस वास्ते ऐसे कामों को करते हुए वह अधर्म ही करते हैं और पाप ही कमाते हैं; धर्मात्मा पुरुषोंको वाजिब है कि वह कदाचित् भी अपनी कषाय को न तो इतना भड़कने दें और न वह किसी चीज में इतना मन ही फँसा लें न इतनी किसी चीज की चाह ही बढ़ा लें और न अपनी इन्द्रियों को अपने ऊपर इतना क़ाबू ही पाने दें जिससे उनको स्वयम् ही हानि पहुंचती हो और खुद अपने ही कारज बिगड़ते हों यदि वह अपने सब कामों में इस प्रकार की सावधानी रखते हैं और अपनी किसी भी कषाय को इतना प्रबल नहीं होने देते है और न आंख, नाक, कान, जिह्वा और स्पर्श इन पांचों इन्द्रियों के विषय में

ही ऐसे बेक़ाबू होजाते हैं जिससे वह अपना ही नुक़सान करलें तब तो बेशक वह धर्मात्मा हैं और अपनी मन्द कषाय के कारण पुण्य ही कमाते हैं और अगर वह ऐसा नहीं कर सकते हैं तब तो वह अपनी कषाय की तेजी के कारण अधर्मी ही हैं और पाप ही कमाते हैं।

दृष्टान्तरूप यदि कोई मनुष्य यह निश्चय होजाने पर भी कि इस चीज के खाने से मुझको रोग पैदा हो जावेगा या बढ़ जावेगा या रोग जाता २ रुक जावेगा, अपनी जीभ के स्वाद के वश होकर फिर भी उस चीज़ को खाता है, या किसी दवाई को अपने वास्ते गुण-कारी समझकर भी उसके कड़वे कसेले होने के कारण उसको नहीं खाता है तो बेशक वह अपनी जीभ के वश में है और उसका इस क़दर अपनी जीभ के वश में होना तीव्र मोह अर्थात् कषाय की तेज़ीके ही कारण है इस वास्ते वह इस प्रकार अपनी जीभके वशमें होने से अधर्म ही करता है और पाप ही कमाता है, इसके विरुद्ध जो मनुष्य इतना अपनी जीभ के वश में नहीं होता है बल्कि रोग दूर होने के वास्ते कड़वी कसैली सब ही चीज खा लेता है और जिन चीजों को हकीम मना करता है उनकी तरफ़ अपने मन को नहीं चलाता है वह इस मामले में अपनी कषाय हलकी ही रखता है इस वास्ते वह इस कार्य्य में धर्म ही कर रहा है और पुण्य ही कमा रहा है, ग़रज सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक जो भी कार्य्य हम करते रहते हैं उनमें अपनी किसी आदत, ख्वाहिश या किसी प्रकार की भड़क से लाचार होकर जो २ काम हम ऐसे कर बैठते हैं जिनसे खुद हमको ही हानि पहुंचती हो और अगर हम अपनी आदत, ख्वाहिश या भड़क से लाचार न होते तो वह कार्य्य न करते तो उन कामों के करने में जरूर हम अपनी तेज कषाय के ही वश में होते हैं इस वास्ते जरूर वह सब काम अधर्म और पाप

के ही काम हैं, इसके विरुद्ध जो २ भी काम हम अपने नफ़े नुकसान को विचार कर और उसके ही अनुसार अपनी आदतों और ख्वाहिशों को दबाकर और अपनी कषायों को हलका करके शान्ति के ही साथ करते हैं वह सब धर्म और पुण्य के ही काम हैं, इस कारण धर्मात्मा पुरुषों का यह ही धर्म है कि वह कोई भी कार्य्य अपनी आदत, ख्वाहिश वा कषाय से लाचार होकर न करें बल्कि अपनी हानि लाभ का अच्छी तरह विचार करके और अपनी कषाय को हलकी रखकर ही कार्य्य किया करें और उसके अनुसार अपनी आदतों और ख्वाहिशों को दबाते रहा करें, ऐसा करनेमें ही उनको पुण्य की प्राप्ति है और यह ही उनका असली धर्मसाधन है।

संसार में अनन्तानन्त जीव बसते हैं और वह सब अपनी २ कषाय के अनुसार ही काम करते हैं और कषाय इन जीवों की ऐसी तेज होती है कि जो इनसे इनके ही नुकसान के काम भी करा देती है तब कषाय के वश होकर दूसरों का नुकसान करना तो बहुत ही मामूली बात है, चुनाचि देखने में भी यह ही आता है कि दुनियांके सब ही जीव अपनी २ कषाय में मस्त होकर उस कषाय के अनुसार अपनी २ ग़रज़ बांध लेते हैं और उस ग़रज़ के पूरा करने के वास्ते दुनियां भर को तहस नहस कर डालने के वास्ते तैयार रहते हैं और दूसरे जीवों के स्वार्थ को विगाड़कर अपना स्वार्थ बनाने की ही कोशिश में लगते हैं, इस ही वास्ते संसार में अनेक झगड़े उठते हैं और सब तरफ़ अशान्ति ही अशान्ति फैलती है, इस ही अशान्ति को कम करने और इन ही झगड़ों को मिटाने के वास्ते संसार के लोगों ने मनुष्यों २ में यह तै कर लिया है कि दुनियां की चीजों में कौन चीज़ किसकी है और कौन किसकी और किस २ मनुष्य को किस २ चीज़ पर क्या २ अधिकार है और वह अपने अधिकार को किस तरह काम में ला सकता है और किस तरह संसार में विचर सकता है, जिससे दूसरे मनुष्यों को नुकसान न हो, ऐसा करने से

संसार में बहुत कुछ शान्ति होगई है और एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने की बहुत कुछ रोकथाम बँध गई है, लेकिन अधिक कषाय के लोग फिर भी नहीं मानते हैं और मनमाना करने पर ही उतारू रहा करते हैं, इस वास्ते जगह २ के लोगों ने अपने में से अपना २ एक २ राजा भी मुकर्रर कर लिया है और उसको यह अधिकार दे दिया है कि वह नियम विरुद्ध चलने वाले को और दूसरों के हकों पर हापटा मारने वाले को रोके और जरूरत हो तो उनको उचित सजा देवे, फिर समय के अनुसार जैसी २ जरूरत पड़ती जाती है लोग उन अपने बांधे हुए नियमों को बदलते भी रहते हैं और इस तरह झगड़ों के मेटने और शान्ति के रखने की बहुत कुछ तदवीर करते हैं, इतना बन्दोबस्त होजाने पर भी जो कोई मनुष्य इन नियमों को तोड़ता है और दूसरों के हक पर हाथ बढ़ाता है उसको तो निस्सन्देह तेज ही कषाय है इस वास्ते वह तो साक्षात् ही अधर्मी है और पाप कमाता है और जो कोई इन नियमों का पूरा २ ख़याल रखता है और अपनी कषाय को दबाकर इन नियमों से बाहर नहीं जाता है और इन नियमों के अनुसार जो कुछ भी उसको मिलता है उसपर ही सन्तोष करता है वह ऐसा करने से जरूर अपनी कषाय को हलकी ही बनाये रखता है और कषाय को हलका रखने से मानो वह तो हरवक्त धर्मसाधन ही करता है और पुण्य ही कमाता है।

यहां इतना कह देना जरूरी है कि जो कोई मन से तो इन नियमों को तोड़ना चाहता है और दूसरों के हकों पर हाथ चलाने की इच्छा रखता है लेकिन अपनी कमजोरी से या अवसर न मिलने से या किसी प्रकार के भय से या किसी अन्य कारण से चुप बैठा है तो वह भी अपने परिणामों की खराबी और कषाय की तेजी की वजह से अधर्म ही कर रहा है और पाप ही कमा रहा है, इस ही प्रकार अगर हम अपनी चीजों अपने हकों और अपने अधिकारों में भी

अधिक मोहित होजाते हैं और उनकी प्राप्ति करने या स्थिर रहने में भी अधिक विह्वल और आकुलित रहते हैं और उनके जाते रहने में रोने लग जाते हैं और यदि कोई हमारे इन हकों को छीन लेता है या दबा बैठता है तो बहुत ही बेचैन होजाते हैं और उसपर ज्यादा कषाय करने लगते हैं तो कषाय की तेजी होजाने से ऐसा करने में भी हम अधर्म ही करते हैं और पाप ही कमाते हैं, ग़रज़ गृहस्थी का धर्म या अधर्म और पुण्य या पाप सब उसकी कषाय के तेज़ या हलका होने पर ही निर्भर है, इस वास्ते हमको हरवक्त अपने परिणामों की ही सँभाल रखनी चाहिये और अपनी कषायों को हलका रखने की ही कोशिश करनी चाहिये, यह ही हमारा धर्मसाधन है और इस ही से आगामी के वास्ते भी पुण्य कर्मों की ही प्राप्ति है।

अनेक प्रकार की कषायों में काम कषाय भी बहुत ही ज्यादा प्रबल है, इस ही कषाय के कारण पुरुष तो स्त्रियों पर और स्त्रियां पुरुषों पर मोहित होती हैं और इस मोह की ऐसी तेज़ भड़क होती है और ऐसा ज़बरदस्त नशा चढ़ता है कि मनुष्य अपनी सुध बुध सब भूल जाता है और अपनी जान माल सब कुछ न्योछावर कर देने को तैयार होता है, इस काम कषाय के कारण बड़े २ झगड़े और खून ख़राबे होते हैं और बहुत कुछ अशान्ति रहती है, मनुष्यों ने इस भारी फ़िसाद के हटाने के वास्ते ही विवाह का तरीक़ा निकाला है जिससे एक खास पुरुष और एक खास स्त्री ही आपस में काम भोग कर सकें और संसार के अन्य सब ही स्त्री पुरुषों से कामवासना का कोई किसी प्रकार का भी सम्बन्ध न रखें, ऐसा प्रबन्ध होजाने से संसार में बहुत ही कुछ शान्ति होगई है और बहुत कुछ झगड़े और खून खराबे बन्द होगये हैं और लोगों की काम कषाय भी बहुत कुछ घट गई है, क्योंकि विवाह की प्रथा न जारी होने की अवस्था में तो प्रत्येक पुरुष संसारकी सब ही स्त्रियों पर कामभोग की ख्वाहिश चलाता था और प्रत्येक स्त्री भी संसार

के सब ही पुरुषों से काम भोग की इच्छा रखती थी, लेकिन इस विवाह को रीति ने प्रत्येक स्त्री की इच्छा को एक ही खास पुरुष पर और प्रत्येक पुरुष की इच्छा को एक ही खास स्त्री पर ठहरा दी है और अपनी इच्छाओं को अन्य किसी स्त्री पुरुष की तरफ़ चलाने से उनको बिल्कुल ही रोक दिया है, इस वास्ते इस विवाह की प्रथा से तो मनुष्यों की यह काम भोग की इच्छा बहुत ही छोटीसी हद्द के अन्दर रह गई है और इस प्रकार बहुत ही ज्यादा घट गई है, लेकिन अब अगर कोई स्त्री पुरुष इस हद्द को उलङ्घन करता है और अपनी इच्छा को अपनी व्याही हुई जोड़ी से बाहर लेजाता है तो बेशक उसकी यह काम कषाय बहुत ही ज्यादा तेज है इस वास्ते ऐसा करने से वह अधर्म ही करता है और पाप ही कमाता है, और जो स्त्री या पुरुष अपनी व्याही हुई जोड़ी में ही सन्तोष रखता है और अपनी इच्छा को उससे बाहर नहीं जाने देता है तो बेशक उसकी यह काम भोग की कषाय बहुत हलकी है इस वास्ते ऐसा करने से वह धर्म ही करता है और पुण्य ही कमाता है।

लेकिन इसमें भी इतनी बात है कि धर्म अधर्म वा पुण्य पाप यह सब कषायों के हलका भारी होने पर ही निर्भर हैं, इस वास्ते अगर कोई स्त्री अपने ही विवाहित पुरुष में वा कोई पुरुष अपनी ही विवाहित स्त्री में भी अधिक आशक्त होता है और उस अपने विवाहित जोड़े के प्रेममें ही अधिक मोहित होता है और इस प्रकार इस छोटीसी हद्द के अन्दर ही अपनी कषाय को बढ़ने देता है तो वह भी सचमुच अधर्म ही करता है और पाप ही कमाता है।

मनुष्य में बातचीत करने की शक्ति ऐसी अद्भुत है कि ऐसी संसार के किसी भी पशु पक्षी में नहीं है, इस बातचीत करने की शक्ति से मनुष्य को आपस के व्यवहार में बहुत ही ज्यादा सुभीता होरहा है और उसके बहुत कारज सिद्ध होरहे हैं, बल्कि सच तो यह है कि मनुष्य ने पशु पक्षियों से अधिक जो भी सुख सामिग्री

बनाली है वह सब इस ही बातचीत करने की शक्ति की बदौलत बनाई है, क्योंकि इस शक्ति के द्वारा एक मनुष्य अपनी जानी हुई बात वा अपने विचार दूसरे पर जाहिर करके दूसरे की जानकारी को बढ़ाता है और इस प्रकार एक मनुष्य लाखों, करोड़ों मनुष्यों का अनुभव प्राप्त कर लेता है और फिर उससे अनेक नवीन २ बात निकाल लेता है, इस ही बातचीत की बदौलत एक मनुष्य दूसरे मनुष्यों से अनेक प्रकार की सहायता भी ले लेता है लेकिन मनुष्य अपनी कषाय के वश में होकर कभी २ इस शक्ति को उलटे रूप भी काम में लाने लगता है अर्थात् उलटी बात बताकर और झूंठ बोल-कर मनुष्यों को धोखे में भी डाल देता है, यह बहुत ही भारी अधर्म और महापाप है जिससे गृहस्थी को जरूर बचना चाहिये, क्योंकि यह झूंठ बोलना और धोखा देना भी बिना प्रबल कषाय के नहीं हो सकता है, इस ही कारण जो लोग झूंठ नहीं बोलते हैं बलिक अपने सरल स्वभाव से साफ २ और सीधी २ बात ही करते रहते हैं वह जरूर अपनी कषाय को हलकी ही बनाये रखते हैं और और तेज नहीं होने देते हैं इस वास्ते मानो धर्म ही करते रहते हैं और पुण्य ही कमाते हैं, जीभ से बोलकर बताने के सिवाय मनुष्य अपनी बात दूसरों पर जाहिर करने के वास्ते इशारे वा निशान भी कायम कर लेते हैं, उन ही निशानों में लिखने की विधि है, इस वास्ते इशारे वा निशान वा लिखने के द्वारा भी किसी को झूंठी बात बताना और धोखा देना कषाय की तेजी से ही होता है इस वास्ते वह भी महापाप और अधर्म ही है।

अपनी कषायके वश होकर किसी जीवके शरीर व मनको किसी प्रकार का दुख पहुंचाना भी महापाप है क्योंकि यह भी कषाय की तेजी से ही होता है; इस ही को हिंसा कहते हैं, गृहस्थी को इससे भी बचना चाहिये और अपनी कषाय को हलकी ही बनाये रखना चाहिये जिससे पुण्य की ही प्राप्ती होती रहै, लेकिन इसमें इतनी बात ध्यान देकर समझने के लायक है कि दुनियां में सब जगह

जीव ही जीव भरे पड़े हैं, कोई भी स्थान जीवों से खाली नहीं है; यहां तक कि हवा पानी और मिट्टी आदिक के रूप में भी जीव हैं जो दिखाई नहीं देते हैं, इस वास्ते मनुष्य के वास्ते तो यह बिल्कुल ही असम्भव है कि उसके द्वारा किसी जीव की हिंसा न हो क्योंकि अगर वह खाना पीना, चलना फिरना, बोलना चालना और हिलना जुलना भी छोड़ दें तो भी उसके सांस लेने अर्थात् वायु को अन्दर खींचने से ही हवा के लाखों करोड़ों जीव मरते रहेंगे और गृहस्थी से तो खाना पीना चलना फिरना आदिक कोई भी काम नहीं छूट सकता है इस वास्ते वह तो वह ही हिंसा छोड़ सकता है जिसमें उसकी कषाय अधिक भड़कती हो, क्योंकि उसने तो इतना ही धर्म ग्रहण किया है कि अपनी कषायों को तेज नहीं होने देना बल्कि उनको हलका ही रखना।

संसार में जीव दो प्रकार के हैं, एक तो ऐसे हैं जो चलते फिरते हैं जैसे कीड़े मकौड़े, गाय भैंस, मनुष्य आदिक, ऐसे जीव त्रस कहलाते हैं, दूसरे वह हैं जो चलते फिरते नहीं हैं इस वास्ते देखती आंखों से जिनमें जीव होने का सबूत भी नहीं होता है बल्कि अन्य हेतुओं से ही जिनमें जीव माना जाता है जैसे बनस्पति वा वह जीव जिनकी काया ही हवा पानी वा मिट्टी आदिक है, ऐसे जीव स्थावर कहाते हैं, स्थावर जीव तो हमारी नित्य की मामूली क्रियाओं में अर्थात् सांस लेने, उठने बैठने, चलने फिरने और खाने पीने आदिक कामों में मरते ही रहते हैं, उनकी हिंसा से बचना तो गृहस्थी के वास्ते असम्भव ही है, सांस लेने में तो वायु काय के लाखों करोड़ों जीव हमारे पेट में जाकर मर जाते हैं, इस ही तरह पानी पीने में भी जलकाय के करोड़ों जीव हमारे पेट में पहुंच जाते हैं, घोड़े को घास खिलाने में बनस्पतिकाय के लाखों करोड़ों जीव घोड़े के पेट में पहुंचा दिये जाते हैं इत्यादिक अनेक रीतियों से स्थावर जीव तो मनुष्य के द्वारा मरते ही रहते हैं जिनका मारना तो

वह छोड़ नहीं सकता है और यह जीव चलते फिरते या हिलते झुलते हुए नज़र भी तो नहीं आते हैं इस वास्ते इनके मारने के लिये गृहस्थी को अपनी कषाय भी तो तेज नहीं करनी पड़नी है बल्कि यह स्थावर जीव तो गृहस्थी की हलकी से हलकी कषाय में गृहसम्बन्धी मामूली से मामूली क्रियायें करते हुए भी मरते ही रहते हैं, तो भी गृहस्थी को चाहिये कि वह बेज़रूरत वृथा ही स्थावर जीवों को न मारे, यदि वह ऐसा करता है तो जरूर पाप कमाता है, रहे चलते फिरते त्रस जीव वह भी दुनियां में इतने भरे पड़े हैं और हर वक्त हर जगह इतने पैदा होते रहते हैं कि गृहस्थी बहुत शान्ति के साथ अपना मामूली काम करता हुआ भी उनकी हिंसा से नहीं बच सकता है, जैसा कि सड़कों पर कीड़े मकौड़े आदिक अनेक प्रकार के छोटे २ जीव इतने फिरते रहते हैं कि पैदल फिरने वा सवारी में बैठकर चलने में वह लाखों करोड़ों ही मर जाते हैं, इस ही तरह खेती, दुकानदारी, कारीगरी, सौदागरी, जमींदारी, साहूकारी, नौकरी चाकरी, अफ़सरी, मातहती और हाकिमी आदिक सब ही प्रकार की आजीविका करते हुए और मकान बनाने चिराग़ जलाने, रोटी बनाने, आग जलाने, अनाज बटोरने, पीसने, कूटने, झाड़ू बुहारू आदिक गृहस्थ के सब ही कामों में यह छोटे छोटे जीव बराबर ही मरते रहते हैं और इनके मरने में गृहस्थी को अपनी कषाय में तेजी भी नहीं लानी पड़ती है, बल्कि बहुत ही हलकी कषाय रखकर गृहस्थ का कारज करते हुए भी यह जीव मर ही जाते हैं, इस प्रकार हलकी कषाय रखते हुए और किसी भी जीव के मारने का इरादा न करते हुए भी गृहस्थ के कामों में जो त्रस जीव मर जाते हैं वह आरम्भी और उद्योगी हिंसा कहलाती है जिससे गृहस्थी बच नहीं सकता है और उसकी हलकी कषाय होने के कारण इस हिंसा से उसको खोटे कर्मों का बन्ध भी नहीं होता है।

आरम्भी और उद्योगी हिंसा के अलावा गृहस्थी विरोधी हिंसा से भी नहीं बच सकता है क्योंकि संसार में बहुत मनुष्य ऐसे हैं जो

अन्याय अनीति करके दूसरों के हकों को छीनना और दबाना चाहते हैं और अपनी तेज कषाय के वश होकर दूसरों पर जबरदस्ती करने और उनको नुकसान पहुंचाने के वास्ते तैयार रहते हैं और मनुष्यों के अलावा अन्य भी बहुत ऐसे जीव हैं जिनसे मनुष्य को अनेक प्रकार का नुकसान पहुंचता है या नुकसान पहुंचने की सम्भावना रहती है, गृहस्थी वह ही है जो इतना त्यागी नहीं है कि इस प्रकार के नुकसानों को चुपचाप सहन करता रहे और रक्षा का कोई उपाय न करे, इस वास्ते अपने जान माल और अपने हकों की रक्षा करने के वास्ते उसको अपने विरोधियों का मुकाबिला भी करना पड़ जाता है जिसमें उन विरोधियों को दुख भी पहुंच जाता है, यह ही विरोधी हिंसा है, परन्तु इस हिंसा को करते हुए भी गृहस्थी को अपनी कषाय हलकी ही रखनी चाहिये और अपने हृदय में किसी प्रकार की भड़क या कषाय की तेजी नहीं लानी चाहिये जिससे वह किसी जीव को उससे ज्यादा दुख न पहुंचा सके जितना कि अपनी जान माल की रक्षा के वास्ते जरूरी पड़ गया है, दृष्टान्तरूप अगर किसी ने हमारा रुपया मार लिया है है और डिगरी होजाने पर भी नहीं देता है तो हमको चाहिये कि उसको अपनी डिगरी में पकड़वाकर जेलखाने भिजवावें और उसका माल नीलाम करावें जिससे हमको हमारा रुपया वसूल होजावे और इन सब बातों के करने में अपनी कषाय को हर्गिज भी न भड़कावें बल्कि बिल्कुल ठण्डे दिल और साधारण रीति से ही सब काम चलावें, लेकिन अगर हम अन्य प्रकार भी उसकी दुश्मनी करने लगें और उसको वा उसके बाल बच्चों को नुकसान पहुंचने की भावना भाने लगें वा नुकसान पहुंचाने लगें तो यह हमारा कृत्य अपना रुपया वसूल करने की कोशिश से बाहर है और हमारी कषाय के तेज होजाने के ही कारण हैं, इस वास्ते ऐसा हमको नहीं करना चाहिये अर्थात् उससे किसी प्रकार की दुश्मनी नहीं रखनी चाहिये ।

इस ही प्रकार यदि हमारे शिर में जूं या खाट में खटमल वा मकान में भिड़ ततय्ये होजावें तो हमको चाहिये कि बिना क्रोध लाये शान्ति के साथ शिर में से जूं वा खाट में से खटमल निकाल-कर और भिड़ ततय्यों का घर उखाड़कर दूर फेंक देवें. इस ही प्रकार अगर डांस मच्छर वा पिस्सू आदिक होजावें तो धूंआ करके उनको भगा दें वा कुत्ता, बिल्ली, बन्दर वा चील, कउआ आदिक सताते हों तो उनको धमकाकर, डराकर, शोर मचाकर या ज़्यादा ही जरूरत पड़े तो ईंट पत्थर या लाठी मारकर भगा देवें, लेकिन अगर हम अपनी कषाय को भड़काकर उनको जरूरत से ज्यादा दुख देते हैं तो बेशक हम हद्द से बाहर जाते हैं और महापाप कमाते हैं. इस ही प्रकार, अगर कोई वैरी किसी राज्य पर चढ़ आवे वा महाउपद्रव करने लग जावे तो राजा अपने राज्य की रक्षा के वास्ते उससे लड़ेगा और उसकी सेना को मारकर वैरी को हटाने या दबाने की कोशिश करेगा, लेकिन वैरी की सेना के लोगों के पकड़े जाने पर उनको किसी प्रकार का दुख देना वा वैरी के हट जाने पर भी धावा करके उसकी सेना को मारना जरूरत से ज्यादा है और कषाय के तेज होजाने के ही कारण है इस वास्ते महापाप है जि-ससे गृहस्थी को बचना चाहिये. इस ही तरह अगर किसीके मकान पर चोर आजावे या डाका पड़ जावे तो वह मकान वाला और उसके सब हिमायती अर्थात् अड़ोसी पड़ोसी और नगर निवासी उसकी जान माल को बचाने के वास्ते उन चोरों का कुछ भी दर्द न करेंगे बल्कि उनको भगा देने की ही कोशिश करेंगे और अगर वह आसानी से नहीं भागेंगे और ज्यादा ही जोर बांधेंगे तो उनको मार भी डालेंगे और उन चोरों को पकड़वाकर दण्ड भी दिलायेंगे जिससे आगे को भी जान माल की रक्षा होती रहे, लेकिन चोर के भाग जाने और जान मालकी रक्षा होजाने पर भी उनके पीछे दौड़ कर उनको मारते ही चला जाना वा चोर के पकड़े जाने पर अपनी

कषाय निकालने के वास्ते उसको खूब मारना और दुख पहुंचाना यह सब तेज कषायके ही कारण होता है जिससे बचना ही चाहिये।

इस ही तरह अगर कोई आदमी किसी शेर भेड़िये या सांप, बिच्छू आदिक भयानक जीव जन्तु की झपेट में आजावे और बिना मरे या मारे और कोई सूरत नज़र न आवे तो गृहस्थी अवश्य उनको मारकर अपनी जान बचावेगा, परन्तु यदि वह उनको मारे बिदून ही बच सकता हो तो कदाचित् भी नहीं मारेगा, इस ही प्रकार पेट में कीड़े होजाने पर उनको निकालने के वास्ते अवश्य औषधी खावेगा जिससे बहुत से कीड़े मर भी जावेंगे परन्तु जो कीड़े ज़िन्दा निकलेंगे उनको यह कषाय भड़काकर नहीं मारडालेगा कि वह क्यों मेरे पेट में पैदा होगये थे और क्यों मुझको दुख देरहे थे, इस ही प्रकार जैसा कि आजकल के डाक्टर कह रहे हैं कि हैज़ा, प्लेग, बुखार आदिक अनेक बीमारियों के और आतशक, सोज़ाक, खाज, खुजली और दाद आदिक फुनसी फोड़ों के भी कीड़े ही होते हैं और उन कीड़ों को मार डालना ही उन बीमारियों का इलाज होता है, अगर वास्तव में ऐसा ही हो और गृहस्थी को यह निश्चय भी होजावे कि हिन्दुस्तानी मुसलमानी वा डाक्टरी जो कुछ भी इलाज इन बीमारियों का किया जाता है उसमें इन बीमारियों के कीड़े अवश्य ही मारे जाते हैं, और उनके मारे जाने से ही वह बीमारी दूर होती है, तो भी गृहस्थी ऐसा त्यागी नहीं है कि बीमारी का इलाज कराना छोड़ दे बलिक वह तो अवश्य ही दवा खावेगा और बीमारी के कीड़ों को मारकर तन्दुरुस्ती पावेगा, यह सब विरोधी हिंसा हैं जो गृहस्थी को करनी ही पड़ती हैं, परन्तु इनमें भी अपनी कषाय को नहीं भड़काना चाहिये बलिक हलकी कषाय रखते हुए शान्ति के साथ ही अपना काम निकाल लेना चाहिये और यह विरोधी हिंसा जरूरत से ज्यादा तो हरगिज़ भी नहीं करनी चाहिये, यह बात इस दृष्टान्त से भली भांति समझ में आजाती

है कि यदि कोई वैरी किसी राज्य पर चढ़ आवे तो राजा मरेगा और मारेगा और जिस तरह भी हो सकेगा उस वैरी से अपने राज्य को बचावेगा, यह तो विरोधी हिंसा है जो प्रत्येक राजा को करनी उचित है और इसके विदून किसी तरह भी राज्य में सुख शान्ति नहीं रह सकती है परन्तु यदि कोई राजा अपने पास पड़ोस के किसी राजा को कमजोर समझकर अपना राज्य बढ़ाने आदि के वास्ते उसपर चढ़ाई करता है और मारकाट मचाता है तो यह उस विरोधी हिंसा से बाहर है जिसकी गृहस्थों को इजाजत है और किसी कषाय की तेजी में ही की जाती है इस वास्ते अन्याय और महापाप है।

इस प्रकार अपना रोजगार अपनी आजीविका का धन्धा और घर का काम काज करते हुए किसी जीव की हिंसा का इरादा किये विदून ही गृहस्थी से जो हिंसा होती रहती है जिसको आरम्भी और उद्योगी हिंसा कहते हैं और अपनी जान माल की रक्षा के वास्ते जो विरोधी हिंसा करनी पड़ जाती है, इनके सिवाय अन्य प्रकार त्रस जीव की हिंसा करने से तो गृहस्थी को अवश्य ही बचना चाहिये, अर्थात् उसको न तो किसी त्रस जीव की हिंसा का इरादा ही करना चाहिये और न इरादा करके किसी त्रस जीव की हिंसा ही करनी चाहिये, शिकार खेलना, किसी मनुष्य वा पशु पक्षी को मारना, काटना, छेतना, कूटना, पकड़ना, बांधना, रोकना, छेदना, बींधना, डराना, तड़पाना, सताना, दिक् करना, जी दुखाना, कोसना, किसी के वास्ते खोटी भावना करना, बुरा मनाना, भूखा प्यासा रखना, दूसरे का हक छीनना, उसको अपना हक भोगने से रोकना, दबाना, तरसाना वा अन्य प्रकार से दुख देना यह सब सङ्कल्पी हिंसा है जो किसी कषाय की तेजी के कारण ही की जाती है, ऐसी हिंसा के करने में परिणाम भी अति कठोर ही होते हैं जो आगे को भी दुख देते हैं और आगे को भी पाप ही कराते हैं, इस

वास्ते इस सङ्कल्पी हिंसा से तो गृहस्थी को अवश्य ही बचना चाहिये और परिणामों में कभी भी किसी प्रकार की कठोरता वा कषाय की तेज़ी नहीं आने देना चाहिये।

लेकिन राजा वा प्रजा का किसी अपराधी को पकड़ना, न्यायकर्त्ता का उसको दण्ड देना, किसी माता पिता वा सम्बन्धी का अपने बालक को वा किसी गुरु का अपने शिष्य को सुधारने के वास्ते मारना, छेतना, डराना, धमकाना वा किसी डाक्टर का किसी बीमार के फ़ायदे के वास्ते उसको चीरना फाड़ना वा किसी माता का अपने बच्चे को ज़बरदस्ती न्हिलाना, आंखों में काजल डालना वा दवा पिलाना इत्यादिक सैकड़ों काम ऐसे हैं जो किसी प्रकारकी कषाय की भड़क के बिदून शान्ति के साथ बड़ी हलकी कषाय से नेकनियती के साथ ही किये जाते हैं इस वास्ते ऐसे कार्य्य हिंसा नहीं कहलाये जा सकते हैं, बल्कि उपकार में ही शामिल होते हैं और पुण्य के ही उपजाने वाले और धर्म के कार्य्य ही माने जाने लायक़ हैं, लेकिन अगर इन कामों के करते हुए किसी कारण से कषाय भड़क जाय और क्रोध आजाय तो वेशक यह कार्य्य हिंसा में शामिल होजाते हैं और पाप ही उपजाने लग जाते हैं।

गरज़ गृहस्थी का तो धर्म अधर्म और पाप पुण्य जो कुछ भी है वह सब अपनी नियत के भले बुरे होने वा कषायों के हलका भारी होनेपर ही है, इस वास्ते गृहस्थीका तो मुख्य धर्म यह ही है कि वह दुनियां के सब ही कार्य्य करता हुआ किसी समय भी अपनी कषाय को तेज़ न होने दे बल्कि अपनी कषायों को हलकी रखकर हृदय में शान्ति ही बनाये रक्खे, जिससे इस समय भी वह आनन्द ही भोगता रहे और आगामी को भी उसको हलकी कषाय रखने का ही अभ्यास होता रहे अर्थात् हलकी कषाय का ही कर्मबन्ध होता रहे जिससे आगामी को भी उसको आनन्द ही मिलता रहे।

इस विषय में इतनी वात जाननी और ज़रूरी है कि गृहस्थीको केवल अनुचित कार्य्य करने ही से पाप नहीं होता है बल्कि अपने जिम्मे का कार्य्य न करने अर्थात् अपना कर्त्तव्य पालन न करने से भी होता है जैसा कि वेटीकी रक्षा शिक्षा और पालना उस ही तरह न करनी जिस तरह कि वेटेकी करते हैं, मरजानो और गढेमें दबनी उसका नाम धरना, देख २ कर झुरना और उसका मरना मनाना और वेटी पैदा होने पर जच्चा की भी अच्छी तरह टहल न करना, अपनी मान बड़ाई या किसी प्रकार के लालच के कारण कन्या को अमीर घर किन्तु अयोग्य वरसे व्याह देना, किसी प्रकार के लालच में आकर या वैसे ही वेपरवाही करके उसको किसी बुड्ढे या बच्चे से व्याह देना, एक स्त्री के होते हुए दूसरी स्त्री व्याह लाना और इस तरह अपनी पहिली स्त्री की छाती पर मूंग दलना या अन्य किसी रीति से अपनी स्त्री को दुख देना, उसकी पालना अच्छी तरह न करना, उसकी तरफ से वेपरवाही रखना, परस्त्री से नेह लगाना वा रण्डीबाजी करना और इस तरह अपनी स्त्री का दिल दुखाना, अपने बूढ़े माता पिताकी पूरी तरह टहल सेवा न करना उनकी तरफ़से वेपरवाही करना वा उनको दुख पहुंचाना, अन्य भी जो कोई हमारे आश्रित हों, जिनकी पालना या रक्षा शिक्षा हमारे जिम्मे आपड़ी हो उनकी योग्य पालना वा रक्षा शिक्षा न करना उनको दिक़ करना वा नुक़सान पहुंचाना वा उनकी तरफ से वेपर्वाही रखना इत्यादिक सैंकड़ों ऐसी बातें हैं जो साक्षात् सङ्कल्पी हिंसामें शामिल हैं और इस कारण महाअधर्म और पाप हैं, जिनसे प्रत्येक गृहस्थी को बचना चाहिये बल्कि सच तो यों मानना चाहिये कि जो गृहस्थी ऐसी हिंसा से भी नहीं बचता है अर्थात् अपने जिम्मे के ज़रूरी कामों को भी नहीं करता है और यों अपने आश्रितों को दुख पहुंचाता है वह तो ऐसा महानिर्दयी और कठोर हृदयी है कि उससे तो किसी प्रकार की भी हिंसा से नहीं बचा जा सकता है

और किसी प्रकार का भी धर्म नहीं चल सकता है, इस वास्ते गृहस्थी को तो सबसे पहिले अपने कर्त्तव्य पर ही ध्यान देना चाहिये और उसमें भी अपने आश्रितों को योग्य पालन करना और उनकी सब ज़रूरतों और अधिकारों का ख़याल रखना सबसे ही ज्यादा ज़रूरी और लाज़िमी है।

यहां पर यह बात जान लेना बड़ा ज़रूरी है कि गृहत्यागियोंका तो निवृत्ति धर्म होता है और गृहस्थियों का प्रवृत्ति धर्म अर्थात् गृहत्यागी तो दुनियां को त्यागते हैं उससे दूर भागते हैं और अपनी देह तक से भी नेह तोड़ते हैं, परन्तु गृहस्थी इसके विरुद्ध दुनियां को ग्रहण करता है, दुनियां के अन्दर ही रहता है और दुनियां के सब ही मनुष्यों से नाता जोड़ता है, इस वास्ते गृहस्थी का धर्म तो त्यागियों के धर्म से बिल्कुल ही विलक्षण है बल्कि सच तो यह है कि इन दोनों के धर्मों में धरती आकाश का अन्तर है, इस वास्ते गृहस्थी के धर्म को तो उसके गृहस्थ सम्बन्धी सर्व कार्यों को सामने रखकर ही समझना चाहिये और त्यागियों के धर्म का उसको किञ्चित् भी स्वांग नहीं भराना चाहिये, यहां पर गृहस्थियों से मेरा मतलब उन ही से है जो पूर्ण गृहस्थी हैं उनसे नहीं है जो गृहस्थ को छोड़ने में लग रहे हैं और त्यागियों के मार्ग की तरफ़ झुक रहे हैं, हमारा गृहस्थी तो मनुष्यों के बीच में ही रहता है और उनसे सब ही प्रकार का व्यवहार रखता है, इस वास्ते वह तो सब से मिलजुलकर, सबसे सलूक रखकर और आपस में एक दूसरे के काम आकर ही अपना गुज़ारा कर सकता है, इस ही वास्ते गृहस्थी के तो कुछ ऐसे ज़रूरी कर्त्तव्य भी होते हैं जो उसको राजाके वास्ते, नगर निवासियों के वास्ते, अड़ोस पड़ोस के वास्ते, प्रजाके वास्ते, मां बापके वास्ते, बेटा बेटीके वास्ते, रिश्तेदारों के वास्ते, नौकरों के वास्ते और अन्य भी अनेक प्रकारके मनुष्योंके वास्ते करने पड़ते हैं, इन कर्त्तव्यों के पालनेमें ही उसका गृहस्थ धर्म है और अगर वह

नहीं पालता है तो अपने कर्त्तव्यसे गिरता है और पाप ही करता है, क्योंकि मनुष्य अपने कर्त्तव्य से तब ही गिरता है जब कि उसकी कोई कपाय प्रबल होजाती है जिसके कारण वह बिल्कुल ही स्वार्थी हो जाता है और अपने कर्त्तव्य को भूल जाता है, कपाय का प्रबल होना ही महापाप है इस वास्ते कर्त्तव्य को छोड़ना और स्वार्थी होना भी महापाप है जिससे गृहस्थी को अवश्य बचना चाहिये और सदा अपने कर्त्तव्य पालन पर ही आरूढ़ रहना चाहिये, यहां हमको यह बात दिखाने की जरूरत नहीं है कि स्वार्थी मनुष्य तो सदा धक्के ही खाता है और नुक़सान ही उठाता है उसका सब व्यवहार बिगड़ जाता है और सारा जमाना उससे रूस जाता है, इस वास्ते गृहस्थी के वास्ते तो स्वार्थी होना बहुत ही बुरा है, स्वार्थी तो उसको कभी भी नहीं होना चाहिये बल्कि सदा अपने कर्त्तव्य पालन में ही लगे रहना चाहिये, यह कर्त्तव्य- पालन यद्यपि पर उपकार कहलाता है और महान् पुण्य का पैदा करने वाला है, परन्तु जांचने और विचार करने पर तो यह अपना कर्त्तव्य ही सिद्ध होता है जिसका पालन करना हम पर अपनी ही भलाई के वास्ते लाज़िमी और जरूरी है, अपने आप कोई अपराध न करना, अपराधियों को पकड़ना और पकड़वाना, अपराध न होने देना, कोई किसी पर किसी प्रकार का ज़ुल्म या अन्याय करता हो तो उसे बचाना, स्वयम् शांति रखना और शान्ति रहने की कोशिश करना, उपद्रवों को रोकना, राजा प्रजा दोनों को समझाना और सब ही को सुख शान्ति के प्रसार में लगाना और जरूरत पड़े तो पूरी २ सहायता पहुंचाना, अपने अड़ोसियों पड़ोसियों और नगर निवासियों को शान्ति के रखने और उपद्रवों को दबाने में पूरी २ सहायता देना, उनकी सर्वप्रकार की रक्षा करना और उनसे अपनी रक्षा की आशा रखना, सार्वजनिक कामों में शामिल होना और पूरी २ सहायता देना, अर्थात् सर्व साधारण की रक्षा शिक्षा और उन्नति के उपायों में शा-

मिल होना, विद्या प्रचार में पूरी २ मदद देना, अनाथों अपाहजों और दीन दुखियों की पूरी २ सहायता करना उनकी रक्षा शिक्षण प्रबन्ध में पूरा २ भाग देना, अपने मां बाप, बेटा बेटी, स्त्री, नौकर चाकर और अन्य भी सब ही आश्रितोंकी योग्य पालना करना और उनको किसी प्रकार की भी तकलीफ़ न होने देना, इस ही प्रकार की और भी बहुतसी जिम्मेदारियां हैं जिनके पूरा करने के वास्ते गृहस्थी बंधा हुआ है, इन जिम्मेदारियों को पूरा करनेमें वह किसी पर अहसान नहीं करता है और न किसी प्रकार का पराया उपकार ही करता है बल्कि वास्तव में वह तो अपना ही ऋण चुकाता है, क्योंकि मनुष्य के रहन सहन का ढांचा ही ऐसा बना हुआ है जो आपस की सहायता और इन सब जिम्मेदारियों को पूरा करने से ही चलता है, अगर हमसे पहिले मनुष्यों ने इन सब जिम्मेदारियों को पूरा न किया होता तो मनुष्य के रहन सहन का ढांचा ही बिगड़ जाता और महा उपद्रव और अशान्ति फैलकर मनुष्य जाति ही नाश को प्राप्त होजाती और यदि नाश को न भी प्राप्त होती तो ऐसी उन्नतशील और हरी भरी अवस्थामें तो कदाचित् भी न रहती जैसी अवस्था में कि यह हमको मिली है और अव्वल तो हम पैदा ही न हो सकते और पैदा भी होते तो अपने सुखकी यह सामिग्रियां न पाते जिनसे कि दुनियां भरी पड़ी है और जो लाखों करोड़ों वर्षों की लगातार कोशिश से ही बनती और बढ़ती चली आरही है, इस वास्ते हम सब बातों के अपने पूर्वजों के ऋणी हैं और इस ऋणको चुकाने के वास्ते ही हमको वाजिब है कि हम इस समय की जरूरतों के अनुसार मनुष्यमात्र की सुख शान्ति रक्षा शिक्षा और उन्नति के वास्ते कोशिश करें और पूरी २ सहायता पहुंचावें।

इसके सिवाय हमारी कषाय तब ही हलकी रह सकती है जब कि हम अपने मोह को संसार के सब ही मनुष्यों के प्रेम में फैला कर उसको पतला और हलका बना देवें और संसारभर को

अपना कुटुम्ब मानकर मनुष्यमात्र की उन्नति की तरफ़ अपने मन को लगावें, अगर हम ऐसा नहीं करते हैं और अपने मोह को अपने तक ही संकुचित रखते हैं और स्वार्थी बनते हैं तो हमारा वह सारा मोह एक ही जगह जमा होकर बहुत ही ज्यादा प्रबल होजाता है और अत्यन्त तेज़ कषायों के रूप में प्रगट होकर महाभयंकर बन जाता है और हमसे खोटे २ ही काम कराने लग जाता है और पापों में ही फंसा देता है, इस वास्ते गृहस्थी का तो यह ही धर्म है और यह ही उसका पुण्यकर्म है कि वह सबको ही अपना समझता रहे और सबका ही हित करता रहै, और इस प्रकार अपने कर्त्तव्यों को पालन करता हुआ अपने गृहस्थ की उन्नति में लगा रहै और पूर्ण रूप से उद्यम करते हुए और सर्व प्रकार की मिहनत उठाते हुए भी जो फल निकले और जो अवस्था बने उस पर ही संतोष धारण करता रहै और यदि कोई आपत्ति आपड़े वा कार्य बिगड़ जाय वा कष्ट उठाना पड़ जाय तो उसको शान्ति के साथ सहन करता रहै और मन में किसी प्रकार की भी घबराहट न लाकर धीरज को ही धरता रहै और किसी प्रकार की भी बेचैनी और व्याकुलता पैदा न होने देवे बल्कि प्रत्येक अवस्था में सुख शान्ति के साथ ही बितावे।

इस प्रकार गृहस्थ धर्म का वर्णन बहुत ही संक्षेप के साथ किया गया है, इस गृहस्थ धर्मको सीखने, जानने पहिचानने जांचने तोलने के वास्ते और इस गृहस्थ धर्म के पालन करने का चाव अपने हृदय में पैदा करने के लिये गृहस्थी को उचित है कि सदा शास्त्रों का स्वाध्याय करता रहै विद्वानों के उपदेश सुनता रहै, न्याय नीति और विज्ञान की पुस्तकें पढ़ता रहै, उत्तम गृहस्थियों की सङ्गति में बैठता रहै, उत्तम पुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ता रहै, उनके गुणों का चिन्तवन करता रहै और उनकी प्रतिष्ठा अपने हृदय में जमाकर आप भी वैसा ही बनने का उत्साह पैदा करता रहै और वैसा ही बनता रहै।

अध्याय २३

मथुरादास का धर्मोपदेश तो वर्णन होगया परन्तु हमारे पाठकों का मन तो बुड्ढे जमनादास का ही हाल जानने के वास्ते व्याकुल होरहा होगा जिस पर पुलिस तो फ़ौजदारी के मुक़द्दमें च-लाये जानेकी कोशिश कर रही है, डिगरीदार लोग उसके माल अ-स्बावको नीलाम करा कराकर अपना रुपया वसूल करनेकी फिकर में लग रहे हैं, बेटे परदेशको निकल गये हैं और उसकी जवान जो़रू अलग गुल खिला रही है सैकड़ों फ़ज़ीहतें खिड़ा रही हैं, तरह तरह से उसका जी जला रही है नाक में दम ला रही है और दोनों हाथों से घर को लुटा रही है सब ही बातों की तरफ़ जमनादास का ध्यान है, सब ही का इन्तज़ाम है लेकिन इस वक्त तो उसकी ज्यादा कोशिश फ़ौजदारी के मुकद्दमों से ही बचने की ही हो रही है, वह बार २ गांव में जाता है; लोगों को फुसलाता है डराता है सब्ज़ बाग दिखाता है और अनेक प्रकार के जाल फैलता है जिससे कोई भी आदमी उसके खिलाफ़ गवाही देने को और अदालत में खड़ा होकर असली २ मामला खोल देने को तय्यार न हो, क्योंकि पुलिस के जासूस ने तो अबतक जो कुछ भी मालूम किया था वह सब भेष बदल कर गांव के लोगों से मिलकर और उनकी गुप्त बातें सुनकर ही मालूम किया था, लेकिन अब तो गुप्त बातों से काम नहीं चलता है बल्कि भरी कचहरी में गवाही देना पड़ता है तब ही मुक़द्दमा चलता है, इस वास्ते पुलीस गांव वालों पर बड़ा ज़ोर देरही है और उनको गवाही देने के वास्ते मजबूर कर रही है।

इधर जमनादास का गांव वालों पर यह मन्तर चल रहा है कि अगर तुमने सच २ बातें खोली और राजरानी के यहां चोरी होने, शेरसिंह पर गांव में चोरियां कराने का झूठा इल्ज़ाम लगाने

और राजरानी पर गर्भ गिराने का मामला चलाने की बातों को साफ़ २ जाहिर कर दिया तो तुम भी नहीं बचोगे बल्कि सब ही फसोगे क्योंकि मेरा तो सिरफ़ सलाह बताना और दूर बैठे टिट-कारी ही लगाना था, काम तो जो कुछ भी किया गया है और जो कुछ भी जाल रचा गया है वह सब तो तुम लोगों ने ही किया है, इसके अलावा यह भी मैं खोल कर कह देता हूं कि अगर तुममें से एक भी मेरा नाम लेगा और मुझ पर मुक़द्दमा चलेगा तो तुम जानते ही हो कि मरता क्या नहीं करता, इस वास्ते तब तो मैं ही तुम सब का नाम लूंगा और झूंठ सच बोलकर तुम सब को ही फँसवाऊँगा बल्कि खुद अपराध को स्वीकार करके सरकारी गवाह बन जाऊंगा और तुम सब को फँसाकर साफ निकल जाऊँगा, जमनादास का यह मंतर गांव वालों पर चल गया और उन सबों ने मामले को दबाने और छिपाने की ही सलाह बांध ली, पुलिस ने उनको बहुत कुछ डराया, धमकाया, मारा पीटा, खुद कप्तान साहब भी बारबार गांव में आये और उन्होंने भी लोगों को बहुत समझाया लेकिन गांव का एक भी आदमी गवाही के वास्ते तय्यार न पाया, लाचार पुलिस को यह सब मामले छोड़ देने पड़े।

इसके बाद पुलिस ने जमनादास पर चोरी का माल मोल लेने और बेचने का मुक़द्दमा चलाना चाहा, लेकिन इसमें भी कोई खास मामला न बन सका और आंखों देखी कहने वाला कोई गवाह न मिल सका, आख़िर को लाचार होकर पुलिस ने कप्तान साहब के हुक्म से जमनादास पर बदमाशी का मुकद्दमा चलाया और चोरों को अपने पास बिठाने और उनको सहायता देने का इल्ज़ाम लगाया, इस मुक़द्दमे में आंखों देखी कहने वाले गवाहों की ज्यादा ज़रूरत नहीं थी बल्कि सुनी सुनाई कहने से भी काम चल सकता था इस वास्ते पुलिस ने शहर के सब ही बड़े २ आदमियों

को दबाया और जो इनकार करे उसको भी जमनादास का साथी बनाने के लिये डराया, बात सच्ची थी कहने में कोई दिक़्क़त नहीं थी जमनादास के डिगरीदारों की भी ऐसी ही कोशिश थी, इसके अलावा जमनादास ने अपनी चलती में हाकिमों को खुश करने के लिये बहुत लोगों पर टैक्स कराया था, अनेक तरह से सताया था और पुलिस की भी तरफ़दारी करके बहुतों को फँसाया था इस वास्ते अब सब के ही ज़ख़म हरे होगये और जमनादास के खिलाफ़ गवाही देने पर खड़े होगये, ग़रज़ बदमाशी का यह मामला पूरी तरह से बँध गया और मुक़द्दमा चल गया।

अब जमनादास को मुकद्दमे की पैरवी की फिकर पड़ी और हाईकोर्ट से एक बढ़िया बैरिस्टर बुलाने की तदबीर करी जो एक हज़ार रुपये पेशी पर आने के लिये आमादा हुआ, उसके सिवाय और भी दोचार वकील मुख्तार करने का इरादा हुआ और मुक़द्दमे के कुल खर्च के लिये पंद्रह हजार रुपये का अंदाज़ा हुआ, लेकिन जब से जमनादास पर लोगों की डिगरियां होनी शुरू होगई थीं तब से जमनादास के क़रज़दारों ने भी रुपया वापिस देना बन्द कर दिया था और जमनादास भी उनपर इस खयाल से नालिश नहीं करता था कि डिगरी होजाने पर मेरे डिगरीदार इन डिगरियों को भी अपनी डिगरी में कुर्क करा लेंगे और मुझे एक कौड़ी भी न लेने देंगे, जेवर जमनादास की जोरू ने पहिले से ही खोखिंडा दिया था और जो कुछ रहा था उसको वह दिवाल भी नहीं थी; हां उस औरत के भाइयों के पास उसका बहुत सा रुपया ज़रूर जमा था जिसको इस आड़े वक्त में उस औरत ने वापिस लेना चाहा, लेकिन उसके भाइयों ने बहाना ही बनाया और ज़्यादा दबाने पर रूखा सा जवाब ही आया, जमनादास ने अपने डिगरीदारों से बचने के वास्ते अपनी जायदाद के फ़र्ज़ी बैनामे भी अपने मित्रों के नाम लिख दिये थे और अपना रुपया पैसा और माल

अस्वाब भी उनहीं के पास रख दिया था, अब जमनादास ने चाहा कि मैं अपनी जायदाद उनसे वापिस लेकर बेच डालूं और अपना रुपया पैसा भी उनसे लेकर इस मुकद्दमे में लगादूं, मगर कैसी जायदाद और कैसा रुपया, यहां तो जमनादास की हवा बिगड़ते ही सबने तोते जैसी आंख बदल ली और तरह २ की बातें बनाने लगे और अपना ही रुपया जमनादास के ज़िम्मे बताने लगे, ग़रज़ इस वक्त तो जमनादास चौड़े मैदान में खड़ा रह गया था और जिनको वह बड़े यार ग़ार और अपने पसीने के बदले खून बहाने वाला समझता था वह सब थोथे धान और पक्के बेईमान निकले।

इस समय जमनादास मछली की तरह तड़पता था पर कुछ भी नहीं बन पड़ता था, वह एक तरफ़ तो फौजदारी के मुकद्दमे की पैरवी को और दूसरी तरफ़ अपने धन दौलत को रोता था लेकिन कोई भी तदबीर नहीं निकलती थी और कुछ भी तसल्ली नहीं होती थी; मुक़द्दमे की खबर सुनकर उसके बेटे तो बेशक दौड़े हुए आये और सौ दो सौ रुपये भी साथ लाये, इससे ज्यादा तो वह बेचारे ला भी नहीं सकते थे, क्योंकि वह तो अपना ही गुज़ारा ज्यों त्यों करके करते थे, आख़िरकार जमनादास को अपना भाई मथुरादास ही याद आया और इस मुसीबत के वक्त में उस ही को अपना सहारा पाया, लेकिन अफ़सोस कि उसकी तो यह आशा भी धूल में मिल गई जब उसको अपने बेटों से यह अत्यन्त ही दुखदाई बात मालूम होगई कि मथरादास का तो दिवाला निकल चुका है और उसके पास तो एक फूटा रीठा भी बाक़ी नहीं रहा है, वह तो अब पचास रुपये उधारे लेकर आटा दाल की दूकान करता है और दो चार आने रोज़ कमाकर ही अपना पेट भरता है, यह दुख भरे समाचार सुनकर जमनादास की सब आशाओं पर पानी फिर गया और वह गश खाकर ज़मीन पर गिर गया।

अध्याय २४

मथुरादास के दिवाला निकलने और अत्यन्त दरिद्रावस्था हो-जाने की खबर सुनकर हमारे पाठक अवश्य ही हैरान होंगे और सब से पहिले उस ही का सविस्तर हाल सुनना चाहते होंगे इस वास्ते हम भी इस समय जमनादास के मुकद्दमे की बात छोड़कर मथुरा-दास का ही हाल सुनाते हैं और उस ही की सब बातें दर्शाते हैं।

मथुरादास के विवाह होजाने का हाल तो पाठक सुन ही चुके हैं उसने अपना विवाह कराने के बाद पहिला काम यह किया कि अपनी औरत को लिखाना पढ़ाना, गृहस्थ का उत्तम प्रबन्ध सि-खाना और बुद्धिमान बनाना शुरू किया, क्योंकि वह जानता था कि हिन्दुस्तान के लोग लड़कियों की रक्षा शिक्षा की तरफ़ कुछ भी ध्यान नहीं देते हैं और उनको बिलकुल ही अनजान और मूर्ख बनाये रखते हैं, जिससे वह सारी उम्र डङ्गर के समान बिलकुल उद्दण्ड ही रहती हैं और न तो स्वयम् ही कुछ सुख पा सकती हैं और न अपने पतिको ही कुछ सुख दे सकती हैं बल्कि सदा क्लेश ही मचाये रखती हैं, वह न तो भली भांति सन्तान को ही पाल सकती हैं और न गृहस्थ को ही चला सकती हैं बल्कि बच्चा पैदा करने की कल के सिवाय और किसी भी काम की नहीं होती हैं, मथुरादास खुद ही अपनी स्त्री को शिक्षा देता था, घन्टों कष्ट उठाता था और उसकी मूर्खता का कुछ भी बुरा नहीं मानता था और न उसपर किसी प्रकार की सख़्ती या जबरदस्ती ही करता था बल्कि आहिस्ता २ उसको तमीज़ सिखाता था और उसको बुद्धिमान बनाने की ही कोशिश करता था, चुनांचि थोड़े ही दिनों में उसकी स्त्री बहुत होशियार होगई और अपने हानि लाभ और भले बुरे को समझने लग गई जिससे दोनों को ही अत्यन्त सुख रहने लग गया और प्रत्येक कार्य में दोनों की एक ही सम्मति मिलने लग गई।

दो बरस पीछे उसकी स्त्री को गर्भ रहा और नौ महीने पूरे होने पर बच्चा जनने का दिन आया, गर्भ के दिनों में मथुरादास ने होशियार डाक्टरों और वैद्यों की राय से सब प्रकार का उत्तम प्रवन्ध रखा था जिससे गर्भिणी और गर्भ दोनों ही हृष्टपुष्ट बलवान और तन्दुरुस्त रहें, जनने के समय भी उसने लेडी डाक्टर और इम्तिहान पास करी हुई दाई को बुलाया था और हिन्दुस्तान की महामूर्ख दाइयों पर कुछ भी भरोसा नहीं किया था, मथुरादास बड़ा आदमी था इस वास्ते इस समय उसके अनेक मिलने-चिलने वाले इकट्ठे होगये सब यह ही मना रहे थे कि हे भगवान! लाला के यहां बेटा हो हो बेटी न हो, बल्कि कोई कोई तो सुग्रड़ भलाई लेने के वास्ते अपने २ देवताओं की कबूलियत भी बोल रहे थे कि अगर भगवान करे मथुरादास के यहां बेटा हुआ तो हम अपने देवता पर यह चढ़ावा चढ़ावेंगे और सब ही लोगों को देवता का प्रसाद खिलावेंगे, लेकिन मथुरादास उनकी इन बातों को सुन सुनकर हँसता था और उनसे बारबार कहता था कि बेटा और बेटी दोनों ही बराबर रूप से संसार के चलाने वाले है, संसार में तो जितने बेटे हों उतनी ही बेटियों की ज़रूरत पड़ती है और अगर उतनी बेटियां न हों तो संसार की गड्डी अटकती है, इस कारण बेटों के ही पैदा होने की कोशिश करना और बेटियों की पैदायश को रोकना तो मानो संसार का ही सत्यानाश कर देना है, इस ही वास्ते दुनियां के लोग चाहे कितना ही चिल्लाते रहे और कुछ ही चाहते रहें लेकिन दुनियां में तो जितने बेटे पैदा होते हैं उतनी ही बेटियां होती हैं तब ही उनकी जोड़ियां मिलती हैं, तब ही यह संसार चल रहा है, और लोगों का वंश फल रहा है, अगर दुनियां में बेटे ही बेटे होजावें तब तो हाहाकार मच जावे, और सब ही की वंशबेल सूख जावे, इसके अलावा कम से कम इस वक्त तो यह सोचना चाहिये कि बेटा या बेटी

जो कुछ भी बनना था वह तो महीनों पहिले ही से बन चुका है और अच्छी तरह से पक चुका है तब स्वार्थ के वश होकर अब बच्चा जना जाते समय भी इस बात की प्रार्थना करना और देवी देवताओं को मनाना कि बेटा ही हो बेटी न हो निरा मूर्ख और निपट अंधा बन जाना नहीं है तो और क्या है।

इस पर वह लोग कहने लगे कि लालाजी त्रिलोकी के नाथ को और उसके देवी देवताओं को तो सब कुछ सामर्थ्य है वह जब चाहें कुछ से कुछ कर सकते हैं और पानी से आग लगा सकते हैं, मथुरादास बोला कि अगर ऐसा ही है तो फिर तो लोग बेटी होने का फ़िकर क्यों करते हैं क्योंकि वह तो प्रार्थना करके जब चाहें बेटी को बेटा बनवा लिया करते होंगे क्योंकि इस समय भी जो लोग हमारे यहां बेटा होने को प्रार्थना कर रहे हैं उनको हम सलाह देते हैं कि उनमें से जिस किसी के यहां बेटियां हों वह प्रार्थना करके उनको बेटा बनवालें और त्रिलोकी के नाथ की या देवी देवताओं की सामर्थ्य को आज़मालें, लोगों ने कहा कि अब तो नहीं पर कभी तो ऐसा भी होजाता था, मथुरादास ने कहा कि जब कभी जो होता होगा उससे हमें क्या फायदा, हमको तो जो प्राप्ती होगी वह देवी देवताओं की इस समय की सामर्थ्य से ही होगी, इस वास्ते अब जो कोई देवी देवता खेलती मालती बेटी को बेटा बनादे हम तो उस ही से यह आशा कर सकते हैं कि वह गर्भ में आई हुई बेटी को भी बेटा बना देगा, नहीं तो सब थोथी ही बातें हैं जो वस्तु स्वभाव के सर्वथा विरुद्ध असम्भव हैं और सिवाय भटकावे के और कुछ भी नहीं हैं, लोगों ने कहा कि देवी देवता तो वह ही हैं जो पहिले थे और उनमें तो सामर्थ्य भी उतनी ही है जितनी पहिले थी लेकिन हम लोग ही पापी होगये हैं इस वास्ते हमारी ही प्रार्थना में ताक़त नहीं रही है, नहीं तो बेटी से बेटा बना देना भी देवताओं के वास्ते क्या मुश्किल है, मथुरा-

दास ने कहा कि अच्छा यों ही हमारी ही प्रार्थना में ताक़त नहीं सही लेकिन जब हमारी प्रार्थना में यह ताक़त नहीं रही है कि हम खेलती मालती लड़की को लड़का बनवा सकें तो यह कैसे मान लिया जावे कि हमारी प्रार्थना में यह ताक़त रह गई है कि हम गर्भ में आई हुई लड़की को लड़का बनवा सकें।

लं.गोंने कहा कि अच्छा अगर आप हमारे देवताओंकी सामर्थ्य नहीं मानते हैं तो क्या आप अपने भगवान की भी सामर्थ्य नहीं मानते हैं, मथुरादासने कहा कि वस्तु स्वभावके पलट देनेकी ताक़त तो हम किसीमें भी नहीं मानते हैं और हम ही क्या बल्कि किसी भी मत वाला नहीं मानता है, क्योंकि अगर वस्तु स्वभाव भी बदल सकता होता तो किसान लोग गेहूं पैदा करनेके वास्ते गेहूंका ही बीज क्यों बोते और आम खानेके लिये आमका ही पौदा क्यों लगाते, बल्कि वह तो खेत की डौल पर बैठकर उस ही अनाज का खेत और उस ही फल का पेड़ खड़ा होजाने की प्रार्थना करने लग जाया करते जिसकी उनको इच्छा होती और बिना बोये उस ही अनाज का खेत और उस ही फल का पेड़ लहलहाने लगा करता, बल्कि अगर चना बोने और चने की खेती उग आने और चने के टांट लग जाने के पीछे भी किसी किसान को गेहूं की चाहना होजाती तो वह यह प्रार्थना करने लग जाया करता कि मेरी चनेकी खेती की जगह गेहूंकी खेती होजावे और उसकी प्रार्थनाके अनुसार वह सब चनेके पौदे गेहूंके ही पौदे बन जाया करते और चने के टांट बदल कर गेहूं की बाल होजाया करती, मगर ऐसा होजाने की तो किसी को भी आशा नहीं है और अगर कोई किसान ऐसी प्रार्थना करने लगे तो उसको तो सब लोग पागल ही कहने लगेंगे, और ऐसी प्रार्थना करने वाले को पागल समझने का कारण सिवाय इसके और कुछ नहीं होगा कि ऐसा होना सब लोग असम्भव ही समझते हैं इस ही तरह और भी सब बातों में समझ लेना चाहिये, जैसा कि अगर

हम दाल चूल्हे पर चढ़ाकर पीछेसे यह प्रार्थना करने लगें कि दाल डेगची में से दाल के स्थान में मीठे मीठे चावल निकल आवें, या दाल के स्थान में पतली २ रोटियां पकजावें या और कोई चीज़ बन जावे तो हम पागल ही माने जावेंगे, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि वस्तु स्वभाव को कोई भी नहीं बदल सकता है और जिस २ सामिग्री के मिलने से जो २ चीज़ बनती है उन सब सामिग्रियों को जुटाये बिदून वह कारज कदाचित् भी नहीं हो सकता है।

यह तो रही सर्व साधारण की बात और अगर आप लोग हमारे धर्म की ही बात पूछते हैं तो हमारे जैन धर्म में तो उन ही को भगवान मानते हैं जिन्होंने दुनिया को तो बिलकुल छोड़ दिया है और अपने राग द्वेष को बिलकुल ही नाश कर दिया है, और जैन धर्म में तो सिर्फ वह ही पूजने योग्य हैं जो ऐसे परम वीतरागी होगये हैं या ऐसा होने की पूरी २ कोशिश कर रहे हैं, इस ही वास्ते हम लोग तो अपने भगवान या अन्य पूज्य पुरुषों से दुनिया का कोई भी कार्य कराने की प्रार्थना नहीं कर सकते हैं और न वह हमारी ऐसी प्रार्थना को स्वीकार ही कर सकते हैं, और यदि हम अपने वीतराग भगवान और वीतरागी पूज्य पुरुषों से ऐसी प्रार्थना करें भी तो अवश्य किसी कषाय की तेजी में अन्धे होकर और अपनी विचारशक्ति को खोकर ही ऐसी प्रार्थना करेंगे इस वास्ते पाप ही कमावेंगे, जिससे हमारा वह कारज जिसके वास्ते प्रार्थना की थी सिद्ध तो क्या होगा बल्कि वह तो बनता २ भी बिगड़ जावेगा और ख़राब हो जावेगा।

लोगों ने कहा कि अगर ऐसा ही है तो आप लोग उनको पूजते किस वास्ते हैं, मथुरादास ने कहा कि हम तो उनके वीतराग रूप गुणों की क़दर करने के वास्ते ही उनको पूजते हैं, और अपने हृदय में किसी का बड़प्पन मानने और क़दर करने ही को तो पूजना कहते हैं, सो हम उनके वीतराग रूप गुणों की क़दर करते हैं और

इस बात की कोशिश करते हैं कि उनके यह वीतराग रूप गुण हम में भी आजावें यह ही हमारी पूजा भक्ती है, और इस पूजा भक्ती के वास्ते तो सब ही धर्मों में यह लिखा है कि वह बिना किसी प्रकार की ग़रज के अर्थात् निस्स्वार्थ भाव से ही होनी चाहिये, यह बात सुनकर सब लोग चुप होगये,

थोड़ी देर के बाद मथुरादास के पास बेटा पैदा होने की ख़बर आई सबने ही खुशी मनाई और दान पुण्य करने, नाच मुजरा कराने और नगर भर को दावत खिलाने की बात चलाई, जिसके जवाब में मथुरादास ने कहा कि जो लोग इस तरह अपना रुपया लुटाते हैं वह जरूरी कामों में एक पैसा भी नहीं लगा सकते हैं, अब तो आप लोगों को यह ही बात उठानी चाहिये कि जच्चा की ख़बरगीरी के वास्ते क्या २ प्रबन्ध बांधा जावे और बच्चे की उत्तम पालना के लिये क्या २ इन्तजाम किया जावे, इस समय के मुतअल्लिक़ तो यह ही ज़रूरी बातें हैं, परन्तु बेज़रूरी कामों की तरफ़ ध्यान दिया जावेगा तो इन ज़रूरी कामों में अवश्य कमी पड़ जावेगी रही दान पुण्य की बात उसको मैं गृहस्थी के वास्ते बहुत ही ज़रूरी समझता हूं और अपनी चित्त के अनुसार करता भी रहता हूं, इसमें अगर मैं कमी करता हूं तो आप लोगों को हर-वक्त मुझे समझाने का अधिकार है, लेकिन किसी खुशी में रुपया बांटना हर्गिज भी दान नहीं हो सकता है बल्कि ऐसा करना तो दान की उत्तम प्रथा को मटियामेट कर देना ही कहा जा सकता है, क्योंकि खुशी के मौके पर जो कोई दान के नामसे अपना रुपया लुटा देता है उसको असली दान के वास्ते अवश्य ही अपना द्वार बन्द कर देना पड़ता है, इसके अलावा असली दान तो दुखियाओं का दुःख दूर करने के वास्ते ही होता है लेकिन खुशी के मौके पर जो रुपया बांटा जाता है उसको तो दुखियाओं के दुख दूर करने से कुछ भी सम्बन्ध नहीं हो सकता है, खुशी के मौके पर तो अपनी

खुशी प्रगट करने और लोगों की वाह २ उड़ाने के वास्ते ही धन लुटाया जाता है इस ही वास्ते ऐसे मौके पर बांटे हुवे रुपये को तो अधिकतर वह ही लोग लेजाते हैं जो स्वयम् कमाकर खा सकते हैं और दान लेने के हर्गिज भी अधिकारी नहीं होते हैं, इस ही कारण मैं तो ऐसे दान देने को महापाप समझता हूं क्योंकि इससे तो अनेक प्रकार की खोटी ही खोटी प्रथा प्रचलित होजाती हैं, कमाकर खाने वालों को भी मांगने और हाथ पसार कर दान लेने की आदत पड़ जाती है और असली दान का द्वार बन्द होजाने से बेचारे दुखिया लोग दुख भरते ही रह जाते हैं, हां इस बच्चे के पैदा होने में एक बात मुझको ज़रूर खटकी है कि इस शहर में कोई इम्तिहान पास करी हुई दाई नहीं है, बाहर से बुलाने में बहुत ही ज्यादा खर्च होजाता है और कभी २ बच्चा पैदा होने की इन्तजारी में उस दाई को दस दस दिन ठहरना पड़ जाता है, इस ही कारण शहर के साधारण लोग बाहर से होशियार दाई को नहीं बुला सकते हैं और अपनी मूर्ख दाइयों से ही बच्चा जनवाते हैं और अनेक प्रकार का नुक़सान उठाते हैं, इस वास्ते मैंने यह इरादा कर लिया है कि मैं पचास रुपया महीना सार्वजनिक सभा को देता रहूं जो एक होशियार दाई बुलाकर नौकर रखले और ज़रूरत पड़ने पर वह दाई सब ही के काम आती रहै; यह भी मैं बच्चे के पैदा होने की खुशी में नहीं देता हूं बल्कि इस ही समय इसका ख़याल आने के कारण अब ही से देना शुरू करता हूं।

मैं तो यह समझने बैठा हूं कि अगर कोई विशेष कार्य किसी खुशीके मौक़े पर कर देता है जिसमें उसका खूब नाम होजाता है तो फिर जब और लोगों के यहां भी वह ही खुशी का मौक़ा आता है तो वह भी उस कार्य को अवश्य ही कर दिखाते हैं और ज़रूरत बेज़रूरत या अपनी हैसियत का कुछ भी ख़याल मन में नहीं लाते हैं, होते २ उस काम के करने की एक प्रथा ही चल पड़ती है और

उस खुशी के मौके पर सब को ही वह कार्य करना जरूरी और लाज़मी होजाता है।

अध्याय २५

सार्वजनिक कामों में मथुरादास बहुत ही ज्यादा योग देता था और अपना तन मन धन लगाता था, सौ रुपया महीना तो वह कन्यापाठशालाओं को देता था और डेढ़ सौ रुपया महीना लड़कों की पाठशाला में खर्च करता था, दो सौ रुपया महीना अनाथों अपाहजों दरिद्री कङ्गालों और गरीब रांड़ों की पालना में लगाता था और सवा सौ रुपया महीना औषधालयों में देता था, यह सब रुपया वह सार्वजनिक सभा को ही दे देता था और जैसी २ ज़रूरत पड़ती थी इसमें वह कमती बढ़ती भी करता रहता था, उसका दिया हुआ यह सब रुपया अन्य सब लोगों के चन्दे में ही शामिल होजाता था और उसका कोई विशेष नाम नहीं हो पाता था, इसलिये उसके मित्र उसको सदा यह ही सलाह दिया करते थे कि इतने भारी ख़र्च से तो आप अपने नाम से अपनी एक अलग बड़ी भारी दानशाला खोल सकते हैं जिसमें लड़के लड़कियों के वास्ते पाठशाला भी हो, अनाथों के वास्ते अनाथाश्रम भी हो, बीमारों के वास्ते औषधालय भी हो और मङ्गतों के वास्ते सदाव्रत भी हो, ऐसी दानशाला से तो आपका नाम बहुत दूर तक रोशन हो जावेगा और मुलकों २ में यश फैल जावेगा, परन्तु अब तो आपका दिया हुआ यह सब रुपया सार्वजनिक सभा में ही जमा होजाता है, और दो दो चार चार आने देने वालों में मिल जाता है और आपका कुछ भी नाम नहीं होपाता है लोगों के इस कहने का उत्तर मथुरादास सदा यह ही दिया करता था कि मैं तो इस ग़रज़ से देता भी नहीं हूं कि मेरे दिये को कोई

जाने और मेरा नाम बखाने, बल्कि मैं तो अपना कर्त्तव्य समझ कर ही देता हूं इस वास्ते नाम कैसे पा सकता हूं, इसके सिवाय यह भी तो समझना चाहिये कि अगर मैं अपनी अलग दानशाला खोल बैठूं और दूसरों का दान उसमें न शामिल होने दूं तो, दो दो चार चार आना दान देने वाले बेचारे किस तरह अपना पैसा ऐसे ज़रूरी दान में लगा सकेंगे और किस तरह अपने कर्त्तव्य को पाल सकेंगे।

एकबार नगर में ऐसी हवा चली कि गरीब लोगों को निमोनियां का बुख़ार चढ़ने लगा और तड़ातड़ आदमी मरने लगा, मथुरादास ने तुरन्त ही लोगों को उनकी सहायता के वास्ते उठाया, और सारे शहर से रुपया इकट्ठा करके गरीबों को कपड़ा कम्बल खाना औषधी और अन्य भी अनेक ज़रूरी चीजें दिलाना शुरू किया, एक तरफ से ही दान बांटने लग जाना, जो मांगे उस ही को देना और सदाव्रत सा लगा देना मथुरादास को बिल्कुल भी पसन्द नहीं था, इस वास्ते उसने यह ही नियम निकाला कि बीमारों के पास जावो और जिसको जिस चीज़ की ज़रूरत देखो उसको वह ही चीज पहुंचाओ परन्तु भङ्गी चमार खटीक बल्कि अहेढ़ी गन्धीले डोम आदिक ग़लीज़ और अस्पर्श लोगों के घरों में लोग जाते हुए कतराते थे, इस वास्ते उनके घरों में जाने की और ऐसे बीमारों की देख भाल करने की ज़िम्मेदारी मथुरादास ने खुद अपने ही ऊपर ली, वह बिना किसी प्रकार के सङ्कोच के उनके घरों में जाता था, बीमारों को देखता भालता था, वैद्यों को दिखाता था, उनकी तसल्ली करता था, दवा दारू देता था और बिल्कुल भी नहीं घिणाता था बल्कि इसको अपना कर्त्तव्य समझता था, यह बीमारी उस नगर में ढेढ़ महीने तक रही और पन्द्रह हज़ार रुपया, सार्वजनिक सभा की तरफ से खर्च हुआ जिसमें तीन हजार रुपया तो सारे नगर से इकट्ठा हुआ

था और बारह हजार रुपया मथुरादास ने दिया था, तो भी मथुरादास ने इस काम में अलग खर्च करके अपना ही नाम करना हर्गिज़ भी पसन्द नहीं किया बल्कि यह भी बहुत ही कम ज़ाहिर होने दिया कि उसने कितना दिया है और अन्य लोगों से कितना वसूल हुआ है।

अपने शहर के अलावा हिन्दुस्तान भर की अन्य भी अनेक संस्थाओं को मथुरादास बहुत कुछ सहायता दिया करता था परन्तु उनमें भी वह ध्रुवफण्ड में कभी कुछ नहीं देता था, क्योंकि वह जानता था कि आज जिस संस्था के उत्तम प्रबन्ध को देख कर सहायता देने को जी ललचाता है अगर कल ही को उस संस्था का प्रबन्ध बिगड़ गया तो ध्रुवफण्ड में दिया हुआ रुपया बिल्कुल बर्बाद ही जायगा या कुप्रबन्ध में ही खर्च हुआ करेगा इस वास्ते वह तो जिस संस्था को भी सहायता देता था वह महीने महीने ही देता रहता था और उस संस्था का सब हाल मालूम करता रहता था, और देता भी था वह उस ही संस्था को जिससे वह लोगों का कुछ अधिक उपकार समझता था, लोक दिखावे वा अपने नाम के वास्ते तो वह कुछ भी नहीं देता था, और जिस काम में अन्य लोग बहुत कुछ सहायता कर रहे हैं, उसमें वह कुछ भी नही देता था बल्कि जिसमें अन्य लोगों की कम तवज्जह हो और काम ज़रूरी हो तो उसमें वह पूरी पूरी सहायता देता था सर्वसाधारण के उपदेश के लिये सर्वोपयोगी ट्रैक्टों को वह बहुत पसन्द करता था और ऐसे ट्रैक्टों के बनवाने छपवाने में बहुत कुछ ख़र्च करता रहता था, परन्तु यह सब काम भी वह किसी न किसी सभा के द्वारा ही कराता था और अपना नाम नहीं चाहता था।

अपनी स्त्री को भी वह दो सौ रुपया महीना देता था जिनको वह अपनी इच्छाके अनुसार जिस तरह चाहे दानमें लगावे, वह भी इन रुपयों को बहुत करके स्त्री शिक्षा के प्रचार में ही लगाती थी

वह कई ख्री उपयोगी संस्थाओं और समाचार पत्रों को सहायता देती थी, स्त्रियों के पढ़ने योग्य पुस्तकें बनवाती थी, ट्रैक्ट लिखवाती थी, और भी अन्य ऐसे ही ऐसे उत्तम उत्तम कार्यों में सहायता देती रहा करती थी, मथुरादास दो सौ रुपया महीना अपने बुड्ढे मां बाप को भी इस ग़रज़ से दिया करता था कि वह भी जहां चाहें ख़र्च करते रहैं, लेकिन वह तो दस पांच रुपये महीने की पूजा सामिग्री तो मन्दिरजी में ज़रूर भेज दिया करते थे और बाक़ी सब रुपये को तो वह अपने पास जोड़ २ कर ही रखते रहा करते थे।

लोगों के द्वार पर नित्य सैकड़ों तरह के फ़क़ीर आते रहते हैं और आटा अनाज रोटी और कौड़ी पैसा कुछ न कुछ पाते ही रहते हैं, साधू बैरागी ब्रह्मचारी तिलकधारी जोगी जङ्गम उदासी तीर्थवासी सन्यासी सन्त महन्त, कोई जटा बढ़ाये, कोई भभूत रमाये, कोई कान फटवाये, कोई लम्बा चीमटा खड़काता हुआ, कोई लाल २ आंखों से डराता हुआ, कोई टल्ली बजाता हुआ, शिवजी का ब्याहला गाता हुआ, कोई दोतारा बजाता हुआ, कोई अपने को ब्राह्मण बताता हुआ कोई नंगा होकर जाड़ों में हरगङ्गा करता फ़िरता हुआ, कोई कूआ खुदाने को, कोई बाग़ लगाने को, कोई मन्दिर बनवाने को, कोई बेटी का ब्याह रचाने को मांगता हुआ, कोई अड़ी लगाता हुआ, कोई गालियां सुनाता हुआ, कोई अपने को हिन्दू और कोई मुसलमान बताता हुआ, ग़रज अनेक रूप में आते हैं और गृहस्थियों से सब कुछ मांगकर लेजाते हैं, लेकिन मथुरादास इनको एक कौड़ी भी नहीं देता था, बल्कि इनको देना महापाप बताता था, क्योंकि यह लोग संडे मुसटण्डे होते हैं जो भली भांति कमाकर खा सकते हैं, जितना कुछ भी इनको दिया जाता है अनाथों और अपाहजों के देने में उतना ही कम कम होजाता है, यह ही कारण है कि हिन्दुस्तान के साठ लाख

फ़क़ीर तो मनों बादाम मिसरी घोट २ कर पीजाते हैं, दिन भर सुलफ़े का दम लगाकर हरसाल लाखों करोड़ों रुपये का धूआं कर डालते हैं, मालपूड़े और सोहन हलवा पकाते हैं ज्योनार रचाते हैं गुरु के नाम का भण्डारा बनाते हैं और खूब मजे उड़ाते हैं, रोटियां तो पेट भराई वह अपने कुत्तों और गऊओं को खिलाते हैं और बच रहे तो मछलियों को जिमाते हैं, लेकिन हिन्दुस्तान के ही अनाथ बच्चे, अच्छे २ घरों के लाल जो मां बाप के मर जानेके कारण बिल्कुल ही बेसहारे रह गये हैं वह बेचारे ठोकरें ही खाते फिरते हैं और जब उनको कोई सहारा नहीं मिलता है तो लाचार पादरियोंकी ही शरणमें आते हैं जो उनको ईसाई बनाते हैं और अमरीका आदिक देशोंसे मांग २ कर उनको खिलाते हैं और सब लायक बनाते हैं, इस वास्ते जब तक हिन्दुस्तानके ६० लाख सण्डे मुसटण्डे फ़क़ीरोंको दान मिलना बन्द नहीं होगा तबतक हिन्दुस्तानका रुपया दानमें नहीं लग सकेगा और हिन्दुस्तान के माथेसे यह कलङ्क नहीं मिट सकेगा कि उसके अनाथ बच्चे भूख की वेदना को मिटाने के वास्ते ही ईसाई बनते हैं और अमरीका आदि देशोंके दानसे पलते हैं, जिससे अन्य देशों में यह ही प्रसिद्ध होता है कि हिन्दुस्तान में तो दान देने की प्रथा ही नहीं है इस ही कारण वहां के लोग तो ऐसे निर्दई हैं कि अपने यहां के अनाथ बच्चों की भी पालना नहीं कर सकते हैं बल्कि अपनी आंखों के सामने उनको अपना धर्म छोड़ कर ईसाई बनने देते हैं और कुछ भी तरस नहीं खाते हैं।

अध्याय २६

मथुरादास के पिताके मरनेके दो बरस पीछे उसकी माता का भी देहान्त होगया और मथुरादास ने उसका मरना भी पहिले की तरह बिल्कुल साधारण रीति से ही किया, जमनादास अब की

वार भी आया और जग ज्यौनार करने के वास्ते बहुत शोर मचाया, और इस बात पर बहुत ज़ोर लगाया कि कम से कम यह बात तो ज़ाहिर कर ही देनी चाहिये कि माताजी दो हज़ार रुपये का असबाब तो जैन मन्दिरों में देगई हैं और दो हज़ार रुपये की लागत से एक मकान तीर्थक्षेत्र पर बनाने के वास्ते कह गई हैं, जमनादास ने पिता के मरने पर भी पांच सौ रुपये का असबाब अपने नगर के मन्दिरों में चढ़ाया था लेकिन उस वक्त उसको यह मालूम नहीं होसका था कि पिताजी कुछ नक़दी भी छोड़ गये हैं इस वास्ते यह रुपया उसने अपने पास से लगाया था, लेकिन अब तो यह बात बिल्कुल ही प्रसिद्ध थी कि माताजी पांच हज़ार रुपया छोड़ गई हैं, इस कारण अब की वार तो जमनादास ने बहुत ही पैर फैलाया और इस सारे रुपये को उनके मरने में ही खर्च कर देने के वास्ते ज़ोर लगाया बल्कि कुछ अपने पास से भी लगाकर एक बढ़िया ज्यौनार करने का बीड़ा उठाया, लेकिन मथुरादास ने उसकी एक भी न सुनी और साफ़ २ कह दिया कि माता पिता को जब मैं आपके पास से यहां लाया था उस वक्त उनके पास एक कौड़ी भी नहीं थी, फिर यहां मैंने उनको दो सौ रुपये महीना इस ही ग़रज के वास्ते देना शुरू किया था कि वह अपनी मरज़ी के मुताबिक जिसे चाहें दान करते रहें, लेकिन उन्होंने दस पांच रुपया महीना ही खर्च किया और बाकी सब रुपया बचता ही रहा, वह ही यह रुपया है जो उनके पास से निकला है, मरते समय भी वह कुछ खर्च करने के वास्ते नहीं कह गये हैं, इस प्रकार यह सब बचा हुआ रुपया मेरा ही है, सिवाय मेरे इसमें और किसी का भी कुछ अधिकार नहीं है, और मैं अपना रुपया इस प्रकार खर्च करना हर्गिज़ भी पसन्द नहीं करता हूं जिस प्रकार आप बताते हैं, मैं तो एक कौड़ी भी इन कामों में नहीं लगाऊँगा, हां आपको इख़्तियार है जो चाहें अपने पास से लगावें और जिस

तरह चाहें लुटावें, मेरा कर्त्तव्य तो यह ही था कि उनकी पूरी २ टहल सेवा करूँ और जहां तक होसके उनको किसी प्रकार की भी तकलीफ़ न होने दूं, अपनी समझ के अनुसार यह अपना कर्त्तव्य मैंने भली भांति पालन कर दिया है, इस ही वास्ते मेरे हृदय में पूरी २ शान्ति है और लोकदिखावे का कुछ भी काम करने की इच्छा नहीं है, पिता के मरने पर भी मैंने कहा था और अब भी मैं नम्रता के साथ कहता हूं कि जो लोग लोकदिखावे को ज़रूरी समझते हैं और इसमें बहुत कुछ रुपया खर्च करते हैं वह असली और जरूरी काम में कुछ भी नहीं लगा सकते हैं इस ही वास्ते उनके असली और ज़रूरी काम बिगड़े ही रहा करते हैं और वह अपने कर्त्तव्य पालन से विमुख ही रह जाते हैं, स्पष्ट देख लीजिये जो रुपया आपने पिताजी के मरने पर लगाया था जो रुपया अब आप माताके मरने पर लगाना चाहते हैं अगर इस प्रकार यह रुपया आप उनके मरने के पीछे लगाना जरूरी न समझते तो अवश्य इस रुपये को आप उनकी ज़िन्दगी में उनकी टहल सेवा में लगा सकते परन्तु आपको तो लोकदिखावा करना जरूरी था, इस वास्ते आप तो एक कौड़ी भी उनकी टहल सेवा में न लगा सके और आपके पास रहते हुए उनको महात्रास ही भोगने पड़े, परन्तु मैंने इन लोकदिखावे के कामोंमें एक कौड़ी भी खर्च करना पसन्द नहीं किया, इस ही वास्ते उनकी टहल सेवा में सब कुछ लगा सका और उनको सब तरह का आराम दे सका, इस हेतु मैं तो जब किसी को अपने माता पिता के मरने के पीछे कुछ खर्च करता हुआ देखता हूं तो साफ़ २ यह ही अनुमान लगा लेता हूं कि इसने अवश्य अपने माता पिता को तरसाया है और उनकी टहल सेवा में एक पैसा भी नहीं लगाया है, तब ही तो उनके मरने के पीछे बाजे बजाता है, रुपये पैसे बरसाता है और लोगों को तर माल खिलाता है।

अध्याय २७

ढाई बरस का होकर मथुरादास का पुत्र भी चल बसा, लोगों ने इसके मरनेका बहुत ही ज़्यादा शोक दिखाया लेकिन मथुरादास ने सबको यह ही समझाया कि जिस वस्तु की प्राप्ती की अधिक खुशी होती है उस ही के बिछड़ जाने का रञ्ज भी अधिक ही हुआ करता है, इस ही कारण मैंने इस पुत्र की उत्पत्ति के समय कहा था कि अधिक खुशी नहीं मनानी चाहिये बल्कि इसके पैदा होने को एक साधारण सी ही बात समझनी चाहिये, इस ही प्रकार अब मैं उसकी मृत्यु होजाने पर भी कहता हूं कि अधिक शोक नहीं करना चाहिये, क्योंकि अधिक हर्ष और अधिक शोक कषायकी तेज़ी के ही कारण होता है और कषाय का तेज होना ही पाप हैं, इस वास्ते अधिक हर्ष या अधिक शोक करने में तो सिवाय पाप के और कुछ भी हाथ नहीं आता है, गृहस्थी का तो यह ही धर्म है कि वह खुशी की बात में तो अधिक खुशी न मनावे और रञ्ज की बात में अधिक शोक न करने लग जावे, बल्कि दोनों ही अवस्थाओं में अपनी कषाय को मन्द रखकर खुशी भी थोड़ी ही मनाया करे और रञ्ज भी थोड़ा ही किया करै।

पुत्र के मरने के तीन ही महीने पीछे मथुरादास की स्त्री का भी देहान्त होगया, इस समय उसने एक कन्या को जन्म दिया था किसी कारण से जन्म ते समय वह कन्या माता के पेट में उलटी होगई थी अर्थात् सिर तो उसका ऊपर को होगया था और पैर नीचे को जिसकी वजह से वह पेट में ही अटक गई और उसका जन्म लेना असम्भव होगया, मथुरादास की स्त्री को इस प्रकार दुख भरते हुए और मछली की तरह तड़पते हुऐ तीन दिन होगये, परन्तु बच्चा पैदा न हुआ दाई बहुत होशियार थी उसने बहुत कुछ हिकमत चलाई पर उस समय उसकी होशियारी कुछ भी काम

न आई आख़िर बाहर से सिवलसर्जन बुलवाया गया जिसने वहां आकर यह ही निश्चय किया कि बच्चा पेट में इस तरह अटक गया है कि उसका प्राकृतिक रूप से पैदा होना बिल्कुल ही असम्भव होगया है, जिससे माता और बच्चा दोनों ही मरजावेंगे, परन्तु माता का पेट चीर कर बच्चा निकाल लेने में दोनों ही के बच जाने की सम्भावना है, कमसे कम बच्चा तो अवश्य ही बच जावेगा यह बात सुनकर लोग बाग तो बहुत २ डर दिखाने लगे, लड़े २ कांपने लगे और दया धरम की बड़ी बातें बताने लगे, लेकिन मथुरादास ने कड़ा जी करके यह ही कहा कि जब पेट के न चीरने में दोनों ही के मरजाने का निश्चय है और पेट चीर कर बच्चा निकालने में बच्चा तो अवश्य ही बचता है और उसकी माता के बचजाने की भी सम्भावना है तब दया धरम तो यह ही बताता है कि जरूर पेट चीरना चाहिये, आख़िर डाक्टर के द्वारा पेट चीरकर बच्चा निकाला गया और स्त्री के ज़ख़्मों को भी सिंभाला गया, परन्तु तीन दिन पीछे स्त्री तो मर गई और बच्चा ज़िन्दा रह गया वह कन्या जो इस प्रकार पैदा हुई थी अब तक मौजूद है और मथुरादास के गले का हार बनी हुई है।

मथुरादास की स्त्री के मरने पर लोगों ने तो बहुत ही शोक दिखाया परन्तु मथुरादास ने इस बार भी वह ही शान्ति का पाठ सुनाया, आख़िर को लोगों ने दूसरा विवाह कराने का चर्चा उठाया और बहुत ही कुछ जोर लगाया, लेकिन मथुरादास ने किसी की भी कुछ न मानी और विवाह न कराने की ही ठानी इस मौके पर जमनादास भी आया था, दिल में तो वह यह ही चाहता था, कि मथुरादास का विवाह न हो जिससे उसके मरने पर मेरे ही बेटे पोते उसकी धन दौलत के मालिक हों, लेकिन ज़ाहिर में वह बहुत ही चिल्लाता था और बड़ी २ बातें बनाता था कि अभी तो तेरी ३५ साल की ही उमर है और बेटा कोई एक भी

नहीं है, ब्याह नहीं करैगा तो आगे को वंश किस तरह चलैगा, वंश चलाने के वास्ते तो सत्तर सत्तर बरस के बुड्ढे भी ब्याह कराते हैं और कई कई स्त्रियों के होते भी नवीन स्त्री ब्याह लाते हैं, फिर तू तो अभी बच्चा ही है इस वास्ते तुझे तो ज़रूर ही ब्याह कराना पड़ैगा और मेरा यह कहना अवश्य ही मानना पड़ेगा।

मथुरादास उसकी इन बातों में बिल्कुल भी नहीं आया और जब सब लोगों ने उसको ज्यादा ही दबाया तो उसने साफ़ २ ही कह सुनाया कि विवाह कराना और जोड़ी बनाकर रहना ही-बेशक मैं भी गृहस्थी का मुख्य धर्म मानता हूं जिससे उसके परिणाम भी ठीक रह सकते हैं और सन्तान की उत्पत्ति भी हो सकती है परन्तु सन्तान पैदा करने और वंशवेल चलाने को मैं इतना जरूरी नहीं समझता हूं जितना कि आप बताते हैं, इसको इतना जरूरी मानना तो मेरी समझ में निरी मूर्खता और उन्मत्तता के सिवाय और कुछ भी नहीं है, इतिहास के देखने से साफ़ पता चलता है कि किसी समय में इस हिन्दुस्तान में वैरागी होजाने का बहुत ही ज्यादा प्रचार होगया था और अधिकतर लोग घर छोड़ २ जङ्गल में जा बैठने लगे थे यहां तक कि माता पिता भी अपने बच्चों को वैरागी बनाने के वास्ते साधु सन्तों मन्दिरों और मठों पर चढ़ा दिया करते थे, पुराण ग्रन्थ तो यहां तक कहते हैं कि राजा महाराजा भी अवश्य ही वैरागी होजाते थे और एक एक महाराजा के वैरागी होने पर उसके साथ बीस बीस हज़ार राजा वैरागी होजाते थे, तब उन राजाओं के साथ अन्य साधारण लोगों के वैरागी होने की तो गिनती ही क्या हो सकती है, ऐसी दशा में प्रजा की उत्पत्ती भी बहुत ही ज्यादा घटने लग गई थी और आस पास के देशों से हिन्दुस्तान पर नित्य आक्रमण भी होने लग गये थे, संसार का कायदा है कि जब जैसी ज़रूरत पड़ती है तब वैसे ही नेता भी अवश्य पैदा ही होजाया करते हैं, इस वास्ते उस

समय ऐसे ही नेता पैदा हुए जिन्होंने हिन्दुओं में यह ही सिद्धान्त चलाया कि "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" अर्थात् बिना पुत्र के मनुष्य की गति ही नहीं हो सकती है, और उन्होंने स्त्रियों को तो यहां तक समझाया कि अगर पति सन्तान पैदा करने के अयोग्य हो वा परदेश चला गया हो या वैरागी होगया हो तो स्त्री पुत्र उत्पत्ती के वास्ते किसी दूसरे पुरुषसे वीर्य दान लेलेवे और जिस तरह भी हो-सके पुत्र उत्पन्न कर लेवे, सन्तान उत्पत्ती के वास्ते ऐसी आज्ञायें और कथायें हिन्दुओं के शास्त्रोंमें तो बहुत ही ज्यादा भरी पड़ी हैं, जिनसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि किसी समय में इस भ्रष्टाचार का बहुत ही ज्यादा प्रचार हुआ है और जिस तरह भी बन पड़ा है स्त्रियों ने पुत्र उत्पन्न किया है, हिन्दू ग्रन्थों से तो यहां तक भी पता लगता है कि इस वैराग धर्म को मटियामेट कर देने और सन्तान उत्पत्ति को मुख्य धर्म मनवाने के वास्ते ही वाममार्ग की उत्पत्ती हुई है जिसमें स्त्री वा पुरुष की जननेन्द्रिय की ही पूजा की जाती है और व्यभिचार को ही महान् धर्म बताया जाता है।

बेशक आजकल न तो इतना वैराग्यधर्म ही रहा है कि सब लोग घर छोड़२ कर वैरागी होजावें और न इतना वाममार्ग का ही ज़ोर है कि सब लोग मद्य मांस और मैथुन को ही परमधर्म मानने लग जावें और न इतनी भ्रष्टाचारिता ही रही है कि स्त्रियां पुत्र उत्पत्ती के वास्ते दूसरे पुरुषों से वीर्य्य दान लेती फिरें, परन्तु 'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति' अर्थात् बिना पुत्र के गति ही नहीं है, यह सिद्धान्त अभी तक हिन्दुस्तान के सब ही स्त्री पुरुषों के कान में अवश्य गूंज रहा है और आजकल के पुत्र अपने मरे हुए माता पिताओंका श्राद्ध करके, उनकी नारायणी बलि कराकर और उनके वास्ते गयाजी जाकर इस सिद्धान्त को नित्य ही ताज़ा भी करते रहते हैं, इस कारण पुत्र उत्पत्ती की बड़ी भारी तड़प अबतक भी स्त्री पुरुषों के हृदय में मौजूद है और बिना वंशबेल चलने के मनुष्य अपना जन्म

हो निष्फल मानता है और इसके वास्ते इतना कुकर्म अबतक भी होता है कि पुरुष तो सत्तर २ वर्ष के बुड्ढे होकर भी अपना व्याह कराते हैं और अपनी पोती और प्रपोती के समान दस २ बारह २ वर्ष की कन्या को मोल लाकर उससे पुत्र उत्पन्न होने की विधि जमाते हैं और थोड़े ही दिनों पीछे उस बेचारी को सदा के वास्ते रांड बनाकर परलोक को सिधार जाते हैं, इस ही प्रकार स्त्रियें भी पुत्र उत्पत्ती के वास्ते ऐसे २ टोटके करती हैं जिनको सुन २ कर भी कँपकँपी आती है और पुराने वाममार्ग की कुछ २ झलक दिखाई दे जाती है और कोई २ स्त्री तो यहां तक पाप कर डालती हैं कि किसीके पुत्र को मारकर उसके खून में नहाती हैं और रात्री के समय लोगों के द्वार पर खून का थापा देती फिर जाती है, नङ्गी मादरज़ाद होकर स्मशान में जाती है, देवी देवताओं को बकरा और शराब चढ़ाती है और नहीं मालूम क्या २ महापाप करती और कराती हैं और पुत्र उत्पत्ति की ख्वाहिश को दूना २ भड़काती है।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में पुत्र उत्पत्ति की अधिक चाह इस कारण भी नज़र आती है कि हिन्दू धर्मके अनुसार पुरुष तो अकेला ही सैकड़ों, हजारों, लाखों, करोड़ों स्त्रियें रख सकता है और पुराणों से सिद्ध होता है कि पहिले समय में पुरुष इतनी २ स्त्रियां रखते भी थे इस कारण पुरुष की तो किसी न किसी स्त्रीसे पुत्र होकर पुरुष तो पुत्रवान हो ही जाता था, परन्तु स्त्री बेचारी तो एक ही पुरुषकी स्त्री रह सकती थी और वह एक भी पुरुष पूरा नहीं बल्कि जो हजारों और लाखों स्त्रियों का पति हो अर्थात् स्त्री के हिस्से में तो एक पुरुष का भी हजारवां वा लाखवां हिस्सा ही आता था और फिर वह एक पुरुष भी सब स्त्रियों के साथ एकसा बर्ताव नहीं रखता था बल्कि पुत्रवती स्त्री को ही चाहता था और पुत्रहीन को तो ध्यान में भी नहीं लाता था बल्कि उसको तो अलग पड़ी २ ही सड़ाता था, इसके अलावा हिन्दु धर्मशास्त्रों में पुत्रहीन स्त्री की तो

ऐसी मिट्टी ख़राब करी है कि उसको अपने पिता की भी वारिश नहीं मानी है, इन ही सब कारणों से स्त्रियों में पुत्र उत्पत्ति की चाह इतनी बढ़ गई है कि उसके वास्ते वह अनेक प्रकार के महा-अनर्थ भी कर बैठती हैं और यह लोक और परलोक दोनों ही बिगाड़ती हैं।

जो हो परन्तु अब तो घर छोड़ २ कर वैरागी होजाने का ऐसा भारी प्रचार नहीं रहा है जिसके कारण प्रजा की उत्पत्ति इतनी अधिक घट जावे कि उसके सर्वनाश का ही अँदेशा होजावे और 'अपुत्रस्यगतिर्नास्ति' के सिद्धान्त को चलना पड़ जावे, बल्कि अब तो प्रजा के कम होने का एक दूसरा ही कारण खड़ा होगया है और इस ही वास्ते उस कारण को हटाने के वास्ते नेता भी पैदा होगये हैं और वह यह है कि अब विवाह बहुत ही छोटी उम्र में हो-जाने लग गये हैं और प्लेग आदिक अनेक बीमारियों से छोटी ही उम्र में बहुत लोग मरने भी लग गये हैं, इस ही वास्ते छोटी २ उम्र की बहुत ज्यादा लड़कियां विधवा होजाने लग गई हैं, परन्तु इस ही के साथ आजकल ऊँची जातियों में रांडों का विवाह होना तो पाप समझा जाता है और रँडुवों का विवाह होना जरूरी माना जाता है, इस ही वास्ते सत्तर २ बरस के बुड्ढे भी रँडुवे होने पर ब्याहे जाते हैं और रांड का विवाह न होने के कारण उनको अपने बराबर की स्त्री तो मिल ही नहीं सकती है लाचार वह सत्तर बरस के बुड्ढे भी दस २ बारह २ बरस की छोकरी ही ब्याहकर लाते हैं और थोड़े ही दिनों में उसे रांड बिठा जाते हैं, मानो हिन्दुस्तानकी ऊँची जातियों में यह बुड्ढे लोग भी जाति की छोटी २ लड़कियों को रांड बनाने की एक बड़ी ज़बरदस्त मशीन (कल) हैं जिसके द्वारा उच्च जाति की कन्यायें धड़ाधड़ रांड बनती रहती हैं।

-मनुष्य गणना (मर्दुमशुमारी) से यह भी मालूम हुआ है कि हिन्दुस्तान की उच्च जातियों में जितने लड़के पैदा होते हैं उतनी ही

लड़कियां पैदा होती हैं परन्तु अपनी स्त्रियों के मरजाने से जाति के एक तिहाई पुरुष जो रँडवे होजाते हैं वह रांडों से तो ब्याहे नहीं जा सकते हैं इस कारण कुंवारी कन्याओं को ही ब्याहते हैं, इस प्रकार एक तिहाई लड़कियां रँडवों को ब्याही जाकर कुंवारे लड़कों के वास्ते दो तिहाई लड़कियां ही रह जाती हैं और एक तिहाई लड़के सदा के वास्ते कुंवारे ही रह जाते हैं और यदि कुंवारे लड़के दो तिहाई से कुछ अधिक ब्याहे जाते हैं तो उतने ही रँडवे बिन ब्याहे रह जाते हैं, ग़रज़ जितनी स्त्रियां रांड बैठी हैं उतने ही पुरुषों को भी बिना स्त्री के कुंवारा वा रँडवा ही रहना पड़ता है, इस प्रकार उच्च जातियों की एक तिहाई स्त्रियें तो रांड होकर दोबारा ब्याह न होनेके कारण सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती हैं और एक तिहाई पुरुष ब्याह के वास्ते लड़कियां न मिलने के कारण मरते दम तक कुंवारे वा रँडुवे ही रह जाते हैं और सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकते हैं, फल जिसका यह निकलता है कि उच्च जातियों में अन्य जातियों की अपेक्षा एक तिहाई प्रजा कम पैदा होती है और इस ही वास्ते इन उच्च जातियों की गिनती बराबर घटती ही चली जाती है जिससे इन जातियों के शीघ्र ही नाश होजाने की पूरी २ सम्भावना होगई है, इसके विरुद्ध जिन जातियों में विधवा विवाह होता है उनमें रँडुवे तो रांडों को ब्याह लेते हैं और सब कुंवारी लड़कियां कुंवारों के ही वास्ते बच रहती हैं अर्थात् सब ही कुंवारे लड़कों का ब्याह होजाता है भावार्थ यह कि उन जातियों में न तो कोई रँडुवा ही रहता है और न कोई कुंवारा ही बल्कि सब ही ब्याहे जाकर सब ही सन्तान उत्पन्न करते रहते हैं और उनकी गिनती बढ़ती चली जाती है।

ऐसी अवस्था उपस्थित होजाने पर अब उच्च जातियों में भी ऐसे नेता उठ खड़े हुए हैं जो यह कहते हैं कि उच्च जातियों में भी रँडुवों का ब्याह तो रांडोंसे हुआ करै और सारी कुंवारी लड़कियां

कुंवारों के वास्ते ही बची रहा करैं, जिससे सब ही कुंवारों का ब्याह होजाया करै और कोई भी कुंवारा न रह सका करै, ऐसा होने पर पूरी २ प्रजा पैदा होने लगेगी और उच्च जातियां शीघ्र ही नाश होने से बच जावेंगी।

खैर यह बात तो पञ्च लोग जानैं कि रांडों का ब्याह होना चाहिये या नहीं परन्तु इतना तो मैं भी अवश्य कहता हूं कि रँडुवों का कोई अधिकार नहीं है कि वह कुंवारी कन्याओं से ब्याह करलें जिससे कुंवारों के वास्ते कन्यायें कमती रह जावें और जितनी कन्यायें रँडवों ने लेली हों उतने कुंवारों को सदा के लिये कुंवारा ही रहना पड़ जावे, रँडुवोंकी यह बड़ी ज़बरदस्ती है कि वह कुवारी कन्याओं को ब्याहकर उतने ही कुंवारों को सदा के लिये कुंवारा रखते हैं और ऐसी ज़बरदस्ती करके पाप के भागी होते हैं, अगर रँडुवे लोग रांडों से ब्याह कराना पसन्द नहीं करते हैं या पञ्च लोग उनको ऐसा करने नहीं देते हैं या अगर वह ऐसा करलें तो बिरादरी में नहीं रह सकते हैं ग़रज़ कुछ भी हो अगर रँडुवों को यह मुश्किल पड़ रही है कि वह कुंवारी कन्या को न ब्याहवें तो उनको सदाके लिये रँडुवा ही रहना पड़ता है तो भी उनको यह अधिकार कैसे हो सकता है कि वह कुंवारों के हक़ को छीन लें और कुंवारी कन्याओं से ब्याह कराकर उतने ही कुंवारों को सदा के लिये कुंवारा ही रखें, ऐसी दशा में तो रँडुवों को यह ही चाहिये कि वह ही सदा के वास्ते रँडुवे रहें और कुंवारी कन्याओं को कुंवारों के वास्ते ही छोड़ दें जिससे सब ही कुंवारे ब्याहे जावें और एक-तिहाई कुंवारों का सदा के लिये कुंवारा ही फिरने का कलङ्क उच्च जातियों के माथे से उतर जावे।

इसके सिवाय अपने मामले में तो मैं यह भी विचार करता हूं कि जब मैं इस समय ३५ वर्ष का जवान हूं तो मुझे क्या अधिकार है कि मैं अपने से आधी उमर की बल्कि आधे से भी छोटी उमर

को १२, १३ वर्ष की छोकरी को व्याह लाऊँ, सोचने और समझने की बात है कि जिस पुरुष की जवानी इस समय ढलने को हो उसका ऐसी छोटीसी कन्यासे विवाह करना जिसमें अबतक जवानी आई भी न हो क्या महापाप नहीं है, साफ़ बात है कि अगर मैं अब व्याह करालूं तो जब मेरी स्त्री को जवानी आयगी उस वक़ मेरी जवानी ढल जायगी और अगर सारी जवानी न भी ढल चुकेगी तो वैसी भरपूर जवानी तो हर्गिज़ भी न रहेगी जैसी ज़वानी कि उस समय मेरी स्त्री को आई हुई होगी, इस वास्ते मेरा और उसका मेल तो किसी तरह भी नहीं मिल सकेगा और उसको तो इस कुमेल से महान् दुख ही होगा जिसको वह किसी प्रकार भी सहन न कर सकेगी और अपने मन में हरवक्त तड़पा ही करेगी, यह तो साक्षात् महान् जीव हिंसा है और जीव हिंसा में भी सबसे बढ़िया अर्थात् मनुष्य हिंसा है, ऐसी महान् हिंसा करने का तो मुझको किसी तरह भी साहस नहीं होता है और ऐसा कठोर तो मेरा चित्त किसी तरह भी नहीं बनता है, मेरा मन तो ऐसे व्याह कराने को साक्षात् ही महाराक्षसपने का व्यवहार समझता है और इसको महाअन्याय मानकर इससे मनुष्य के मनुष्यपने को बट्टा लग जाना ही निश्चय करता है।

इसके अलावा यह भी साफ जाहिर है कि अगर हम दोनों स्त्री पुरुष मनुष्य की पूरी उमर पावें तो मैं अवश्य ही उस स्त्री से २०, २५ वर्ष पहिले मर जाऊँगा अर्थात् २०, २५ वर्ष तक रांड रहकर ज़िन्दा रहने के वास्ते उसको अपने पीछे छोड़ जाऊँगा, रँडापे का दुख जैसा महाभयङ्कर होता है उसको सब ही लोग जानते हैं, इस ही कारण जो स्त्री अपने पतिके पीछे जिन्दा रहती है वह महा मनहूस और पापिनी गिनी जाती है, परन्तु यह सब अशुभ बातें तो तब ही होंगी जब कि मैं ३५ वर्षकी उमर में एक १२, १३ वर्ष की बालिका से व्याह करालूं, इस वास्ते इन सब अमङ्गलीक बातों का असली

कलङ्क तो मेरे ही माथे चढ़ेगा और इसका सब पाप तो मुझको ही भुगतना पड़ेगा, इस वास्ते मुझे तो किसी प्रकार भी ऐसे अनुचित ब्याह कराने और महान् घोरपापों में पड़ने का ढेठ नहीं होता है, वल्कि ब्याह न कराने में एक भारी फायदा यह नज़र आता है कि आजकल विरादरी के बहुत लोग तो यह कहते हैं कि स्त्री विधवा होने पर सारी उमर ब्रह्मचर्य्य से रह सकती है और शान्ति के साथ अपनी आयु बिता सकती है, इस ही कारण जाति की लाखों, करोड़ों विधवा ब्रह्मचर्य्य से रहती हैं और भली भांति अपना नियम धर्म पालती हैं, परन्तु इसके विरुद्ध कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि विधवा स्त्रियों का ब्रह्मचर्य्य से रहना और शान्ति से आयु बिताना यदि असम्भव नहीं है तो असम्भव के तुल्य ज़रूर है, इस ही वास्ते हजारों कुकर्म होते हैं और सैकड़ों गर्भ गिरते हैं; परन्तु विरादरी में उन विधवाओं का कोई कुछ भी नहीं कर सकता है और उनको कोई किसी प्रकार का कलङ्क भी नहीं लगा सकता है क्योंकि घर २ विधवायें हैं और घर २ यह ही मटियाले चूल्हे हैं, इस ही कारण बिरादरी के लोग तो खुद ही उनके कुकर्मों को छिपाते हैं और गर्भ गिराने आदि में उनके सहायक बन जाते हैं, ऐसी दशा देखकर जाति की सधवा स्त्रियें भी निर्भय होजाती हैं और अपने शील पर धब्बा लगाकर जाति को नीच अति नीच बनाती जाती हैं।

जाति में इस प्रकार के दो विचार उपस्थित होने पर असली बात का निर्णय तब ही हो सकता है जब कि पुरुष भी स्त्रियों की तरह रँडुवे रहकर इस बात की परीक्षा करें कि गृहस्थियों को गृहस्थ में रहते हुए और गृहस्थ के सब काम करते हुए भी ब्रह्मचर्य्य पालन करना और शीलवान रहना सम्भव है वा नहीं और यदि सम्भव है तो इसमें कितनी कठिनाई पड़ती है, जिससे यह अनुमान होसके कि जाति के कितने रांड और रँडुवे ब्रह्मचर्य्य को

सारी उम्र निभा लेते होंगे और कितने भ्रष्ट होजाते होंगे, बेशक इस बातकी सच्ची और असली परीक्षा तो वह ही पुरुष कर सकता है जो भर जवानी में अर्थात् पन्द्रह बीस बरस की उम्र में ही रँडुवा होगया हो और तब से ही ब्याह का ख्याल छोड़कर उसने अपने शील की रक्षा करनी शुरू करदी हो, ३०, वर्ष की उमर होजाने के कारण भरपूर जवानी तो बहुत दिन हुए ढल चुकी है और जो कुछ थोड़ी बहुत रह गई है वह भी ढलने को होरही है इस वास्ते बेशक मैं वैसी तो जांच नहीं कर सकता हूं जैसी कि कोई भरपूर जवानी वाला करता, तो भी मुझे ख्याल है कि ब्याह न कराने पर मैं भी बहुत कुछ इन बातों को जांच सकूंगा और इस बात को कुछ २ तै कर सकूंगा कि विधवा स्त्रियों की कैसी बीतती होगी और उनके परिणामों की क्या गति रहती होगी।

इन सब बातों के अलावा मुझे इस बात का बड़ा आश्चर्य है कि जब जाति के लोग विधवाओं का दूसरा विवाह होना साक्षात् व्यभिचार और कुशील बताते हैं तब रँडुवे पुरुषों का दूसरा विवाह होना व्यभिचार और कुशील क्यों नहीं मानते हैं, यदि वास्तव में स्त्रियों का व्याह कराना व्यभिचार और कुशील है तो मेरी समझ में तो इस कलिकाल में पुरुषों ने अपने स्वार्थ में अन्धे होकर ही अपने वास्ते कुशील को उचित मान लिया है और आंख मीच कर और धर्म अधर्म का कुछ भी ख्याल न करके बिल्कुल ज़बरदस्ती ही अपना दूसरा तीसरा ब्याह करने लग गये हैं, नहीं तो जब दूसरा विवाह करने से विधवा स्त्री को कुशील का दोष लगता है तो रँडुवे पुरुष को दूसरा विवाह कराने से यह दोष क्यों न लगता होगा ऐसी दशा में मैं तो ऐसा दोष करने और कुशील और व्यभिचार का भागी बनने के वास्ते हर्गिज़ भी तय्यार नहीं हूं बल्कि अपनी कुशल इस ही में देखता हूं कि दुबारा ब्याह कराने का नाम भी न लूं और शील पालकर ही रहूं।

इसके अलावा जब कि हमारी लाखों करोड़ों विधवा बहिनें और बेटियां यहां तक कि नन्ही नन्ही बच्चियां और जवान जवान लड़कियां भी विधवा होजाने पर दूसरे ब्याह का नाम तक लेना भी पाप समझती हैं और सारी उमर का रँडापा ही काटती हैं तब हम पुरुषों को भी कुछ तो शरम आनी चाहिये और विशेष कर मुझ जैसे ३५ वर्ष के जवान को तो मौड़ बांधकर एक छोटीसी छोकरी ब्याह लाने के वास्ते नहीं चढ़ चलना चाहिये, यदि हमको अपनी जाति की नन्ही नन्ही विधवाओं की इतनी भी क़दर नहीं है उनसे इतनी भी सहानुभूति नहीं है और इतना भी उनका दर्द नहीं है कि उनके रांड़ बैठे रहते हुए हम कमसे कम रँडुवे होने पर तो ब्याह न करावें तो समझ लेना चाहिये कि हम मनुष्य नहीं हैं बल्कि पशु पक्षी वा राक्षस हैं और वृथा ही अपनी बेटी वा बहिन के रांड होजाने पर आंसू बहाते हैं और हाय हाय करके चिल्लाते हैं।

इस प्रकार लोगों को समझाकर मथुरादास ने अपना विवाह न कराया और अपनी बेटी की पालना के वास्ते बहुत ही उत्तम प्रबन्ध कर दिया।

अध्याय २८

मथुरादास सुख चैन से रहता था और भली भांति अपनी लड़की की पालना करता था, उसकी इमानदारी के कारण उस के कारखाने में भी दिन दूनी और रात चौगिनी तरक्की होरही थी और इस ही कारण वह परोपकार में और भी अधिक धन खर्च करने लगा था और मनुष्य की उन्नति के वास्ते भांति २ की संस्था खुलवाता था, इस प्रकार कई वर्ष बीत गये, परन्तु कुछ ही दिनों पीछे फिर कुछ ऐसा चक्कर आया कि "भारत" नामी बैंक जो हिन्दुस्तान में सब से बड़ा बैंक था और जिससे हिन्दुस्तान के सब ही बैंकों और साहूकारों का लेन देन था फेल होगया उस बड़े

भारी बैंक के डूब जाने से छोटे मोटे और भी अनेक बैंक डूब गये और सैकड़ों साहूकारोंके दीवाले निकल गये, और होते२ मथुरादास के कारखानों को भी ऐसा धक्का लगा कि उसके भी अञ्जर पञ्जर हिल गये और उसका थामना भारी पड़ गया, भावार्थ यह कि मथुरादास के भी पन्द्रह लाख रुपये मारे गये, मथुरादास का कारखाना तो इन पन्द्रह लाख रुपये की कमी को ख़ुशी से झेल जाता और अच्छी तरह से चलता रहता अगर इसके साथ व्यवहार रखने वाले लोगों को भी धीरज होता, और वह कुछ भी बेसबरी हृदय में न लाते, लेकिन उन दिनों तो सारे ही बैंकों और सारे ही साहूकारों की तरफ़ से लोगों को भारी बेइत्मीनानी होगई थी और हरवक्त इस बात की ही घबराहट रहती थी कि न मालूम किस वक्त कौन सा बैंक फेल होजाय और कब कहां से हमारे रुपये का इनकार होजाय, जिन लोगों का रुपया मथुरादास के कारखाने में जमा था उनको अगरचि मथुरादास की ईमानदारी पर पूरा पूरा भरोसा था लेकिन वह भी यह ही सोचते थे कि दीवाला निकलने की इस सर्वव्यापी लहर से मथुरादास का कारखाना भी कैसे बच सकता है और उसकी ईमानदारी इसमें क्या काम दे सकती है ऐसा २ विचार करके वह लोग भी आपाधापी में पड़ गये और उन्होंने भी मथुरादास के यहां से एकदम अपना रुपया वापिस लेना शुरू कर दिया और मथुरादास ने भी जहांतक होसका दिया, मगर ऐसी हालत में आप जानते हैं कि देनदारी तो सब की सब सामने आखड़ी होती है और लेनदारी एकदम वसूल हो ही नहीं सका करती है, इस ही कारण मथुरादास भी देता देता थक गया और तुरन्त ही इतना रुपया इकट्ठा न कर सका जितना देना था, लाचार उसको भी यह ही कहना पड़ा कि एकदम सबको नहीं भुगता सकता हूं बल्कि इधर उधर से अपना रुपया इकट्ठा करके ही दे सकता हूं, उसका यह कहना था कि तुरन्त ही उसकी

यह बात चारों खूंट फैल गई और हरएक आदमी और भी ज्यादा कोशिश इस बात की करने लग गया कि मेरा रुपया सब से पहिले वसूल होजावें क्योंकि ऐसा न हो कि फिर ज्यादा ही घाटा आजावे और रुपये में चार आने भी वसूल न होने पावें।

इस समय मथुरादास के बहुत से मित्रों ने उसको यह भी सलाह देनी शुरू की कि जो कुछ रुपया पैसा और माल असबाब अलग किया जासके वह अलग कर देना चाहिये और गुप्त रीति से अपने इष्ट मित्रों के पास सुरक्षित रख देना चाहिये क्योंकि अगर दीवाला निकल गया तो फिर तो एक तिनका भी हाथ नहीं आवेगा और सब नीलाम होकर लेनदारों के ही पास चला जावेगा, इसके अलावा उन्होंने और भी अनेक ऐसी तदबीरें बताईं जिनसे बहुत कुछ रुपया बच जावे और दीवाला निकलने के पीछे काम आवे, परन्तु, मथुरादास तो सच्चा धर्मात्मा था, वह उन लोगों के बहकाये में कैसे आ सकता था, इस वास्ते उसने ऐसी सलाहों के मानने से इनकार कर दिया और साफ़ २ कह दिया कि जबतक लेनदारों की एक एक कौड़ी नहीं दीजाती है तबतक इस कुल माल असबाब में मेरा कुछ भी हक नहीं है, मैं तो यह बेईमानी किसी तरह भी नहीं कर सकता हूं कि अपने वास्ते तो बचालूं और जिनका चाहता है उनको अंगूठा दिखा दूं, हां अगर आप लोग मेरे साथ कुछ सलूक कर सकते हैं तो यह कीजिये कि जिन लोगों के पास मेरा रुपया चाहता है उनको तो कर्ज आदिक देकर इस बात का सहारा लगाइये कि वह जिस तरह होसके मेरा रुपया तुरन्त दे देवें, और जो लोग मुझसे लेनदार हैं उन सबको समझाइये कि वह धीरज धरें और एकदम सबके सब न टूट पड़ें बल्कि जो रुपया मेरे पास इकट्ठा होता रहे उसमें से हिस्सेरसदी लेते रहें, इस प्रकार उनका भी सब रुपया पट जावेगा और मेरे पास भी सब कुछ बच जावेगा,

यह बात मैं भली भांति सब को निश्चय करा सकता हूं और अपनी सब बहियां दिखा सकता हूं कि दूकान में कमी किसी बात की नहीं है, जितनी देनदारी है उससे ड्योढ़ी लेनदारी है पर है, मुश्किल तो यह ही आपड़ी है कि लेनेवाले तो सब सिर पर आखड़े हुए हैं और देने वाले टलाने लग गये हैं और शकल भी दिखाना नहीं चाहते हैं,

मथुरादास ने यह सलाह ऐसी बताई थी जिसमें सब ही का फ़ायदा था और किसी का कुछ भी नुक़सान नहीं होता था मगर दुनियां तो स्वार्थ के वश में अन्धी होरही है इस ही कारण इसके इष्ट मित्र तो उसकी इस सलाह के विरुद्ध यह ही कोशिश करने आये थे कि हमारे मिलने चिलने वालों और रिस्तेदारोंमें से जिस २ को मथुरादास से कुछ लेना है उनको तो सब से पहिले दिलवा दें और जिन हमारे इष्ट मित्रों से मथुरादास को कुछ लेना है उनको मथुरादास से तो बहुत दिनों पहिले की रसीद दिलवाकर उस ही के अनुसार मथुरादास की बही बदलवा दें और उनसे मथुरादास के किसी इष्ट मित्र के नाम के हुण्डी पर्चे लिखवालें, जिससे यह लोग फुरसत में अपने ज़िम्मे का रुपया अदा करते रहें और वह रुपया दिवाला निकलने के पीछे मथुरादास के काम आता रहे, परन्तु मथुरादास तो उनकी इन बातों को हर्गिज़ भी नहीं मान सकता था और किसी तरह भी अपना ईमान नहीं खो सकता था, इस समय मथुरादास के सब मित्र बातें तो बहुत कुछ बनाते थे और अपना जान माल भी उसके ऊपर को निछावर कर देने का यक़ीन दिलाते थे, बड़ी २ क़स्में खाते थे और हृदय की भारी तड़प दिखाते थे पर "वारूं सौगज़ और फाड़ कर न दूं एक कत्तर भी" और "किसी का घर जले और कोई तापै" इत्यादिक कहावतों के अनुसार वह तो बात बनाने और मथुरादास की बिगड़ी में भी अपना और अपने मित्रों का काम बनाने के सिवाय और कुछ भी करना न चाहते थे।

जब मथुरादास की बताई हुई कोई भी बात न चली और वह लोग सुघड़ भलाई की बातें बनाते ही रहे तो लाचार होकर मथुरादास ने यह भी कहा कि अगर आपको अपनी पूरी २ सहायता देकर मुझे बचाना ही मञ्जूर है तो आप लोग मेरी सब जायदाद, मेरे सब माल अस्वाब और मेरे सब कर्जेको जो मुझे लोगों से लेना है मोल ले लेवें और चार भले आदमी जो असली दाम किसी चीज का आंकें उससे चार आना रुपया कम के हिसाब से दे देवें, यह चार आने की कमी इस ही वास्ते है कि इस समय यह सब चीजें आप बेज़रूरत ही मोल लेंगे और फिर आहिस्ता २ ही इनके दाम उठा सकेंगे, इस कारण इससे आपको भी कुछ नुक़सान न रहेगा और मैं भी सब लेनदारों का रुपया देकर बर्बाद होनेसे बच जाऊंगा आप बहुत लोग मेरे इष्ट मित्र हैं और सब रुपये पैसे वाले हैं अगर आप लोग थोड़ा २ भी सहारा लगावें अर्थात् अपने २ वित्त के अनुसार कोई मेरी किसी चीज़ को और कोई किसी को मोल ले लेवें तो आप लोगों को तो कुछ भी मालूम न हो और मेरा काम चल जाय, लेकिन इसपर सब लोगोंने यह ही बात बनाई कि हमसे ऐसी निर्लज्जता कब हो सकती है कि हम इस बिगड़ी में अपने मित्र का माल मोल लें और सदा के लिये अपने मुंह को कलङ्क लगावें, हमसे तो जो हो सकेगा वैसे ही सहायता करेंगे और अपनी जान माल लड़ाकर अपने मित्र को बिगड़ने से बचा लेंगे।

आखिर जब दूकान के सिंभलने की कोई भी तदबीर न बन पड़ी और सब लोग नित्य नई चालाकियां खेलने लगे तो लाचार होकर मथुरादास ने अदालत में दीवालिया होने की अर्ज़ी दे दी और अपना सब माल अस्वाब अदालत के हवाले करके बिल्कुल ही नङ्गा बूचा रह गया, लेकिन तब भी उसने अपने धीरज को नहीं छोड़ा और न शोक को अपने पास फटकने दिया और न अपनी शान्ति को ही भङ्ग होने दिया, बल्कि यह ही विचार करता रहा

कि संसार की तो ऐसी ही विचित्रगति है, इसमें तो समुद्र की सी लहरें सदा उठती ही रहती हैं और ज्वारभाटा आकर मनुष्य कभी ऊपर और कभी नीचे होता ही रहता है, इस संसार में तो कभी धूप कभी छांव और कभी दिन और कभी रात होती ही रहा करती है, इस वास्ते संसार के इन परिवर्त्तनों में हर्ष शोक करना और ज़रासी बातमें नाचने कूदने लग जाना और उस बातके बदल जाने पर रोने धोने बैठ जाना महामूर्खता और पागलपनके सिवाय और कुछ भी नहीं है, मनुष्य को तो यह ही उचित है कि जैसी अवस्था हो स्वयम् भी वैसा ही बन जावे और उस ही को हँसी खुशी से बितावे।

ऐसा २ विचार करके उसने चाहा कि अब मैं फिर पहिले की तरह खोंचा बनाने लगूं और दिन भर शहर में घूमकर फिर धेली पावला कमाने लगूं और रूखी सूखी खाकर अपना पेट पालने लगूं, लेकिन अब तो एक छोटीसी लड़की भी उसके साथमें थी जिसका पालन उसके ऊपर लाज़मी था, दीवाला निकलने से पहिले तो जमनादास के बेटों की बहुवें बार २ इस लड़की को देखने आती थीं और अपने यहां भी बुलाती थीं और सदा यह ही तक़ाज़ा रखा करती थीं कि इस लड़की को हमारे ही पास छोड़ देना चाहिये और इसकी देखभाल की सब जिम्मेदारी हमको ही दे देनी चाहिये लेकिन अब बिगड़ी में कौन किसी का साथी होता है और कौन किसीके काम आता है, यों लोकदिखावे के वास्ते जमनादास के बेटे अब भी इस लड़की को अपने यहां लेगये और मथुरादास को भी अपने यहां ही रोटी खिलाने लगे, लेकिन जब उनकी स्त्रियों को मालूम हुआ कि मथुरादास का तो सचमुच ही दिवाला निकल गया है और उसके पास एक तिनका भी बाकी नहीं रहा है तब तो उन्होंने इनको बहुत ही तङ्ग करना शुरू कर दिया जिससे लाचार होकर इनको दो चार दिन पीछे ही वहां से अलहदा होना पड़ा,

मथुरादास तो पहिले ही अच्छी तरह जानता था कि कौन किसीको निभाता है और कौन किसके दुख दर्द में काम आता है लेकिन अपने भतीजों के ज़िद करने पर उसने एकदम इनकार करना और उसको टकासा जवाब देना मुनासिब नहीं समझा था, नहीं तो वह क्या किसीके टुकड़ों पर पड़ता फिरता था बल्कि वह तो महा-पुरुषार्थी और सन्तोषी आदमी था और सब प्रकारके कष्ट सहनेको तैयार रहता था, इस वास्ते वह बहुत खुशी के साथ वहां से चला आया, लेकिन इस वास्ते जमनादास के बेटे की बहुओं को बिरा-दरी की स्त्रियों के सामने यह कहने का मौका मिल गया कि हमने तो यह ही चाहा था कि अपनी इस बिगड़ी के समय में वह भी यहीं रोटी में रोटी खाते रहें और कुछ भी काम न करें, पर क्या करें वह तो हमको गैर ही समझते हैं और किसी तरह भी हमारे यहां रहना पसन्द नहीं करते हैं इस ही वास्ते सौ खुशामद करने पर भी अपनी लड़की को साथ लेकर चले गये हैं और हमको मुंह दिखाने योग्य भी नहीं छोड़ गये हैं।

मथुरादास ने अब यह ही विचारा कि अगर मैं ख्वांचा करूं तो यह लड़की दिन भर अकेली किसके पास रहेगी इस वास्ते उसने अपने मित्रोंसे दो २ चार २ रुपये का सौदा उधार लेकर आटे दाल की दूकान करली और वहीं अपनी लड़की को रखली, वह दिन भर दाल दलता था और चार आने रोज़ कमाकर अपना और अपनी लड़की का पेट भरता था और बिना किसी प्रकार की सोच के आनन्द से दिन व्यतीत करता था और अपने परिणामों को बिल्कुल भी कलुषित नहीं होने देता था।

अध्याय २९

इस प्रकार मथुरादासके दीवाला निकलने और बिल्कुल कङ्गाल होजाने का कारण बताकर अब हम पाठकों को जमनादासके मुक़ा-

इमे का हाल सुनाते हैं कि रुपये की कमी के सबब वह अपने इस मुक़दमे की पैरवी वैसी तो नहीं कर सका जैसी कि वह चाहता था, तो भी उसने अनेक जोड़ तोड़ मिलाकर और कहीं न कहीं से लाकर साढ़े तीन हज़ार रुपया इस मुक़दमे में खर्च कर ही दिया, और वहस के दिन हाईकोर्ट से एक बढ़िया अँग्रेज वैरिस्टर लाकर खड़ा कर ही दिया, जिसने पूरे पांच घण्टे वहस की और सर्कारी गवाहों के बयान की धज्जियां तक उड़ादीं और वैरिस्टर की इस वहस से सब लोगों को मुक़दमे के खारिज होजाने का पूरा २ भरोसा भी होगया लेकिन अफ़सोस कि अगले दिन अदालत ने जमनादास के ख़िलाफ़ फ़ैसला सुनाया और एक साल तक नेक-चलन रहने के लिये दस हजार रुपये की जमानत देने और अगर जमानत न देसकें तो एक साल तक जेलखाने में क़ैद रहने का हुक्म चढ़ाया, उस समय जमनादास के मालदार रिश्तेदारों ने लोकलाज के कारण उसका ज़ामिन होना भी मञ्जूर किया और उन्होंने दस हज़ार रुपये की जमानत लिखकर पेश भी की, लेकिन साहब कलक्टर ने उनकी ज़मानत यह कहकर नामञ्जूर करदी कि कि हम दूसरे जिले के रहने वाले किसी भी आदमी की ज़मानत नहीं ले सकते हैं क्योंकि वह तो जमनादास के चालचलन की कुछ भी देखभाल नहीं कर सकता है और किसी तरह भी उसको ठीक नहीं रख सकता है, तब लाचार होकर जमनादास ने अपने ज़िलेके रहने वाले ही एक दो धनवानों को ज़ामिन बन जाने के वास्ते दबाया और उन्होंने शर्मा शर्मी उसका ज़ामिन होना क़बूल भी कर लिया लेकिन कलक्टर ने उनमें से भी किसी को तो यह कहकर ही टाल दिया कि हम तो नक़द रुपये की जमानत लेंगे और किसी की जमानत को यह कहकर नामंजूर कर दिया कि हमको तो खुद तुम्हारे ही चालचलन में सन्देह है इस वास्ते तुम दूसरे के चालच-लन के कैसे ज़िम्मेदार बन सकते हो, इस प्रकार सब ही ज़ामिन

नामंजूर रहने पर जमनादास को पूरा २ यक़ीन होगया कि जेल-खाने जरूर जाना पड़ेगा इस वास्ते वह खड़ा २ कांपने और रोने लगा कि इतने में साहब कलक्टर की निगाह मथुरादास के ऊपर जापड़ी।

यह साहब वर्षों उस जिलेमें रह चुके थे जहां मथुरादास रहता था इस वास्ते वह इसको बहुत अच्छी तरह जानते थे और सब तरह मानते थे, अब साहब कलकृर ने उसको यहां अपने इजलास में खड़ा देखकर उसके यहां आने का कारण पूंछा तो उसने कह दिया कि जमनादास मेरा बड़ा भाई है जिसके मुक़द्मे के कारण तीन दिन से मैं भी यहां आया हुआ हूं, यह सुनकर साहब कलकृर ने बड़ा अफ़सोस किया कि तुम्हारे जैसे पक्के ईमानदार और परो-पकारी परम सज्जन पुरुष का भाई ऐसा बेईमान हो जिसके नामसे से भी हमको घिण आती है, इस प्रकार बहुत देर तक अफ़सोस ज़ाहिर करके और उसके बुरे चालचलन का बहुत कुछ कथन करके और राजरानी के सब मामलों को सुना करके आख़िर में साहब कलकृर ने यह भी कहा कि अगर तुम अपने इस भाई को एक साल भर तक अपने पास रखने और नेकचलन बनाने की जिम्मेदारी लो तो हम तुम्हारी जमानत क़बूल कर सकते हैं और इसको जेलखाने जाने से बचा सकते हैं, लेकिन मथुरादास ने कहा कि मेरा तो दीवाला निकल चुका है इस कारण मैं तो अब आटे दालकी दूकान करता हूं और दो चार आने के पैसे कमाकर ही अपना पेट भरता हूं इस वास्ते मैं तो दस हजार रुपये की जमानत किसी तरह भी नहीं दे सकता हूं।

यह बात सुनकर साहब कलकृर ने और भी ज्यादा रञ्ज किया और घण्टों उसके साथ बात करके उसके दीवाला निकलने के सब कारणों को मालूम किया और अन्त में यह ही कहा कि चाहे इस समय तुम्हारे पास एक पैसा भी नहीं रहा है तो भी तुम्हारी ईमा

नदारी का ऐसा जबरदस्त सिक्का हमारे हृदय पर जमा हुआ है कि हम अब भी तुम्हारी जमानत मंजूर कर सकते हैं और तुमसे एक पैसा भी नक़द जमा कराने की जरूरत नहीं समझते हैं बल्कि तुम्हारे लिखे हुए जमानतनामे को ही काफ़ी समझते हैं, इसपर मथुरादास ने जमनादास से पूछा कि साहब कलक्टर की यह बड़ी मिहरबानी है कि मुझ जैसे कङ्गाल की भी वह दस हजार रुपये की जमानत क़बूल करने को तैयार हैं लेकिन वह यह ही चाहते हैं कि तुम एक साल भर तक मेरे ही पास रहो और मेरे ही कहनेके मुताबिक चलो, इस वास्ते अगर तुम्हें यह बात मंजूर हो तो मैं जमानत करदूं और साहब कलक्टर का बहुत बड़ा इहसान अपने सिर पर धरलूं, जमनादास को अपने भाई की यह बात उस समय तीर की तरह लगी और उसने क्रोध भरी निगाह से मथुरादास की तरफ़ देखा और कहा कि इस मुसीबतके वक्तमें भी तू मुझसे क़ौल क़रार कराता है और बिल्कुल भी नहीं शरमाता है, जा मैं तुझ जैसे अभिमानी की जमानत नहीं कराऊँगा और एक साल जेलखाने में ही काट आऊँगा, इसपर लोगों ने भी मथुरादास को समझाया कि भाई इस वक्त तुम्हारा पूछना ठीक नहीं है अब तो तुम चुपचुपाते जमानत करदो और कुछ भी मत बोलो, लेकिन इसपर भी मथुरादास ने यह ही कहा कि लोग बुरा मानें या भला पर मैं तो जो इक़रार साहब कलक्टर से कर लूंगा उसका उस ही तरह भुगतान करूँगा, इस वास्ते अगर भाई साहब को साल भर तक मेरे पास रहना मंजूर हो तो मैं जमानतनामा लिखूं नहीं तो उनकी मर्जी वह जो चाहें सो करें, इस प्रकार जब लोगों ने मथुरादास को अपनी बात पर दृढ़ देखा तो उन्होंने जमनादास को ही इस बात पर मजबूर किया कि वह ही मथुरादास की ज़िद पूरी करदे और अपनी ज़बान से कहदे कि मैं तेरे ही पास रहूंगा और तेरी ही आज्ञा के अनुसार चलूंगा, चुनाचि जमनादास ने यह बात कहदी और मथुरादास ने उसकी जमानत कर दी।

अध्याय ३०

मुक़दमे से निमट कर इन सब लोगों के घर वापिस आने पर जब जमनादास की औरत ने यह बात सुनी कि मथुरादास अपने भाई-को यह शर्त करके लाया है कि उसको साल भर तक उसके पास ही रहना पड़ेगा और उसके ही कहने के मुताबिक चलना होगा तो वह बहुत ही ज्यादा तड़खी भड़की और उसने मथुरादास को जो मुंह आया सुनाया, मथुरादास उसके सामने कुछ नहीं बोला बल्कि चुपके ही चुपके सब कुछ सुनता रहा, दो चार दिन बीत जाने पर जब मथुरादास ने अपने यहां जाने का इरादा किया और जमनादास को भी साथ ले चलना चाहा तो जमनादास को यह बात बहुत ही ज्यादा बुरी लगी और अव्वल तो उसने टाल-मटूल के तौर पर कहा कि तुम जावो मैं दो चार दिन मैं मुक़द्मे की अपील करके और घर का प्रबन्ध बांध करके आ जाऊंगा, लेकिन जब इस पर भी मथुरादास ने यह ही कहा कि अच्छा मैं भी दो चार दिन और ज्यादा ठहर जाऊंगा और तुमको साथ लेकर ही जाऊंगा तब तो जमनादास को बहुत ही ज्यादा गुस्सा आया और उसने मथुरादास को बहुत ही ज्यादा धमकाया कि जमानत करके क्या तूने मुझको मोल लिया है जो मैं तेरा बंधुवा और कैदी बनकर हरवक्त तेरे साथ ही रहूंगा और एक पल भरके वास्ते भी भी जुदा न हो सकूंगा, जाओ अपना काम करो और ज्यादा मेरे मुंह मत लगो, इस पर मथुरादास ने शान्ति के साथ जवाब दिया कि अगर आप मेरे साथ चलने में अपना बहुत बड़ा नुकसान समझते हैं तो अबतक भी कुछ नहीं बिगड़ा है क्योंकि मैं अब भी कचहरी में जाकर अपनी ज़मानत मनसूख करा सकता हूं, फिर आप अपनी मरजी के मुताबिक जैसी चाहे जमानत दीजो और जो चाहे कीजो, जमनादास को मथुरादास की यह बात और भी

ज्यादा बुरी लगी बल्कि और भी जिसने सुनी उसने भी मथुरादास को ही बुरा भला कहा और ऐसा कड़ा बनने से मना किया, पर मथुरादास ने किसी की भी बात का कुछ खयाल न किया और अपनी बात पर डटा ही रहा, आखिर अपने मुक़द्दमे की अपील दायर करके जमनादास को उसके साथ ही जाना पड़ा और साल भर तक वहीं उसके पास ही रहना हुआ, जमनादास की स्त्री किसी तरह भी उसके साथ जाने पर राज़ी न हुई और मथुरादास को गालियां देती हुई अपने भाइयों के पास ही चली गई,

मथुरादास के पास जाकर जमनादास रोटी तो अपने बेटों के यहां खाता था, परन्तु वह अपना अधिक समय तो मन्दिरजी में पूजा पाठ करने और जाप जपने में ही लगाता था और बाक़ी समय वह अपने बेटों की दूकान पर बैठकर या मथुरादास के पास रह कर ही बिताता था, मथुरादास ने उसको कईवार समझाया भी कि खाली रहने से परिणाम बिगड़ते हैं इस वास्ते अगर तुम भी कोई छोटी मोटी दूकान करने लगो तो जी भी लगा रहै और दो पैसे की आमदनी भी होने लगे, लेकिन जमनादास ने उसकी यह बात बिलकुल भी पसन्द न की बल्कि उसको ही ताने देने लगा कि एकबार लखपती साहूकार होकर फिर उस ही शहर में आटे दाल की दूकान खोलकर बैठ जाना और ज़रा भी न शरमाना तुझे ही शोभा देता है, पर मैं तो अब मरा मरा भी सौ मन का हूं और दोनों हाथों से अपनी आबरू थामे बैठा हूं, इस वास्ते मेरे से कब हो सकता है कि मैं कोई छोटी सी हटड़ी खोल कर बैठ जाऊं और अपनी बँधी बँधाई आबरू गँवाऊँ, हां तुझे वचन देकर एक साल के लिये तेरी क़ैद में ज़रूर पड़ गया हूं जिसका तुझे घमण्ड है सो यह दिन तो बेशक तेरे आधीन रहकर और तेरी कच्ची पक्की सह कर ही बितानें पड़ेंगे, साल भर बिताने के पीछे तुझे दिखा दूंगा कि किस तरह बिगड़ी को बनाया करते हैं और किस तरह अपना घर चलाया करते हैं।

तीसरे पहर को ख़ाली वक्त देखकर मथुरादास की दूकान पर जमनादास के पास दोचार भगत जन भी आजाया करते थे जो जमनादास की तरह न्हाने धोने और खाने पीने में वहुत ही ज्यादा शोध किया करते थे, वह लोग जमनादास के धर्मसाधन की प्रशंसा करके वारवार यह ही बात उठाते थे कि तुमतो इतना भारी धर्म करते हो पर अपने छोटे भाई को अर्थात् मथुरादास को कुछ भी नहीं समझाते हो, इस पर जमनादास उनको यह ही जवाव देता था कि मैं तो इसको वहुतेरा कुछ समझाता हूं वल्कि दवा धमका कर भी कहता हूं पर क्या करूँ इसको तो कुछ भी असर नहीं होता है जिससे यह ही सिद्ध होता है कि इसके तीव्र मिथ्यात्व का उदय आरहा है जिससे यह बिल्कुल भी नहीं सुलझता है, फिर जब वह लोग चले जाते और दोनों भाई एकान्त में होते तो जमनादास अपने छोटे भाई मथुरादास से कहता कि भाई यह मानुष जून वार-वार नहीं मिलती है और यह जून तो ऐसी उत्तम है कि इसके पाने के वास्ते तोस्वर्गों के देव भी तरसते हैं, नहीं मालूम किस पूरवले पुराय के उदय से यह जून हम तुमको मिल गई है इस वास्ते इस जूनको यूंहो नहीं गँवाना चाहिये वल्कि कुछ धर्मसाधन भी ज़रूर ही करना चाहिये, क्योंकि एक यह धर्म ही जोव के साथ जाता है और यह ही आगे को काम आता है, वाकी तो सब यहीं पड़ा रह जाता है।

इस पर मथुरादास वड़ी नम्रता के साथ कहता कि भाई साहव यह उपदेश तो आपका अनमोल है और मेरा भी ऐसा ही श्रद्धान है पर क्या करूं मेरा हृदय तो वारवार समझाने पर भी घर छोड़ने को और दिगम्बर मुनि होकर पूरी तरह से धर्म पालन करने को तय्यार नहीं होता है और इस गृहस्थ के गड्ढे से बाहर नहीं निकलता है, जमनादास ने कहा कि भाई घर छोड़ने को तो हम भी नहीं कहते हैं पर गृहस्थी रहकर भी तो तुम सब कुछ धर्म

पाल सकते हो और सब कुछ पुण्य कमा सकते हो; मथुरादास ने कहा कि हां भाई साहब यह तो ठीक है पर मैं तो अपनी कषाय को मन्द रखना और न्याय नीति पर चलना इस ही को गृहस्थधर्म समझता हूं और इस ही कारण ऐसी ही कोशिश भी करता रहता हूं कि मेरी कषाय सदा मन्द ही बनी रहे और किसी समय भी इसमें तेजी न आने पावे जिससे रात दिनके २४ घण्टोंमें हरवक्त ही धर्मसाधन होता रहे, और पुण्यकर्म ही बंधता रहे, अब आपके उपदेश से और भी ज्यादा सावधानी रखूंगा और अपनी कषाय को और भी ज्यादा मन्द रखने और न्याय नीति पर चलने की कोशिश करूंगा, जमनादास ने कहा कि तुमने तो बचपन से ही हुज्जत करना सीख लिया है और एक न्याय नीति पर चलने का ही पाठ रट लिया है, तब ही तो लाखों करोड़ों का कारखाना खो बैठे हो और दाना दल २ कर पेट भरते हो, भाई गृहस्थी तो किसी तरह भी न्याय नीति पर नहीं चल सकता है और न अपनी कषायों को ही मन्द कर सकता है, गृहस्थ में रहकर तो उसको सब ही काम करने और सब ही रङ्ग बदलने पड़ते हैं, इस ही वास्ते श्रीगुरु ने गृहस्थी के के वास्ते तो धर्मसाधन के ऐसे तरीके निकाल दिये हैं जिनको करके वह सब कुछ पुण्य प्राप्त कर सकता है और इस युग में बड़ा भारी यश और अगले युगमें सब कुछ सुख पा सकता है, पर तुझको तो किसी ने कुछ ऐसा बहका दिया है और तेरी बुद्धि को तो कुछ ऐसा भरमा दिया है कि तू तो इधर उधर की फ़िज़ूल बातें ही बनाता रहता है और धर्म की तरफ़ बिल्कुल भी नहीं लगाता है।

मथुरादास ने कहा कि धर्म की बात तो मैं हरवक्त सुनने को तैयार हूं और खूब ध्यान देकर ही सुनना चाहता हूं, पर मानता वह ही हूं जो मेरी समझ में आजाती है, बे सोचे समझे आंख मींचकर मान लेने को बेशक मैं तैयार नहीं हूं, जमनादास ने कहा कि अच्छा और सब बातें जाने दो पर तुम एक इस ही बात का जवाब दो कि

अगर तुम नित्य सुबह को सूत्रजी का पाठ कर लिया करो तो इसमें तुम्हारा क्या हरज है, मैं कुछ भी लिखा पढ़ा हुआ नहीं हूं तो भी नित्य ही पाठ कर लेता हूं, इसके कण्ठ करनेमें जैसी दिक्कत मुझको उठानी पड़ी है उसको मैं ही जानता हूं, पर तुम तो लिखे पढ़े आदमी हो इस वास्ते तुमको तो इसमें कुछ भी दिक्कत नहीं हो सकती है क्योंकि तुम तो विना कण्ठ किये पुस्तक सामने रखकर ही पाठ कर सकते हो और फिर भी नहीं करते हो, मथुरादास ने कहा कि भाई साहब मैंने तो दसाध्याय सूत्र की अनेक बड़ी २ टीकाओं की स्वाध्याय की है और उसके रहस्य को अच्छी तरह समझने की कोशिश की है और इन ही ग्रन्थों की स्वाध्याय का यह प्रताप है कि मैं जैनधर्म के असली स्वरूप को कुछ २ जान गया हूं और धर्म की बारीकियों को पहिचान गया हूं, परन्तु मैं विना अर्थ समझे किसी भी ग्रन्थ या किसी भी सूत्र या श्लोक के रट लेनेसे कुछ भी फ़ायदा नहीं समझता हूं इस वास्ते संस्कृत सूत्रों के पाठ करनेके वास्ते तो मैं किसी तरह भी तैयार नहीं हूं, हां उसकी टीकाओंकी मैं अब भी बराबर स्वाध्याय करता रहता हूं और अगर आप सुनने के लिये तैयार हों तो आपको भी सुनाने लग जाऊँ।

जमनादास ने कहा कि इसके अर्थ तो कई बार हमारे यहां भी पढ़े गये थे, पर यह तो ऐसे ऊँचे दर्जे का महान् ग्रन्थ है कि इसके पूरे २ अर्थ तो बड़े २ पण्डितों की भी समझ में नहीं आ सकते हैं फिर हमारे जैसे मूर्खों की तो गिनती ही क्या है, हमारी समझ में तो इसका एक अक्षर भी नहीं आ सकता है इस वास्ते हम तो इसके अर्थ भी पाठ मात्र ही सुन लिया करते थे, और अर्थ का समझना क्या इस ग्रन्थ के तो मूल सूत्रों के पाठ से ही एक उपवास का फल मिल जाता है, इस वास्ते इसके तो नित्य मूल सूत्रों का ही पाठ कर लिया जाता है, मथुरादास ने कहा कि जो लोग संस्कृत के विद्वान् हैं और सूत्रोंके अर्थको भली भांति समझते हैं वह ही इसके

मूल सूत्रों का पाठ करके नित्य अपने ज्ञान को ताज़ा कर सकते हैं और एक उपवास का फल क्या बल्कि इससे भी अधिक बहुत कुछ लाभ प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु हम जैसे लोग जो इतनी संस्कृत नहीं जानते हैं कि इसके सूत्रों को पढ़कर ही उनका अर्थ लगा सकें वह तो इसके सूत्रोंको रटकर कुछ भी फल नहीं पा सकते हैं बल्कि अन्धश्रद्धा के कारण कुछ हानि ही उठाते हैं।

विचारने की बात है कि राम २ रटने से तोता धर्मात्मा नहीं होजाता है बल्कि ऐसा करनेसे वह तो हँसी का पात्र बनकर लोगों का खिलौना ही बन जाता है, क्योंकि जब तोते को सिखाने वाला उसको राम २ बोलना सिखानेके वास्ते यह कहता है कि गङ्गाराम राम २ बोल तो तोता भी यह ही कहने लगता है कि गङ्गाराम राम राम बोल, फिर जब वह सिखाने वाला कहता है कि मियांमिट्ठू राम २ बोल तो तोता भी यह ही कह देता है कि मियांमिट्ठू राम राम बोल, तब सिखाने वाला गुस्से होकर कहता है कि बेवक़ूफ़ राम २ कह तो वह तोता भी कह देता है कि बेवक़ूफ़ राम २ कह, इस ही प्रकार जो कुछ बोल सिखाने वाले के मुख से निकलते हैं वह ही वह तोता भी कहता रहता है क्योंकि वह बेचारा तो उन बोलों का कुछ भी अर्थ नहीं समझता है, परन्तु सुनने वाले लोग तोते की इन मूर्खताई की बातों पर हँसते हैं और बार २ उससे ऐसी ही बातें कहलवाकर अपना दिल खुश कर लेते हैं, इस ही प्रकार छोटे छोटे बच्चों से भी लोगबाग अटकलपच्चू बातें कहलाकर खुश हुआ करते हैं इस ही तरह जो लोग बिना अर्थ समझे हीं सूत्रजी को रटते हैं विद्वान् लोग तो उनको हँसते हैं परन्तु उनके देखादेखी साधारण लोग यह ही समझ लेते हैं कि मूल सूत्रों के पाठ से ही बहुत कुछ धर्म लाभ होजाता होगा इस वास्ते सर्व साधारण ने इसके अर्थों का समझना तो छोड़ दिया है और वह सब मूल सूत्रों का ही पाठ करने लग गये हैं जिससे इस महान् ग्रन्थ के आशय समझने की

परिपाटी बिल्कुल ही लोप होती जाती है और जैनी लोग जैनधर्म के रहस्य से अनजान रहकर और अन्धश्रद्धा में पड़कर महामिथ्यात्वी ही होते चले जाते हैं और रीति रिवाज़ों को ही धर्म समझने लग गये हैं।

जमनादास ने कहा कि हां भाई अर्थों के समझने में तो विशेष लाभ होता ही होगा पर बिना अर्थ समझे मूल सूत्रों के पाठ करने से भी कुछ तो पुण्य बन्ध होता ही होगा, मथुरादास ने कहा कि लड्डू खाने से मुंह मीठा होजाता है पर यदि कोई आदमी लड्डू खाने को न मिलने के कारण मुख से लड्डू २ कहने लग जावे तो वह तो चाहे सुबह से शाम तक लड्डू २ रटता रहे और बरसों इस ही तरह करता रहे तो भी उसके मुंह में तो ज़रा भर भी मिठास नहीं आवेगा, इस ही तरह जो कोई आदमी बिना अर्थ समझे सूत्रजी का पाठ करता है वह चाहे वर्षों पाठ करता रहे परन्तु उसको तो कुछ भी लाभ नहीं होगा बल्कि हानि ही होगी, जमनादास ने पूछा कि हानि किस तरह होगी मथुरादास ने कहा कि आप ही अपने मन में सोचलें कि अगर आपको यह श्रद्धा होती कि बिना अर्थ समझे पाठमात्र से कुछ भी लाभ नहीं होता है तो आप अवश्य ही इस महान् ग्रन्थ के अर्थों को समझने की कोशिश करते और जिस प्रकार इन सूत्रों को कण्ठ करने में दिक्कत उठाई है उस ही प्रकार उसके अर्थों को समझने में उठाते, परन्तु आपको जो यह श्रद्धा होरही है कि पाठमात्रसे भी कुछ लाभ होजाता है इस ही से आपने इसके अर्थों को समझने की कोशिश नहीं की है, मतलब यह है कि इस श्रद्धान ने ही आपको ऐसे जरूरी ग्रन्थ के अर्थों को समझने से वञ्चित रखा है, अब आप ही विचार लीजिये कि इससे आपको हानि हुई कि न हुई फिर ऐसा ही अन्य लोगों की बाबत भी समझ लीजिये, इन ही हेतुओं से मेरा तो यह विचार होरहा है कि बिना अर्थ समझे पाठ कर लेने की प्रथा को ही जाति से उठा देने की

कोशिश करनी चाहिये तव ही जैनी लोग इस सर्वोपयोगी ग्रन्थ के अर्थों को समझने की कोशिश करेंगे और तब ही जैनी लोग जैनधर्म को समझेंगे और सच्चे जैनी वनेंगे।

जमनादास ने कहा कि वेशक सूत्रजी के अर्थों का समझना बड़ा भारी लाभदायक तो है ही पर क्या करें अतिगूढ़ कथनी होने के कारण हमारी समझ में तो इसके अर्थ आते नहीं है इस वास्ते पाठ ही कर लेते हैं, मथुरादास ने कहा कि अगर किसी बच्चे से रोटी का टुकड़ा न चवे तो खाली मुंह चलाने लग जानेसे तो उसका पेट नहीं भरेगा बल्कि उसको तो रोटी का टुकड़ा मिलने से पहिले दाल चावल या खीर आदिक कोई मुलायम भोजन ही मिलना चाहिये और जब ऐसा मुलायम भोजन खाते २ उसके मसूड़ों में कुछ ताकत आजावे और वह रोटी चवाने लायक होजावे तब उसको रोटी मिलने लग जानी चाहिये, इस ही प्रकार जो लोग सूत्रजी का अर्थ नहीं समझ सकते हैं उनको यह उचित नहीं है कि वह इसका पाठ ही करने लग जावें, पाठ करते रहने से तो वह सारी उमर भी उसके अर्थों को समझने के योग्य नहीं होंगे इस कारण उनको तो चाहिये कि पहिले किसी बहुत ही आसान ग्रन्थ के अर्थों को समझें और फिर उससे कुछ मुश्किल ग्रन्थ के अर्थों को, इस प्रकार आहिस्ता २ अपनी लियाक़त बढ़ाकर ही वह इस अतिगूढ़ और जरूरी ग्रन्थ के अर्थों को भी समझने के लायक बन जावें, जमनादास ने कहा कि हां यह तर्कीव तो तुमने ठीक बताई, गरज़ मथुरादास ने समझा बुझाकर जमनादास को आसान २ ग्रन्थों के अर्थ सुनने की तरफ़ लगाया और आहिस्ता आहिस्ता जैनधर्म का रहस्य समझाया।

अध्याय ३१

मथुरादास तो अपनी इस दरिद्रावस्था में भी सदा खुश ही रहता था और अपनी पिछली अवस्था को बिल्कुल भी याद नहीं किया करता था क्योंकि उसका तो यह ही सिद्धान्त था कि मनुष्य को अपनी अवस्था के अनुसार उद्यम तो अवश्य ही करते रहना चाहिये और अपनी सांसारिक और पारमार्थिक दोनों ही प्रकार की उन्नति के वास्ते पूरी २ कोशिश करते रहना चाहिये, परन्तु इच्छानुसार फल प्राप्त होने के वास्ते उसको अधिक नहीं तड़पना चाहिये, और जो फल प्राप्त हो उसमें अधिक हर्ष विषाद नहीं मनाना चाहिये बल्कि फल अपनी इच्छा के अनुसार हो वा इच्छा के विरुद्ध अर्थात् बुरा हो वा भला दोनों ही सूरतों में उसको खुश ही रहना चाहिये और प्रत्येक अवस्था को सन्तोष के साथ आनन्द मङ्गल में ही बिताना चाहिये, परन्तु यहां आकर कुछ दिनों तक तो जमनादास हरवक्त हाय हाय ही करता था और अपनी पिछली अवस्था को यादकर मछली की तरह ही तड़पता था, शुरू २ में तो उसका यह ख़याल कि मुझ पर विपत्तियों का यह भारी पहाड़ टूट पड़ने में और मेरी ऐसी हीनावस्था होजाने में मेरा कुछ भी दोष नहीं है, बल्कि बहुत से लोगों ने विना कारण ही मुझ से बैर बांधा है और मेरा सत्यानाश बनाया है इस वास्ते अब वह उनको याद कर करके दांत पीसता था और हृदय में क्रोध की अग्नि प्रज्वलित करके भारी २ सङ्कल्प उठाता था और मन ही मन कहता रहता था कि यह एक बरस पूरा होले तब मैं उनको मज़ा चखाऊँगा और भली भांति बताऊंगा कि जमनादास क्या कुछ कर सकता है और अपने विरोधियों को क्या क्या तमाशे दिखा सकता है।

मथुरादास अपने भाई को शान्त करने की बहुत कुछ कोशिश किया करता था और संसार की विचित्रता दिखाकर बहुत कुछ

ऊँच नीच समझाता था जिससे वह पहिले की अपेक्षा बहुत कुछ ठण्डा भी होने लग गया था, परन्तु अभी पूरा २ शल्य उसके हृदय से नहीं गया था, उसको अधिक क्रोध उन लोगों पर ही आता था जिन्होंने उसके साथ विश्वासघात किया था, अर्थात् उसके कारखाने में घाटा आने पर जिन अपने इष्ट मित्रों और रिश्तेदारों के पास उसने अपना माल अस्बाब रख दिया था पर जिन्होंने पीछे से उसको टका सा जवाब दे दिया था और उसका सारा माल खुद ही हज़म कर लिया था और फौजदारी के मुक़दमे की महान् आपत्ति आने पर वापिस नहीं दिया था, मथुरादास इस विषय में अपने भाई को यह ही समझाया करता था कि जिन लोगों का रुपया तुम्हारे ज़िम्मे वाज़िब था उनका रुपया मार लेने के वास्ते ही तुमने यह सब माल अस्बाब अपने मित्रों के पास रखा था, इस वास्ते अव्वल तो यह बेईमानी तुम्हारे ही हृदय में आई फिर पीछे से वैसी ही बेईमानी तुम्हारे मित्रों ने तुमको दिखाई, इस कारण इसमें तो तुमको अपने मित्रों पर क्रोध नहीं करना चाहिये बल्कि अपने ही ऊपर करना चाहिये कि क्यों मैंने बेईमानी करके अपने लेनदारों को ऐसा हैरान किया कि वह मेरी कुर्की कराते फिरे और फिर भी कुछ न पासके, इस प्रकार वह अनेक रीति से जमनादास को समझाता था और उसके हृदय के शल्य को निकालने की कोशिश किया करता था।

आखिर जैन तत्वों को जानने के बाद जमनादास को भी बहुत कुछ होश आगया था और अब हरएक बात में उसको अपना ही कसूर नज़र आने लग गया था और वह यह ही मानने लग गया था कि सारे जन्म उसने पाप ही कमाया है और धर्म तो वह कुछ भी नहीं कर पाया है, अब उसको मालूम होगया था कि पुण्य पाप तो मनुष्य के अपने ही परिणामों के अनुसार बँधते हैं जिनकी सिंभाल उसने बिलकुल भी नहीं की है बल्कि उसने तो अपने परि-

णामों की बागडोर को बिल्कुल ही ढीली छोड़कर उनको पापों की ही तरफ़ दौड़ने दिया है और इस बात का कुछ भी फ़िकर नहीं किया है कि ऐसा करने से तो मैं नर्कों में ही जाने की तय्यारी कर रहा हूं और घोर विपत्ति और महान् दुःखों को बुला रहा हूं, वह अब भलो भांति जानने लग गया था कि उसकी पूजा भक्ती शुचिक्रिया छूतपात व्रत उपवास और क्रम विरुद्ध अनधिकार त्याग सब बाह्य दिखाने के मिथ्या ही ढकोसले थे जिनमें वृथा डले ढोने, व्यर्थ कष्ट उठाने और बच्चों जैसे खेल बनाने के सिवाय और कुछ भी सार नहीं था, इस ही कारण इन क्रियाओं से कुछ भी शुद्धी मेरे परिणामों की न हो सकती और मैं एक पैंड भी धर्म की तरफ़ न सरक सकता।

जैनधर्म के रहस्य को समझने के बाद अब उसको मालूम होगया था कि जैनधर्म के भगवान तो परम वीतरागी होते हैं जो संसार के सब ही कामों से मुंह मोड़कर और अपनी आत्मा में लीन होकर ही परमात्मा बनते हैं, तब वह हमारे कार्यों को किस तरह सिद्ध कर सकते हैं, इसही प्रकार नमस्कार आदि मन्त्रों का जाप भी हमारे सांसारिक कार्यो को कैसे पूरा कर सकता है क्योंकि इन मन्त्रों में भी तो उन ही पञ्चपरमेष्ठी को नमस्कार किया जाता है जिन्होंने परमवैराग्य प्राप्त कर लिया है वा प्राप्त करने की कोशिश कर रहे है, उनकी पूजा भक्ती गुण गान और स्तुति तो उनके वैराग्य परम वैराग्य के ही कारण होती है और इस ही ग़रज़ से होती है जिससे हमारे हृदय में भी वैराग्य प्राप्ती का हुलास उत्पन्न हो और हम भी उनकी तरह संसार के फन्दे को तोड़कर परमानन्द प्राप्त करें, परन्तु मैंने तो इन पञ्च परमेष्ठी के के स्वरूप से बिल्कुल ही अनजान रहकर और संसार के मोह में निपट अन्धा होकर इन वीतराग रूप पञ्चपरमेष्ठी से ही अपने सांसारिक कार्यों की सिद्धि चाही और इस ही मतलब के वास्ते

उनकी पूजा भक्ती और स्तुति करी, जाप जपे और गाये इस वास्ते मैंने तो महापाप ही कमाया और नरक निगोद में ही जाने का सामान बनाया, अगर मैं धर्म के स्वरूप को कुछ भी जानता होता और नमस्कार आदि मन्त्र के अर्थ को कुछ भी पहिचानता होता तो मैं तो उनके वैराग्य रूप गुणों को याद कर करके अपने परिणामों को ही ठीक करने की कोशिश करता और अपने राग-द्वेष को घटाकर और अपनी कषायों की तेजी को हलका करके शील संतोष की ही तरफ लगता जिससे मैं यहां भी सुखी रहता और आगे को भी आनन्द ही आनन्द मिलता।

इस ही प्रकार वह यह भी जान गया था कि शरीर तो सब ही मनुष्यों का हाड़, मांस आदिक अपवित्र वस्तुओं का बना हुआ है तब किसी जाति के मनुष्यों के शरीर को पवित्र मानकर उनके हाथ की चीज़ तो ग्रहण करना और किसी जाति के मनुष्यों के शरीर को धोने मांजने पर भी अपवित्र मानकर उनकी छुई वस्तु से घृणा करना यह तो द्वेषभाव के ही पैदा करने वाला कर्म है जो साक्षात् ही महापाप और अधर्म है, आजकल भी देखने में आता है कि किसी जाति के मनुष्यों वा किसी देशवासियों से द्वेष करके उनकी बनाई हुई सब ही प्रकार की वस्तुओं का बाईकाट कर दिया जाता है अर्थात् ग्रहण करना छोड़ दिया जाता है और द्वेष के हट जाने पर फिर ग्रहण करना शुरू होजाता है इस ही प्रकार पिछले समय में भी अनेक जातियों में अनेक प्रकार के द्वेष उत्पन्न हुए हैं और एक दूसरे से सर्व प्रकार की घृणा करने लग गये हैं, इसके अलावा ब्राह्मणों ने भी अपनी मान बड़ाई में आकर अन्य मनुष्यों को घृणा की दृष्टि से देखा है और अन्य मनुष्यों में भी जिसको तनिक भी मान मिला है वह ही दूसरोंको घृणाकी दृष्टिसे देखने लग गया है, इस प्रकार इन ब्राह्मणों के कारण हिन्दुस्तान के मनुष्यों में आपस में बहुत ही ज्यादा द्वेष

फैला है, फल इस आपस के द्वेष का यह हुआ है कि हिन्दुस्तानियों ने अपना राज्य भी खो दिया है और मुसलमान आदिक परदेशियों के आधीन रहना पड़ गया, ब्राह्मणों ने तो इस आपस के जातीय द्वेष को यहां तक बढ़ाया है कि शूद्रों को तो धर्म साधन से भी बिल्कुल वञ्चित कर दिया है, परन्तु धन्य है जैनधर्म को जिसने उनके इस महाअन्याय को हटा कर जीवमात्र के वास्ते धर्म का मार्ग खोल दिया है और केवल सम्यक्ती होजाने पर ही चांडालों तक को भी पूजनीक ठहराया है, इस ही कारण जैनधर्म के तो महामुनियों और आचार्यों तक ने सिंह आदि महाहिंसक जीवों को ऐसे समय में भी धर्म का उपदेश सुनाकर धर्मात्मा बनाया है जब कि वह जीव किसी पशु को मारकर उसका मांस खारहे थे और खून में उनका मुंह भर रहा था अर्थात् जिस समय वह जीव महा मलिन और अपवित्र अवस्था में थे, इस ही प्रकार जैनधर्म के महान् आचार्य तो एक चांडाल की ऐसी कन्या को भी धर्म उपदेश देने गये हैं और उसको धर्मात्मा बनाकर आये हैं जिसके शरीर में बहुत ही ज्यादा कोढ़ होरहा था जिसके शरीर की महादुर्गन्ध के मारे दूर दूर तक भी मनुष्य खड़ा नहीं रह सकता था और जो इस ही कारण आबादी से दूर तक महान् अपवित्र कूड़े के ढेर पर पड़ी हुई थी, इन बातों से स्पष्ट सिद्ध है कि जैनधर्म ने तो ब्राह्मणों के फैलाये हुए आपस के द्वेष को हटा कर मनुष्यमात्र को एक माना है और सब को ही अपना भाई जाना है।

अब जमनादास यह भी सोचने लग गया था कि अगर कोई आदमी बहुत ही साफ़ सुथरा मकान बनावे और उसमें बहुत ही साफ़ सुफ़ैद फ़रश बिछावे और ऐसा पहरा लगावे कि कोई भी आदमी उस मकान के अन्दर न आने पावे, बल्कि अकेला आप ही उस मकान के अन्दर बैठकर रात दिन अपने हाथ से ही उस मकान की सफ़ाई करता रहा करे और किसी को हाथ भी न

लगाने दिया करे और जो कोई उसके मकान को उँगली भी लगादे तो सारे मकान को सौ सौ वार धोया करे तो ऐसा करनेमें तो वह धर्मकी तो कुछ भी बात नहीं करता है बल्कि अपने हाथोंसे ही अपने मकानको साफ़ रखने और अन्य पुरुषों से द्वेष करके उनको अपने मकानको न छूने देने का अपना शौक़ ही पूरा करता है, इस ही प्रकार न्हाने धोने, शुचिक्रिया करने और छूतपात निभानेमें भी धर्म तो रञ्चमात्र भी नहीं होता है बल्कि कुछ द्वेषभाव ज़रूर बढ़ जाता है, अफसोस है कि मैंने अपनी सारी उमर इस हाड़ मांस के बने महाअपवित्र शरीर की शुद्धी में ही गँवाई और अपने परिणामों के सुधारने में कुछ भी बुद्धि न लगाई, शोक है कि मैं जैनधर्म के स्वरूप को समझे विदून ही देखादेखी धर्म करने लग गया और आंख वन्द करके अन्धों के ही पीछे चलने लग गया, इसमें सन्देह नहीं है कि इसमें अधिक दोष तो मेरा ही है जिसने धर्म की कुछ भी छानबीन न करी और वैसे ही वेगार के तौर पर इसकी साधना शुरू करदी परन्तु इसमें कुछ दोष उन लोगों का भी है जो जान-बूझ कर भी मुंह देखी कहने लग जाते हैं और हां में हां मिलाने के वास्ते वाह्य क्रियाओं में भी धर्म वताने लग जाते हैं जिससे हम जैसे मूर्ख लोग तो भ्रमाये जाकर परिणामों की शुद्धी करने से वञ्चित ही रह जाते हैं।

अब जमनादास सोचता था कि उपवास करना तो गृहस्थी के वास्ते इस ही लिये रखा गया है कि उस दिन वह गृहस्थ के सब ही कामों को छोड़कर और खाने पीने से भी बेफिकर होकर सारा दिन धर्म ध्यान में ही लगावे, इस ही कारण श्रीआचार्यों ने तो ऐसे उपवास को बीमारों जैसा लङ्घन ही बताया है जिसमें उपवास करने वाला अपना गृहस्थ का भी काम करता रहे और सर्वथा धर्म ध्यान में ही न लगा रहे, परन्तु शोक है कि मैंने तो अबतक इस लङ्घन करने को ही धर्म माना और धर्म का कुछ भी

स्वरूप न जाना, इस ही प्रकार मैं अबतक मोटे मोटे पाप तो सब कुछ करता रहा और महाकठोर चित्त होकर मनुष्यों के गले कतरता रहा, तरह तरह की बेईमानी करके उनके धन को हरता रहा और सर्व प्रकार से उनको दुख देता रहा परन्तु धर्मात्मा बनने के वास्ते एकेन्द्री जीवों की रक्षा का भी स्वांग भरता रहा, अफ़सोस मैंने यह न सोचा कि जब मेरा हृदय ऐसा निर्दई और कठोर है कि अपनी विधवा बेटी तक को भी दुख देने से नहीं चूका है और उसका भी धन हर लिया है तो फिर मुझे एकेन्द्री स्थावर जीवों पर क्या दया आ सकती है, मुझे तो यह ही उचित था कि न्याय नीति पर चलता और सब से पहिले मोटे मोटे पापों से ही बचता और ऐसा करते २ जब मेरे परिणाम बहुत ही शुभ होजाते और कषायों की अति मन्दता होकर मेरा हृदय दया से भरजाता तब ही आगे सरकता और सूक्ष्म पापों से भी बचता परन्तु मैंने तो वृथा ही स्वांग बनाया और अपना जन्म गँवाया।

इस प्रकार अब जमनादास धर्मके रहस्यको भलो भांति समझ गया था और अपने परिणामों के सँभालने में लग गया था।

अध्याय ३२

पाठकों को यह बात भली भांति मालूम है कि भारत नामी बैङ्क के फेल होने के कारण ही मथुरादास का दीवाला निकला था, "भारत बैंक" ने एक अँग्रेज़ सौदागर को एक करोड़ रुपया क़र्ज़ दिया था जिसने दो करोड़ रुपया अपने पास से लगाकर तीन करोड़ रुपये का कच्चा माल अर्थात् रुई, सन और गेहूं आदिक अनाज हिन्दुस्तान से भरा था और यूरुप में ले जाकर बेचने का इरादा था परन्तु जब इसके जहाज़ यूरुप जारहे थे तो मार्गमें समुद्र में बड़ा भारी तूफ़ान आया जिससे उसके सब ही जहाज़ लुप्त

होगये और उनके डूब जाने का ही निश्चय होगया, जिससे "भारत-बैंक" के एक करोड़ रुपये को जवाब मिल गया और बैंक का दीवाला निकल गया, जिससे फिर और भी कई बैंकों का दीवाला निकला और उस ही धक्के में मथुरादास का भी कारखाना बिगड़ा; लेकिन अब छः महीनें के पीछे मालूम हुआ कि वह जहाज डूबे नहीं थे बल्कि रास्ते से विचलित होगये थे और कहीं के कहीं निकल गये थे जो अब सही सलामत यूरुप पहुंच गये हैं और उनके मालके मनमाने दाम उठ गये हैं, जिससे भारत बैंक को उसका एक करोड़ रुपया व्याज समेत मिल गया है और दूसरे बैंकों का भी काम चल गया है, इस ही कारण अब मथुरादास का भी सब रुपया हरा हो-गया है और उसका कारखाना भी दीवाले से बच गया है।

यह सब बातें निश्चय होजाने पर सर्कार ने मथुरादास और उसके सब बड़े २ लेनदारों को बुलाया और यह सब हाल सुनाया, इसपर लेनदारों ने अब अपना रुपया वापिस लेने से इनकार किया और पहिले की तरह मथुरादास के ही कारखाने में जमा रहने का वचन दिया, इस कारण अब मथुरादास के दीवाला निकलने का मामला कचहरी से ख़ारिज होगया और मथुरादास का कारख़ाना पहिले की तरह चलने लग गया, मथुरादास के पहिले सब मित्रों ने अब उसके पास आकर बड़ी २ खुशियां मनाई और बहुत कुछ उछल कूद दिखाई और नगर भर को भोज देने, राग रङ्ग के जलसे करने और बहुत कुछ दान बांटने की ठहराई परन्तु मथुरादास ने पहिले की तरह अपना समभाव ही दिखाया और कारखाने के प्रबन्ध में ही अपना मन लगाया।

मथुरादास तो पहिले भी अपनी बहुत कुछ आमदनी परउपकार में ही लगाता था, लेकिन अब उसको परोपकार का और भी ज्यादा ख़याल होगया था और विशेषकर जमनादास के साथ कई महीने तक रहने से उसको यह मालूम होगया था कि प्रायः जैनी

लोग जैनधर्म से बिल्कुल ही अनजान हैं इस ही कारण वह धर्म के नाम से कुछ अटकलपच्चू वाह्य क्रियाओं के करने और प्रचलित रीति रिवाजों पर चलने को ही धर्मसाधन मान बैठे हैं और अपने परिणामों की शुद्धि की तरफ़ तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं, यहां तक कि न्याय नीति पर चलना दूसरों के हकों का ख़याल रखना, झूंठ चोरी और कुशील आदिक महापापों से बचना और मनुष्यों के साथ दया और प्रेम का व्यवहार रखना भी ज़रूरी नहीं समझते हैं और अपने परम वीतरागरूप जिनेन्द्र भगवान की पूजा भक्ति और स्तुति भी उस ही तरह करते हैं और अपने सर्व प्रकार के सांसारिक कार्यों की सिद्धि के वास्ते उनसे उस ही तरह प्रार्थना करते हैं जिस तरह कि अन्यमती लोग अपने उस परमेश्वर से करते हैं जिसको वह दुनियां का बनाने और बिगाड़ने वाला और दुनियांके भले बुरे सब ही कार्यों का करने वाला बताते हैं, इस कारण मथुरादास ने अब एकदम पांच लाख रुपये लगाकर एक ऐसी संस्था खोली जिसके द्वारा उसने जैनधर्मके अनेक उपदेशी ग्रन्थों का बहुत ही आसान हिन्दी भाषा में अर्थ और भावार्थ करांना शुरू किया और उनको छपवा २ कर सब ही जैन मन्दिरों में भेजा और सर्वसाधारण के हाथ भी बहुत ही अल्प मूल्य में बेचा।

इसके अलावा उसने बड़े २ विद्वानों और परोपकारियों से अनेक उपदेशी विषयों के निबन्ध भी लिखवाये और उनको ट्रैक्टरूप में छपवाकर और घर २ बांटकर लोगों का मिथ्यात्व हटाया और उनको सच्चा धर्म बताया, इन सब बातोंके सिवाय मथुरादास ने ऐसे उपदेशक भी तैयार किये जो न तो लोगों की हां में हां मिलावें न मुंह देखी कहना चाहें और न रीति रिवाजों को ही धर्म बतावें बल्कि निर्भय होकर जैनधर्म के बिल्कुल सच्चे ही रूप को दर्शावें और लोगों को अपनी कषायों को हलका करने, अपने परिणामों को सिंभालने और अपने आचरणों को ठीक बनाने की तरफ

लगावें, जिससे जगत् में जैनी लोग ही अव्वल दर्जे के सच्चे, ईमानदार, शीलवान, दयावान और विश्वास के योग्य समझे जावें और अपनी इन ही बातों से जैनधर्म की प्रभावना कर दिखावें।

एकदम पांच लाख रुपया लगाने के सिवाय मथुरादास महीने दर महीने हजार बारह सौ रुपया अपनी आमदनी में से भी इस संस्थामें खर्च करता था जिससे दिन २ इस संस्था का काम बढ़ता ही चला जाता था और इसके द्वारा जगह २ जैनधर्म का चर्चा होकर और धर्म का असली रूप खुलकर लोग खुशी २ इस धर्म को स्वीकार करते जाते थे और अपने आचरणोंको ठीक करते जाते थे, यों सारे ही हिन्दुस्तानमें जैनधर्म का डङ्का बज गया था और लोगों को अपने कल्याण का रास्ता मिल गया था।

जमनादास भी अब मथुरादासके समझाने से बिल्कुल ही बदल गया था उसने भी अब अपने सब पुराने तरीकों को बदल दिया था और अपनी पुरानी सब कषायों को छोड़ दिया था और संसार के सब धक्कों मुक्कों को धीरज के साथ सहन करके अपने बुढ़ापे को बड़ी शांतिके साथ धर्म ध्यानमें ही काटना शुरू कर दिया था।